श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर

मनोहर लक्ष्मण वराडपांडे

MT
891.460 92
K 832 S

भारतीय
साहित्यक

MT
891.460
92
K 832 S

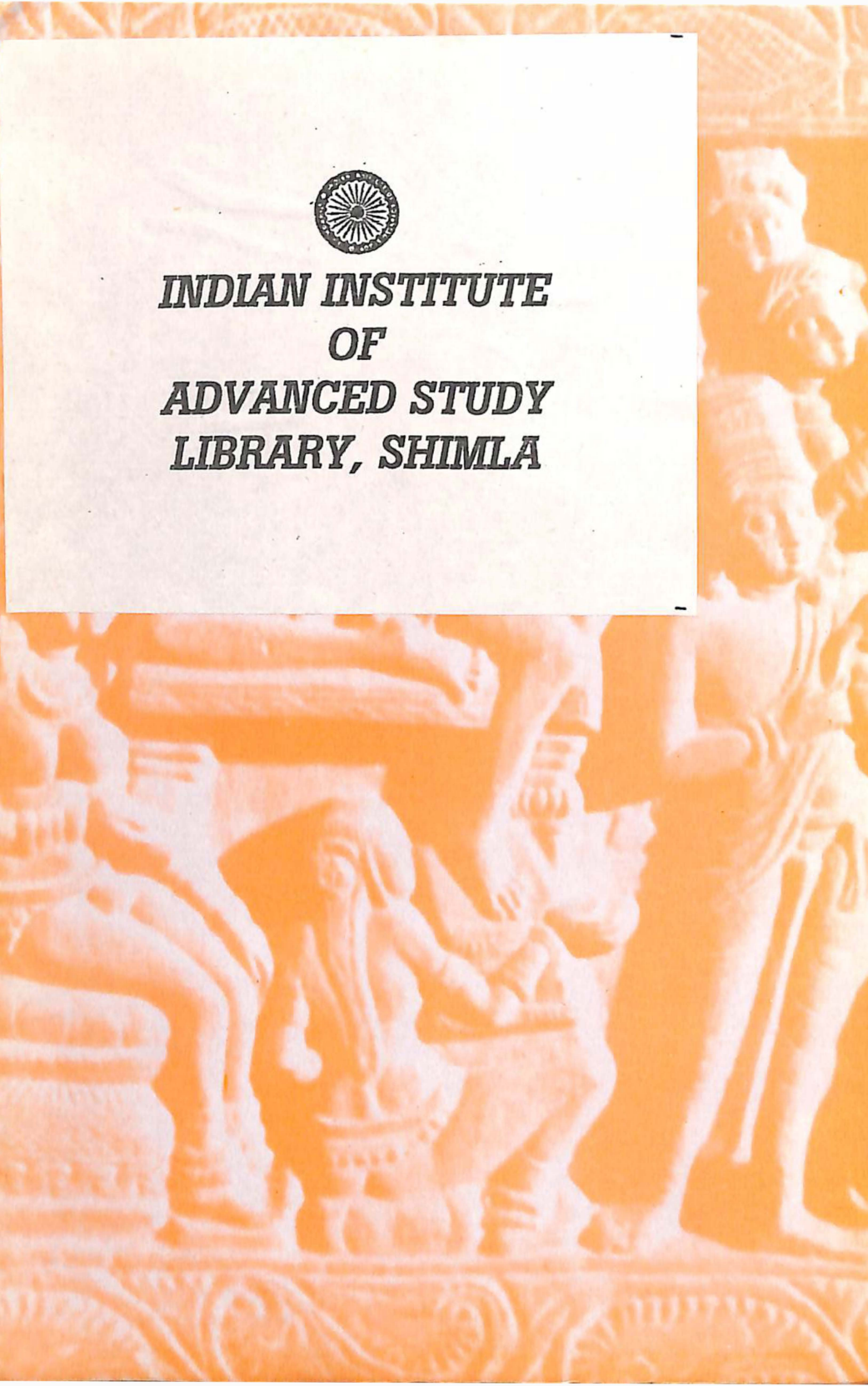

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओहि दृश्यकें देल गेल अछि जाहि मे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माय रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचामे एक गोट देवान जो बैसल छथि जे ओहि व्याख्या कें लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसं प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर सदी ई.
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर

लेखक

मनोहर लक्ष्मण वराडपांडे

अनुवादक

प्रेम शंकर सिंह

साहित्य अकादेमी

Sripad Krishna Kolhatkar : Maithili translation by Prem Shankar Singh of M. L. Varadpande's monograph in Marathi. Sahitya Akademi, New Delhi (1988), **SAHITYA AKADEMI**
REVISED PRICE Rs. 15.00

© साहित्य अकादेमी

MT
891.460 92
K832S

प्रथम संस्करण : 1988

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

ब्लाक V-वी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता 700 029

29, एल्डाम्स रोड, तेनामपेट, मद्रास 600 018

172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014

Library IIAS, Shimla
MT 891.460 92 K 832 S
00117152

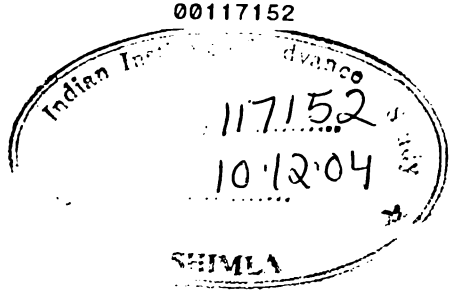

मूल्य
SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

मुद्रक
मित्तल प्रिण्टर्स,
दिल्ली 110 032

क्रम

1.	जीवनी	9
2.	विनोद पीठक आचार्य	22
3.	नाटककार लोकनिक नाटककार	37
4.	आधुनिक समीक्षाक जनक	54
5.	बहुमुखी प्रतिभा	70
	वाङ्मय-सूची तथा सन्दर्भ-लेख-सूची	77

जतय विभूषित सोझ-स्वच्छ जनाबाईक बोल
ततय करथि श्रीपाद वेखरी कलामयी सु-किलोल

—गडकरी

1

जीवनी

श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकरक प्रादुर्भाव मराठी साहित्यक एक महत्त्वपूर्ण घटना मानल जायत। हुनक रचना सभक मराठी साहित्य पर एतेक व्यापक प्रभाव पड़ल अछि जे मराठी साहित्यक इतिहासक सन् 1892 सँ 1925 धरिक अवधिकेँ 'कोल्हटकर युग' कहब उचित हैत। हुनक प्रतिभाक फलस्वरूप साहित्यक विभिन्न शाखा सभ समृद्धे नहि भेल, प्रत्युत ओहिमे नवीन धारा सभक सेहो प्रादुर्भाव भेल। ओ नाटक लिखलनि, जाहिसँ रंगमंच पर नवीन युग अवतरित भेल। ओ समीक्षात्मक लेख लिखलनि, जाहिसँ आधुनिक मराठी-साित्यिक विकास भेल। हुनक विनोद निबन्ध सभसँ मराठी मे हास्य-साहित्यक एक नव परम्पराक श्रीगणेश भेल। हुनक साहित्यिक योगदानक मूल्यांकन करैत श्री गोविन्दराम टेंबे सदृश नाट्य-कला-विशारद हुनका आद्य नाट्यकारक सम्मान कयलनि अछि। श्रीमती कुसुमावती देशपांडे सदृश विदुषी हुनका 'आधुनिक मराठी समीक्षाक जनक' कहि क' सम्मानित कयलनि अछि तथा साहित्य-सम्राट केलकर हुनका 'विनोद-पीठक आचार्य' कहि क' सम्बोधित कयलनि अछि। नाट्य-समीक्षा तथा विनोदक क्षेत्रमे नवीन धारा सभक प्रवर्त्तनक श्रेय तँ हिनका प्राप्त छनिहे, परन्तु ओ मात्र सोलह-सत्रह कविता लिखलनि अछि, ओहि सँ 'रवि किरण मंडल' सदृश आधुनिक काव्य-सम्प्रदाय सेहो प्रभावित दृष्टिगत होइत अछि। कहानी-उपन्यास आदि ललित साहित्य विधेमे नहि, प्रत्युत ज्योतिर्गणित सदृश वैज्ञानिक विषयमे सेहो हुनका मान्यता प्राप्त छलनि। ओ मराठी साहित्यकेँ एक नव मोड़ देलनि। विषय एवं ज्ञान दुनू दृष्टिएँ समाजोन्मुख साहित्यक मर्म धरि पहुँचावाक हेतु हुनक जीवन तथा विचार-प्रवण व्यक्तित्वक अध्ययन आवश्यक हैत।

श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकरक जन्म विदर्भक नागपुर नगरमे 29 जून 1871 केँ भेल छननि। कोल्हटकरक पूर्वज मूलतः कोंकणक 'नेवरे' नामक गामक निवासी छलाह। इतिहास बतबैत अछि जे हिनक पूर्वज लोकनिमे भास्कर राम तथा नोन्हेर राम नामक दुनू व्यक्ति रामपुरक रघुजी भोंसलेक युद्ध-कुशल एवं राजनीतिज्ञ सेनापति छलाह। प्रथम बाजीराव पेशवाक समकलीन नागपुरक भोंसले बंगाल देश पर जे आक्रमण सभ कयने छलाह ओहि सभक प्रमुख सूत्रधार तथा सेनानी भास्कर्राम कोल्हटकरे छलाह। हुनकर शौर्यक वर्णन 'महाराष्ट्र पुराण'

नामक वंगली भाषाक काव्यमे कयल गेल अछि। एहि वंशक एहन ऐतिहासिक वृतान्त गं. दे. खानोलकर लखलनि अछि। मराठी राज्यक दिन सभमे जाहि प्रकारेँ एहि वंशमे वीर पुरुष उत्पन्न भेल छलाह ओही प्रकारेँ आजुक युगमे अनेक प्रतिभावान पुरुष उत्पन्न भेल छथि। श्रीपाद कृष्णक प्रपतामह गोविन्दभट्ट कोंकण सँ बाईमे अयलाह। ललित कला समक प्रति रूचि एहि नेवरे-वासी कोल्हटकर-वंशक विशेषता मानल जाइत छनि। श्रीपाद कृष्णक पितामह हरिपन्त कुशल गायक तथा सरस भजन समक रचनाक हेतु प्रसिद्ध छलाह। हुनक भाय महादेव शास्त्री कोल्हटकर अंग्रेजीक उत्तम वक्ता तथा मार्मिक लेखकक रूपमे प्रसिद्ध छलाह। ओ शेक्सपियरक 'ऑथेलो' नाटकक मराठीमे सुन्दर अनुवाद कयने छलाह। विष्णु कृष्ण चिपलूणकर ओहि अनुवादक पर्याप्त प्रशंसा कयने छलाह। 'किर्लोस्कर मंडली' क गन्धर्वतुल्य नट भाऊराव कोल्हटकर सेहो एही परिवारक छलाह। श्रीपाद कृष्णक पिताकेँ सेहो गायन-कलामे प्रवेश छलनि। ओहो नाट्य कलाक मर्मज्ञ छलाह। कहय पड़त जे साहित्य, संगीत, नाटक आदि ललित कला समक ज्ञान हिनका वंश-परम्परास प्राप्त छलनि आओर इऐह कारण अछि जे कला-सक्ति ओकर रसास्वादनक क्षमता तथा उपर्युक्त कला सभमे निपुणताक संगहि संग सौन्दर्य विषयक प्रवल आकर्षण हुनक व्यक्तित्वक प्रधान विशेषता बनि गेल अछि।

श्रीपाद कृष्णक पिता सन् 1870क लगपास विदर्भमे स्थित अमरावतीमे अध्यापक वनि क' अयलाह। किछु कालक पश्चात् ओ अपन वदली मुलकी विभाग करवा लेलनि। ओतयसँ अपन योग्यतासँ पदोन्नति प्राप्त करैत खास असिस्टेन्ट कमिश्नरक पद पर पहुँचलाह। श्रीपाद कृष्ण हुनक पहिल पत्नीक द्वितीय पुत्र छलथिन।

श्रीपाद कृष्ण स्वभावसँ अत्यन्त सुसंस्कृत तथा किछु अभिमानी छलाह। एहि सम्बन्धमे ओ अपन आत्म-चरित्रमे एक मार्मिक घटनाक उल्लेख कयलनि अछि। ओ लिखैत छथि—"शैशवावस्थामे हम ककरो कोरमे जाक' बैसल छलहुँ, हमर बाबूजी वा माय कहलनि—'एतेक बड़ भ' गेल अछि तइयो एकरा बैसबाक हेतु कोरेए चाही।' एहि घटनाक हमर मन पर एहन प्रभाव पड़ल जे तकरा बादहिसँ हम सदिखन एहि बातक विशेष ध्यान राखय लागलहुँ जे हमरा कारणसँ कोनो दोसर पर कोनो बोझा नहि पड़य।"

हुनक संवेदनशील शिशु-मनकेँ सबसँ पैंध आघात लागल पक्षा-घातक बिमारी सँ, जे हुनका नवम् वर्षमे भ' गेलनि। ओहिसँ हुनकर जीवनक जड़ि हिल गेलनि आओर ओ अन्तर्मुख भ' गेलाह। एहि अन्तर्मुखताक कारणेँ हुनकर कल्पना-शक्ति बढ़ि गेलनि। पक्षाघातक कारणेँ हुनकर शरीर कुरूप भ' गेलनि तथा हुनकर चालि अव्यवस्थित भ' गेलनि जाहिसँ लोक हुनकर उपहास करय लागलनि।

एहिसँ ओ एकान्तप्रिय बनि गेलाह तथा ग्रंथ सभकेँ ओ अपन मित्र बनौलनि। शरीरक कुरूप भेलो पर मनकेँ सुन्दर बना क' ओकर सब कमीकेँ पूर्ण करबाक ओ दृढ़ संकल्प क' लेलनि। एहिसँ ओ विद्याक उपासक बनि गेलाह। हुनकर एहि कुरूपताक तीव्र मानसिक विषादहिमे हुनक सौन्दर्यसक्तिक रहस्य नुकायल अछि। कुरूपताकेँ ओ जीवनक अभिशाप कहल करैत छलाह। कुरूपताक कारणेँ हुनकर जे उपहास होइत छलनि ओकरे कारणसँ हुनकर एहन धारणा बनि गेल छलनि। आओर एही कारणेँ बौद्धिकताक संग-संग सौन्दर्यासक्ति सेहो हुनकर प्रतिभाक एक अंग बनि गेल छल।

स्कूली जीवनमे श्रीपाद कृष्णक रुचि नाट्य-कलाक प्रति बढ़ि गेल छलनि। मराठी-भाषी स्वभावतः नाटक प्रिय होइत छथि। महाराष्ट्रक अत्यधिक रूचिक विषय दुइए अछि—एक 'राजनीति' तथा दोसर 'नाटक'। अपना समयक महाराष्ट्रक नाटक प्रियताक उपहास गर्भित वर्णन स्वयं कोल्हटकर 'संगीत शापसंभ्रम' नामक नाटकक समीक्षा करवा काल कयलनि अछि। थोड़ेक व्यंग्यक स्वरमे ओ लिखैत छथि—"नायक तथा नायिकाक विरह 'द्वैत' तथा हुनकर मिलनहि 'अद्वैत' थीक, एहन आइ काल्हुक तत्व-ज्ञान भ' गेल अछि। फ्रांस तथा जर्मनीमे एखन हालमे जे युद्ध भेल छल ओकर जानकारीक अपेक्षा 'विक्रम आओर शशिकलाक' बीच भेल झगड़ाक जानकारी अधिक लाभदायक बुझल जाइत अछि।" निस्सन्देह ओ एहि आलोचनाक विषय उत्तम कोटिक नाटककेँ नहि बनौलनि अछि। हुनकर धारणा छलनि जे नाट्य -कला प्रत्येक कला सभमे श्रेष्ठ थीक। ओ एहि कारणसँ नाटक दिस विशेष झुकलाह। नाटक साहित्य दिस आकृष्ट हैबाक सबसँ पहिल कारण हुनकर दादा श्री महादेव शास्त्री कोल्हटकर द्वारा रचित शेक्सपियरक 'ऑथेलो' नाटकक मराठी अनुवाद छल। ओहि समयक सुप्रसिद्ध नाटककार शंकर मोरो रानाडेक अनेक मौलिक तथा अनूदित नाटक सभकेँ ओ पढ़लनि। रानाडेजी अनेक पाश्चात्य नाटक सभक मराठीमे अनुवाद कयने छलाह। कोल्हटकरकेँ पाश्चात्य नाटक सभसँ पहिल परिचय भेलनि ओ एकरे माध्यमे। ओही समयमे अप्पा साहेब किर्लोस्करक पौराणिक संगीत नाटक सेहो अत्यन्त लोकप्रिय भ' गेल छल। जखन ओ अकोलामे स्कूलमे पढ़ैत छलाह, ओही समय ओ 'संगीत सौभद्र' नामक नाटकक अभिनय देखलनि। ओहि सर्वगुण सम्पन्न नाटकक हुनकर मन पर अत्यन्त गम्भीर असर भेलनि। पाँचम कक्षामे ओ किर्लोस्करक 'शाकुन्तल' क अनुकरणमे एक नाटक तथा सातम कक्षामे श्रीमोरो शंकर रानडेसँ प्रभावित भ' कय दोसर नाटक लिखबाक प्रयास कयलनि। ओकर दुइ वर्षक पश्चात ओ 'सुख मालिका' नामक एक नाटक लिखलनि। एहि नाटकक सम्बन्धमे कोल्हटकर अपन जीवन चरित्रमे एना लिखैत छथि—"एहि नाटकमे अनेक कल्पना अत्यन्त सरस छल तथा चारिम दृश्य मे विनोद सेहो प्रचुर मात्रामे छल।" जखन किर्लोस्कर मंडली अकोलामे आयल

ओहि समय इऐह बाल नाटककार ओहि मंडलीक लगपास खूब चक्कर काटलनि। परन्तु निःसंकोची स्वभावक नहि हैबाक कारणें हुनका लोकनिसँ बात नहि क' सकलाह। संयोगक बात देखू जे आगाँ जाक' एही किर्लोस्कर-मंडली हिनक अनेक नाटक सभकें रंगमंच पर अभिनय कयलक।

स्कूली जीवनमे ई निरन्तर अध्ययनशील रहलाह। चिपलूणकरजीक निबन्ध माला, एडीसन तथा गोल्डस्मिथक लेख, स्कॉट, रेनॉल्ड्स आदिक उपन्यासकें ई पढ़ि गेलाह, जाहिसँ अंग्रेजी तथा मराठी दुन् साहित्यिक भाषा सभक हिनका नीक ज्ञान भ' गेलनि। मैट्रिकमे पढ़बा काल ओ मराठी छात्रवृत्तिक परीक्षामे प्रथम अयलाह। ओहि समयक प्रथाक अनुसारें पन्द्रहम वर्षमे हुनकर विवाह भ' गेलनि। एहि विवाहक सम्बन्धमे ओ आत्मचरित्रमे लिखैत छथि—"विवाह निश्चित हैबासँ पूर्व वरकें तथा वधूकें माता-पिता वधू तथा वरकें देखने नहि छलाह। हम तथा हमर काकाजी दुन् चाहैत छलहुँ जे बी. ए. पास हैबा धरि विवाह नहि हो। परन्तु पिताजी पर एतेक दबाव देल गेलनि जे विवाहक हेतु राजी हैबाक अतिरिक्त हुनका हेतु कोनो उपाय नहि रहि गेल छलनि।"

श्रीपाद कृष्णक हेतु ई विवाह अधिक सुखद नहि छलनि। हुनक पत्नी सुगृहिणी छलथिन, परन्तु हुनका सदृश सौन्दर्यासक्त पतिक पत्नी बनबाक क्षमता हुनकामे नहि छलनि। निःसन्देह एहिमे हुनक कोनो दोष नहि छलनि। आधुनिक शिक्षासँ प्रभावित बुद्धिमान् पति तथा निरक्षर पत्नीक विषम जोड़ा ओहि समय महाराष्ट्रमे सर्वत्र देखबाक हेतु भेटि जाइत छल। शिक्षाक लाभ पुरुषलोकनिकें जतेक शीघ्रता आओर जतेक मात्रामे प्राप्त भेलनि ओतेक मात्रामे सामाजिक बंधन सभमे बान्हल स्त्रीगणकें नहि प्राप्त भ' सकलनि। 'श्यामसुन्दर' नामक उपन्यासमे एहि विषमताक मार्मिक वर्णन ओ कयलनि अछि। ओ लिखैत छथि—"जीवनरूपी रथक एक पहिया असली पेशवाई ढंगक, छोट, भारी तथा ऊटपटाँग अछि तँ दोसर पहियामे स्नेह (चिक्कन) रहलो पर सेहो सदिखन खरखर बनल रहैत छल।" एही कारणें ओ अपन नाटक-सभमे अनुरूप वर-वधूक प्रेम-विवाहक सिद्धान्तक प्रतिपादन कयलनि अछि। हुनकर बारह नाटक सभमेसँ छओ नाटक सभक विषय-इऐह सिद्धान्त थीक। मनुष्य जीवनमे निश्चित रूपसँ उत्पन्न भेनिहार एहि समस्याक महत्त्व हुनकर दृष्टिमे अत्यधिक छलनि, एहन एक समीक्षकक कथन छनि। एकर रहस्य ओहि कालक सामाजिक परिस्थिमे तँ नुकायले अछि, परन्तु हुनकर अपन असफल विवाहक व्यथामे सेहो नुकायल छनि।

सन् 1888 ई. मे मैट्रिक परीक्षोत्तीर्ण भ' उच्च शिक्षाक हेतु ओ पूना स्थित डेक्कन काजलेमे प्रविष्ट भेलाह। हुनकामे विद्यमान कलात्मक गुणक विकासक हेतु अनुकूल वातावरण हुनका ओतहि प्राप्त भेलनि। संस्कृत 'मृच्छकटिक' नाटकक अभिनयक तैयारीक हेतु ओ यथेष्ट श्रम कयलनि। ओहिमे ओ शकारक अभिनय

कयलनि। नरसिंह चिन्तामण केलकर, विश्वनाथ काशीनाथ राजवाड़े, शिवराम महादेव परांजये, शांताराम अनंत देसाई सदृश अनेक बुद्धिमान तथा रसिक मित्रक संग रहलासँ हुनका प्रतिभाकेँ विकसित करबाक स्वर्णिम अवसर प्राप्त भेलनि। परन्तु हुनक 'भावना-प्रवणता' पर सबसँ अधिक प्रभाव पड़लनि हुनक सुन्दर एवं बुद्धिमान मित्र रघुनाथ शंकर रानडेक। सौन्दर्य तथा बुद्धिमत्ताक प्रति हुनका मनमे शैशवानस्थहिसँ अत्यधिक आकर्षण छलनि। अतः नाटक रचना करबा काल हुनका समक्ष आदर्श रूपमे हुनकर एहि मित्रक मोहक मुखाकृति तथा आकर्षक नेत्रहि रहल करैत छलनि। हुनकर अनुभव छलनि जे 'ललित साहित्यक हेतु आवश्यक प्रेरणा ताधरि नहि प्राप्त होइछ जाधरि अहाँक सोझा सौन्दर्य तथा विभ्रमक उज्ज्वल कल्पना नहि हो।' मूकनायक' मे **ओष्ठ असति कोमल दोन्दीं रक्तवर्ण त्यांचे। पुष्प जेवि मुग्धामस्थेमाजी गुलाबांचे'** एहि सुन्दर पदमे ओ अपन मित्रक मुग्धावस्थामे विद्मान गुलाबक पुष्पदल सदृश दुनू कोमल तथा रक्त वर्ण ओष्टहिक मोहक शब्द चित्र अंकित कयलनि अछि।

सन् 1891 ई. मे ओ बी. ए. भेलाह। अगिला वर्ष ओ कानूनक पढ़ाइक हेतु बम्बई चल गेलाह। ओहि समय बम्बई नगर भिन्न-भिन्न भाषा एवं नाटकक अभिनयक केन्द्र बनि गेल छल। एतय ओ अनेक पारसी-गुजराती नाटक देखलनि तथा ओकर संगीतक रसास्वादन कयलनि। कोल्हटकरक नाटक सभ पर पारसी नाटक सभक जे गम्भीर छाप देखबामे अबैत अछि ओकर मूल कारण इएह थीक। अपन आत्मचरितमे ओ पारसी रंगमंचक प्रति अत्यधिक आकर्षणक बात स्पष्ट शब्द सभमे उल्लेख कयलनि अछि। ओ लिखलनि अछि जे—"पारसी मंडली सभ 'हमानी', 'गुलाबकावली', 'चतुराकावली', 'खुदादाद' इत्यादि नाटक सभक अभिनय बहुत सुन्दर करैत छल। ओ नाटक हमरा एतेक प्रिय अछि जे ओकरा सोझाँ 'किर्लोस्कर-मंडली' द्वारा अभिनीत नाटक नीरस प्रतीत होइत अछि।" पारसी रंगमंचक संगीत इत्यादि विशेषता समकेँ कोल्हटकर मराठी रंगमंच पर अनबाक प्रयास कयलनि अछि। ओ अपन पहिल नाटकमे जे पद (गाना) लिखलनि ओकर तर्ज सेहो पारसी नाटक सभक पद सभक तर्ज पर छल। ओकरा हेतु ओ अनेक प्रयोग सभक आश्रय लेलनि। कोनो तर्जकेँ अपनयबा समय हुनक भाय तथा श्रीगद्रे ओहि तर्जमे गौनिहार पदकेँ नाट्य-गृहक बाहर जा क' सुनल करैत छलाह। कोल्हटकर नाटक सभ पर पारसी रंगमंचक छायाकेँ देखैत श्री पु. श्री. काले व्यंग्य करैत लिखलनि अछि—"स्वर्गीय तात्यासाहेब कोम्हटकरक कोनो स्वरूपशालिनी, सौन्दर्यशालिनी हमरासँ मुँहक सम्बन्धमे पुछय तँ हम ओकरा इएह उत्तर देबैक जे बहिन तोहर मुखौटा तँ बैंडबाजा वाला सदृश्य अछि।" एहि कथन मे सत्यक अपेक्षा अतियुक्तिए वेशी अछि, तइयो ई स्पष्ट भ' जाइत अछि जे हुनकर नाटक सभ पर पारसी रंगमंचक पर्याप्त प्रभाव अछि।

बम्बईमे जाहि दिन ओ कानूनक पढ़ाइ क' रहल छलाह ओही दिन ओ माधव राव पाटणकर द्वारा लिखित, बम्बईमे अत्यधिक लोकप्रिय, शृंगार-रस-प्रधान संगीत नाटक 'विक्रम-शशिकला'क अत्यन्त तीक्ष्ण समीक्षा प्रकाशित कयने छलाह। ई हुनकर पहिल समीक्षा छलनि। कोल्हटकर अत्यन्त नैतिकतावादी नहि छलाह। सुन्दर कल्पनासँ जोड़ल अश्लीलताकेँ सेहो ओ रम्य मानि सकैत छलाह। परन्तु एहि नाटकमे अनेक दृश्यमे 'नैतिकताक खून' भ' गेल छल। बम्बईमे सब ठाम छोट बच्चा सभक ठोरसँ सेहो एहि नाटकक शृंगार रस पूर्ण पद्य सुनल जा सकैत छल, अतः क्रोधित भ' ओ एहि नाटकक कटु समीक्षा कयलनि। ई समीक्षा 1893 मे 'विविधज्ञानविस्तार' मे छपल। एहिसँ अत्यन्त खलबली मचल। मार्मिक समीक्षा-दृष्टि, गम्भीर अध्ययन, सूक्ष्म विश्लेषण-शक्ति, साहित्यिक मूल्य सभक अत्युन्नत आदि गुण सभसँ युक्त पाश्चात्य पद्धतिक ई समीक्षात्मक लेख आधुनिक मराठी समीक्षा साहित्य नेओ राखलक। परन्तु चुभनिहार व्यंग्यक कारणेँ नाटककार महोदय क्रोधित भ' गेलाह।" नाटकक अभिनयक समय एक पदवीधर एहि नाटकक आलोचना कयलनि अछि जाहि लेखककेँ नाटक लिखबाक एकदम अनुभव नहि ओकर लिखल आलोचनाकेँ हमर दृष्टिमे कोनो मूल्य नहि अछि। आलोचक स्वयं कोनो नाटक लिखि क' ओकरा लोकप्रिय बनाक' देखाबथि।" एहन एक खुजल आह्वान श्रीपाटणकर हुनका देलथिन। ओकरा स्वीकार क' कय कोल्हटकर नाटक लिखबाक लेल लेखनी हाथमे लेलनि।

एहि प्रकारेँ सन् 1893 मे कोल्हटकरक साहित्यिक जीवनक श्रीगणेश भेलनि। सन् 1885 सँ ल' कय 1920 धरिक युग मराठी साहित्यक इतिहासमे 'वसंत बहार' क युग मानल जाइत अछि। वस्तुतः सन् 1918सँ मराठी साहित्यक स्वरूपमे मौलिक परिवर्तनक प्रक्रिया प्रारम्भ भ' गेल छल। मराठी शासन-सत्ताक अस्तक संग मराठी साहित्यक एक वैभवशाली युग सेहो अस्त भ' गेल छल। परन्तु ओहि समय एक नव साहित्यक परिवर्त्तनक हल्लुक आहट सुनबामे आवय लागल। आंग्ल संस्कृतिक व्यापक प्रभावक कारणेँ भारतीय जन-जीवनमे जे आमूल परिवर्तन होमय लागल छल ओकर प्रभाव साहित्य पर अनिवार्य रूपेँ पड़ल। एक भाग सामाजिक विचार-मन्थन होमय लागल छल तथा दोसर भाग साहित्य प्रकृति, स्वरूप, प्रेरणा मूल्य आदिसँ सम्बन्धित धारणा सभमे सेहो अत्यन्त वेगसँ परिवर्तन भ' गेल छल। विषय-वस्तु तथा अभिव्यक्ति दुनू दृष्टिसँ एहि परिवर्त्तनक प्रभाव बाल शास्त्री जांभेकर, महात्मा ज्योतिवा फुले, लोकहितवादी, न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे प्रभृति प्रारम्भिक अंग्रेजी लेखक एवं विचारशील व्यक्ति सभक लेखन पर न्यूनाधिक मात्रामे परिलक्षित होमय लागल छल। विश्वविद्यालय सभमे, समाचार पत्र सभ तथा सरकारी संस्था सभक द्वारा आंग्ल विधा, भाषा तथा संस्कृतिक परिधि जहिना विस्तीर्ण होइत चल गेल तहिना-तहिना

एहि परिवर्तनक परिधिमे सेहो विस्तार होइत चल गेल। सन् 1874 मे जखन विष्णुशास्त्री चिलूणकरक युग प्रवर्तक 'निवन्धमाला' क आरम्भ भेल, तखन डा० अ. ना. देशपांडेक कथनानुसारेँ मराठी साहित्यक आधुनिक स्वरूप अत्यन्त रम्य, उदात्त तथा तेजस्वी भ' गेल। एकर बाद लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक तथा गोपाल गणेश आगरकरक प्रभावशाली लेख सभसँ महाराष्ट्रमे दुइ विचारधारा प्रवाहित भेल। एक परम्परा प्रधान राष्ट्रवादी लोकनिक विचारधारा छलनि, तँ दोसर प्राचीन रूढ़ि, परम्परा तथा प्रथा आदिसँ समाजकेँ मुक्त करैबाक इच्छा रखनिहार पाश्चात्य शिक्षासँ प्रभावित सुधारवादी लोकनिक छलनि। 1885क पश्चात् जे लेखक मराठी साहित्य क्षेत्रमे अयलाह ओ लोकनि प्रायः सुधारवादी विचार धाराक छलाह। 1893मे जखन ओ लेखनी हाथमे लेलनि ओहि समय मराठी उपन्यास-साहित्यक जनक हरिभाऊ आपटेक 'मधली स्थिति', 'गणपतराव', 'पणलक्षांत कोण धेतो' नामक सामाजिक उपन्यास नवे-नव प्रकाशित भेल छल। नवीन युगक शूरवीर योद्धा केशवसुतक 'तुतारी' (तुरही) काव्य क्षेत्रमे नवावेशसँ निनादित भ' रहल छलनि। नाटक क्षेत्रमे किर्लोस्करक अनुयायी लोकनिमे सुप्रसिद्ध नाटककार गोविन्द बल्लाल देवल द्वारा लिखित नाटक रंगमंच पर अभिनीत होमय लागल छल। मराठीक ललित साहित्य पर दृष्टिक्षेप करब तँ श्री वि. स. खांडेकरक कथनानुसार मराठीमे जे उन्नत कोटिक मौलिक साहित्यक सृष्टि भेल ओ आपटे तथा कोल्हटकरक समयहिसँ भेल।

माधवराव पटाणकरक आह्वानकेँ स्वीकार कय ओ नव पद्धतिक पहिल नाटक 'वीरतनय' लिखलनि तथा ओकरा अभिनीत करवाक हेतु ओ ओहि समयक प्रसिद्ध नाटक कम्पनी 'किर्लोस्कर-संगीत-मंडली'केँ वैह नाटक देलनि। जाधरि एकक पश्चात् एक नव नाटक नहि हो ताधरि जनताक उचित मनोरंजन नहि भ' सकैछ। एहि धारणासँ इनामक घोषणा क' उक्त कम्पनी लेखक लोकननिसँ नव-नव नाटक मँगबौने छल। इनामक हेतु प्रेषित लगभग पचीस नाटक मे सँ श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकरक नाटक 'वीरतनय' प्रथम आयल। ई बात उक्त मंडलीक 28म वार्षिक वृतान्तमे उल्लिखित अछि। एहिसँ प्रकट होइत अछि जे ओहि समयमे अभिनयक हेतु नव तथा मौलिक नाटक सभक अभाव अनुभव कयल जाइत छल। कोल्हटकर शेक्सपियरक नाटक सभक अनुकरण पर किछु विनोदी एवं कल्पना प्रधान नाटक सेहो लिखने छलाह। तहिया सँ मराठीक रंगमंच पर एक नवीन युगक प्रादुर्भाव भेल।

'वीरतनय' क पश्चात् ओ 'मूकनायक', गुप्तमंजूषा', 'मतिविकार' प्रेमशोधन', 'वधूपरीक्षा' इत्यादि अनेक नाटक लिखलनि, जाहिसँ हुनकर नाम चारू भाग पसरि गेलनि। रहस्य तथा कल्पनासँ परिपूर्ण मौलिक कथानक, नव पद्धतिक संगीत

सरस संवाद तथा आकर्षक विनोदसँ ओत-प्रोत ई नाटक सभ महाराष्ट्रक नव पीढ़ीकेँ मुग्ध क' देलक।

जाहि तीव्रता तथा उत्साहक संग कोल्हटकरक नाटक सभक स्वागत भेल ओतवहि अधिक हुनकर नाटक सभक आलोचना सेहो भेल। 'रंगभूमि' मासिक पत्रिकाक पहिल अंकमे एहि सम्बन्धमे एक टिप्पणी प्रकाशित भेल छल ओहिसँ पहिनेसँ प्रतीत होइत अछि जे कोल्हटकरक नाटक सभ कतेक प्रबल साहित्यिक बिहाड़ि आनि देने छल। "श्री कोल्हटकरक नाटक एक प्रकारक रणभेरी थीक। जाहि प्रकारेँ रण भेरीक संकेत सुनि क' योद्धागण शस्त्रादिसँ सुसज्जित भ' मैदानमे आबि जाइत छथि ओही प्रकारेँ कोल्हटकरक नव नाटककेँ रंगमंच पर अवतहि चारूभागसँ आलोचक लोकनिक सेना एकत्र भ' जाइत अछि। मराठीमे आइ धरि अनेक प्रिय एवं अप्रिय नाटक सभक अभिनय भेल अछि। परन्तु ओकर स्तुति अथवा निन्दा मात्र ओतवे समय धरि सीमित रहैत छल। आगाँ जा क' लोक ओहि नाटक सभक तथा ओकर आलोचनाकेँ बिसरि जाइत छल। परन्तु कोल्हटकर द्वारा लिखित नाटक सभ पर तँ आलोचनाक एक विराट साहित्य तैयार भ' गेल अछि।" ई बात ओहि टिप्पणीमे लिखल गेल अछि। सुप्रसिद्ध नाटककार राम गणेश गडकरी एही आशयक उद्‌गार व्यक्त कयलनि अछि। ओ कहैत छथि— "मराठी भाषामे कोनो नाटककारक सम्बन्ध मे एतेक भारी वाग्युद्ध देखवामे नहि आयल।"

प्राचीन रूढ़ि एवं परम्परागत सीमा सभक परित्याग क' स्वतन्त्र मार्गक अनुसरण कयनिहारक भाग्यमे अत्यन्त कटु आलोचना तँ सदिखन लगले रहैत छनि। सुप्रसिद्ध समीक्षक श्री पु. रा. लेले लिखैत छथि—"अंग्रेजी नाटक पढ़िक' नियन्त्रणकेँ भंग कयनिहार श्री कोल्हटकर सदृश वाङ्मय वेगसँ उड़निहार कवि तथा नियन्त्रणक पालन कयनिहार, जतय क ततय बैसल रहनिहार आरो अधिक भेल तँ मुर्गीक गतिसँ उड़निहार तथा अवसर भेटला पर प्रतिगामी स्वरूपक आलोचकक मध्य जँ झगड़ा हो तँ ओहिमे आश्चर्य कथीक ?"

मात्र नाटकक क्षेत्रहिमे नहि, विनोद एवं समीक्षाक क्षेत्रमे सेहो कोल्हटकरकेँ रूढ़िवादी एवं प्रतिगामी निन्दक लोकनिक पीड़ा सहन करय पड़लनि। कोल्हटकरसँ पहिने मराठी साहित्यमे विनोदक अस्तित्व अभावात्मक रूपहिमे अनुभूतिक विषय बनैत छल। पाश्चात्य विनोदी निबन्ध सभक आधार पर मराठीमे स्वतन्त्र विनोदी लेख सभक प्रथा इएेह 1902 मे 'साक्षीदार' नामक एक नव शैलीक लेख लिखि प्रारम्भ कयलनि। एहि लेखसँ मराठी साहित्यमे एक नव 'विनोद-युग' क अवतरण भेल। ई लेख विशुद्ध विनोदी स्वरूपक छल। तत्पश्चात् 1903 मे ओ 'कुलुप', 'शिमगा', 'गणेश चतुर्थी' आदि विनोदी लेख सभमे सामाजिक कुप्रथा सभ पर उपहासात्मक शब्दमे अत्यन्त गम्भीर प्रहार कयलनि। एहिसँ तथाकथित

संस्कृति-संरक्षक लोकनिक रोष बहुत बेशी बढ़ि गेलनि। ई लेख 'विविधज्ञान-विस्तार' नामक पत्रिकामे छपैत छल। एहि लेख सभमे हिन्दू धर्मक अत्यन्त कठोर आलोचना होइत छल। एहि पत्रक संपादक श्री मुरमुकरक लग बड़ बेशी शिकायत आवय लागलनि। तखन श्री मुरमकर हिनकासँ कहलथिन जे अहाँ 'सुदामा' नामसँ लेख लिखल करू। जखन 'गणेश चतुर्थी' नामक लेख छपल तखन मासिक पत्रक ग्राहक लोकनि धमकी देलथिन जे हम मासिक पत्र मँगायब बन्द क' देब। एहिसँ सहजहि कल्पना कयल जा सकैत अछि जे विरोध कतेक तीव्र रहल हैत तथा कोल्हटकरक व्यंग्यपूर्ण विनोदक प्रहार क्षमता कतेक प्रबल रहल हैतनि। 1902 सँ ल' कय 1923 धरिक दुइ दशाब्दीमे ओ विनोदी लेख लिखलनि। एहि लेख सभक संग्रह 'सुदाम्याचे पोहे' नामसँ प्रकाशित भेल तथा एहि पुस्तकक मराठी साहित्यमे अत्युच्च स्थान अछि। विनोदक क्षेत्रमे हिनक कार्यक प्रशंसामे श्री न. चि. केलकर हिनका 'विनोद पीठक आचार्य' कहि क' सम्बोधित कयलथिन अछि।

मराठीमे पाश्चात्य शैलीक विवेचन तथा विश्लेषणसँ युक्त समीक्षा-लेखनक श्री गणेशक श्रेय श्री कोल्हटकरेँ कें छनि। 'कोल्हटकरांचा लेख संग्रह' नामक ग्रन्थमे हुनक जे विविध समीक्षा लेख संग्रहीत भेल अछि ओकरा देखलासँ हुनकर सूक्ष्म विवेचन बुद्धि, व्यापक रसिकता तथा मर्मग्राही समीक्षा-दृष्टिक पता चलैत अछि। मराठीमे एतेक विविधतासँ पूर्ण तथा एतेक बेशी संख्यामे प्रायः कोनो अन्य व्यक्ति समीक्षात्मक लेख लिखने हैताह।

सन् 1897 मे ओ कानूनक परीक्षा पास कयलनि तथा 1898 मे सनद हासिल क' ओ विदर्भ-स्थित अकोलामे वकालत करय लगलाह। ओं ओतय किछुए दिन धरि रहि सकलाह। ओही वर्ष ओ तेल्हारा नामक स्थान पर चल गेलाह। ओतय ओ छओ वर्ष धरि छलाह। काव्य लेखनक संगहि संग विनोदी लेख लिखब सेहो ओ ओतहि प्रारम्भ कयलनि। ओ 'साक्षीदार', 'कुलुप', 'शिगमा', 'गणेश चतुर्थी', 'श्रावणी' आदि अपन अत्यंत लोकप्रिय लेख विदर्भक एहि छोट सन गाममे बैसि क' लिखने छलाह। हुनकर पुस्तक 'सुदाम्याचे पोहें' मे जे दुइ अमर विनोदी व्यक्तिक चित्र 'बंडुनाना' तथा 'पांडुनाना' अंकित कयल गेल अछि, ओ हुनका तेल्हाराक अदालहिमे उपलब्ध भेल छलनि। अपन आत्मचरित मे ओ लिखैत छथि—"जखन हम तेल्हारा मे रहैत छलहुँ ओहि समय ओतय अदालतमे एक बंडुनाना नामक सुनार भाई कारकून तथा तात्यावा चाँदेकर नामक एक जब्ती कारकूनक काज करैत छलाह। हुनका समकेँ देखिक' हमरा एहि जोड़ीक बात सुझल।" आगाँ जा क' 1905 मे जखन ओ अदालत खामगाँव चल गेल तखन कोल्हटकर सेहो खामगाँव चल गेलाह।

हुनकर वकालत पेशा खामगाँवमे अत्यन्त सुन्दर रूपेँ चललनि। एहि सम्बन्धमे ओ आत्मचरित्रमे लिखैत छथि—"हमर वकालत पेशा बहुत बढ़ियाँ

चलि रहल छल।" परन्तु हुनकर ध्यान पैसाक अपेक्षा कीर्ति प्राप्त करबाक दिस अधिक छलनि। हुनकर नाटक, समीक्षा, विनोदी निबन्ध आदिक लेखन अव्याहृत रूपेँ चलि रहल छलनि। खामगाँवमे ओ कथा लिखब शुरू कयलनि। 1910 सँ 1912 धरिक हुनक चारि कथा प्रकाशित भेल 'गाणारे यंत्र', 'पति हाच स्त्रीचा अलंकार', 'संपादिका' तथा 'गरीब विचारे पाड़स'।

खामगाँवमे ओ एक खेत आओर एक मकान किनलनि। विदर्भमे एक छोटसन गाममे विद्यमान हुनकर ई घर महाराष्ट्रीय साहित्यिक गतिविधि समक केन्द्र बनि गेल छल। श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर आब एकमात्र व्यक्तिए नहि रहि संस्था बनि गेल छलाह। हुनकर व्यापक व्यक्तित्वसँ प्रभावित भ' महाराष्ट्रक अनेक प्रतिभाशाली युवक हुनकर लगपास एकत्रित भ, गेलाह। कोल्हटकरक एहि साहित्यिक परम्परा मराठी साहित्यिक एक महत्वपूर्ण घटना मानल जायत। गोविन्द वल्लाल देवल, कृष्णाजी प्रभाकर खाडिलकर सदृश महानुभाव हुनकासँ प्रेरणा प्राप्त कयलनि अछि। राम गणेश गडकरी, भा. वि. बरेरकर, वि. स. खाँडेकर, गन्ध्यं. मडखोलकर आदि तँ हुनका गुरुए मानलथिन अछि एहि सँ हुनक युग प्रवर्त्तक साहित्यिक प्रतिभा तथा आधुनिकताक सुगमता पूर्वक पता चलि जाइत अछि। 'महाराष्ट्र टाइम्स' क जून 27, 1971 क अंकमे प्रसिद्ध मराठी साहित्यकार श्री वि. स. खाँडेकर लिखैत छथि—"संस्कृत तथा अंग्रेजी साहित्यक अनुशीलन करबाकाल हमरा पता चलैत अछि जे ओहि भाषा सममे जे किछु हम पढ़ैत छी, ओहि सदृशे साहित्य-सर्जन हमर मराठीमे श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर द्वारा भेल अछि।" एहिसँ सुविधा सँ बुझल जा सकैत अछि जे ओहि समयक प्रगतिशील महाराष्ट्रीय युवा पीढ़ी हुनकर साहित्यक प्रति एतेक बेशी किऐक आकृष्ट भेल छलाह? नवीनता तथा सौन्दर्य हुनक प्रतिभाक अनन्य साधारण विशेषता छलनि। अपन आत्मचरित्रमे एहि सम्बन्धमे ओ लिखैत छथि—"सुन्दर एवं भव्य वस्तु पर अपन चित्त-वृत्तिकेँ समग्र करबामे हमर मनकेँ एक विशेष आनन्दक अनुभूति होइत अछि। हमर जतेक सौन्दर्याभिरूचि बड़ कम लोक सभमे हैत।" हुनकर व्यक्तित्वमे ललित कला विषयक अभिरूचि एवं सौन्दर्यक प्रति दुर्निवार आकर्षणक परिपाक छलनि। तइयो ओहिमे निष्ठुर कहबा योग्य संयमक बड़ बेशी मात्रा रहैत छल। श्री चिन्तामणिराव कोल्हटकर 'बड़रूपी' मे लिखैत छथि—"जीवनक नवीनताक चाहे ओ सौन्दर्यक हो, कल्पनात्मक हो, आवाजक हो वा तर्जेक हो हुनका मनमे अत्यधिक आकर्षण छलनि; परन्तु संगहि संयम सेहो छलनि।" हुनकर सौन्दर्यासक्ति तथा संयम पर प्रकाश देनिहार एक उद्‌बोधक घटना हुनकर जीवनमे अबैत छनि। ओहिसँ हुनक व्यक्तित्वक मर्मकेँ उत्तम रीतिसँ बुझल जा सकैत अछि। एक बेर एक मोकिल मोकदमाक फैसला अपना पक्ष में करयबाक उद्देश्यसँ उपहार रूपमे प्रदान करयबाक हेतु एक सुन्दरी युवतीकेँ

हुनका लग ल' आनलक। परन्तु शीघ्रहि हुनकर सौन्दर्यासक्ति जागलनि आओर ओ विनोदमे बजलाह—"हो भाइ, जे किछु भेंट करबाक होइत छैक ओ ओकीलक हाथहि करयबाक होइत छैक ई तोरा ज्ञान नहि ?" रातिमे जखन ओ मोकील ओहि सौन्दर्यवतीकेँ ल' क ओहि युवा ओकीलक लग आनलक तखन ओकर सुगठित शरीरकेँ देखि हुनका ओकर मुंह देखबाक इच्छा भेलनि। ओ ओकरा अपन मुंह परसँ घोघ हटैबाक हेतु कहलथिन। ओ स्त्री अपन दुःखावेग केँ संवरण नहि क' सकलीह आओर फफकि-फफकि क' कानय लगलीह। तखन करुणाकुल भ' कय कोल्हटकर ओकरासँ कहलथिन—"बहिन अहां एकदम डेराउ नहि ? अहाँ हमरा लेल बहिन सदृश छी। आई भिनसरे जखन ओ व्यक्ति एहि अभद्र कार्यक हेतु अहाँकेँ अनबाक बात क' रहल छल तखने हम ओकरा फटकारने छलहुँ।" ओहि समय उक्त युवती अपन मँह परसँ पर्दा हटा क' कय कृतज्ञता पूर्वक हुनका नमस्कार कयलक। कोल्हटकर भायक दिससँ देल गेनिहार उपहार द' कय हुनका वापस भेज देलथिन। परन्तु ई घटना हुनकर मनकेँ अत्यधिक व्याकुल बना देलक। मनक ओहि तरल अवस्थामे ओहि मुखावकुंठित वाला पर ओ एक सुन्दर पदक रचना कयलनि—

सुन्दर वदन नसेल कसे
अवयव इतर जरी सुरुचिरसे
लावण्ये खचलेले ।। ध्रुव ।।
ऐसी अवयवपंक्ति समस्या
दिधली जरि ससिका उकलाया
पुरविल कल्पुनि मोहक आस्था
संशय यात न भासे।

ई पद ओ 'मतिविकार' नामक नाटक मे प्रयुक्त कयलनि।

कोल्हटकरक व्यक्तित्व ऋजु आकर्षक एवं सुसंस्कृत छल। 'भव्य शरीर, भव्य ललाट, तेजस्वी, आत्मलीन नेत्र तथा स्मित-प्रसन्न मुखमुद्रा' हुनक ई वर्णन श्री माडखोलकर कयने छथि। वृत्तिसँ ओ जतेक आधुनिक छलाह पोशाक मे ओतवे प्राचीन पुरुष छलाह। हुनका संगीतमे अत्यधिक रूचि छलनि। ओ स्वयं गावि सेहो सकैत छलाह। भाऊराव कोल्हटकर सदृश अग्रगण्य संगीत नट हुनका सँ संगीतक निर्देशन पौने छलाह। एहि प्रसंगमे चिन्तामण कोल्हटकर लिखैत छथि —"मधुर संगीतपूर्ण कण्ठ तथा सौन्दर्यक प्रति हुनक मनमे अत्यधिक आकर्षण छलनि। हुनकर अपन कण्ठ अत्यत मधुर छलनि। लेखन मे जतेक कुशलता छलनि, ततवे हुनक स्वरोमे छलनि। ओ मन्द ओ मध्यम सप्तकमे गबैत छलाह; परंतु नीक संगीतज्ञ हेतु सेहो हुनक निर्देशनक अनुसार नाटकीय गीतक सम्यक् निर्वाह करब कठिन भ' जाइत छलनि।"

मात्र ललित कला सभहिमे नहि, ज्योतिर्गणित सदृश घोर वैज्ञानिक विषय सभमे सेहो ओ व्युत्पन्न छलाह। हुनक जिज्ञासा सर्वस्पर्शी छल जकर ई एक प्रमाण थीक। 1913 मे 'भारतीय ज्योतिगणित' नामक हुनक एक ग्रन्थ प्रकाशित भेल। 'ग्रह गणित' तथा 'नक्षत्र विज्ञान' नामक पुस्तकक ई सारगर्भित समीक्षा कयलनि 1920 मे। सांगलीमे एक ज्योतिष सम्मेलन भेल छल जकर अध्यक्ष पद कें ई सुशोभित कयने रहथि। अपन आत्मचरित्रमे ओ लिखने छथि—"पहिने हमरा गणितमे बेशी गति नहि छल तथा एकरा लेल हमर क्यो सहायक सेहो नहि छलाह। अतः एहि विषयक मुख्य सिद्धान्तकें बुझबाक हेतु हमरा बड़ बेशी समय लगावय पड़ल। मस्तिष्क मे जे सन्देह उत्पन्न होइत छल ओकर निवारणक चिन्ता मे मासक मास रात्रि जागरण करय पड़ि जाइत छल।"

सन् 1818 मे कोल्हटकर पुनः अपन निवास-स्थान बदललनि। काजक आधिक्य ओ सहन नहि क' सकलाह। ओ खामगाँव छोड़िक' जामोद सदृश शान्त स्थानमे चल गेलाह। हुनकर एहि स्थानांतरणक वर्णन करैत एक समीक्षक लिखने छथि—"साहित्यिक नेपोलियन जलगाँवक सेंट हेलनामे जा पहुँचलाह। जलगाँव सदृश जगहमे रहलो पर हुनकर साहित्य-सृजनमे कोनो बाधा नहि अयलनि। नाटक सभक रचना चलि रहल छल तथापि हुनक नाट्य-प्रतिभा एहि समयमे किछु निस्तेज भ' गेल छलनि। ओ ओतय 'श्यामसुन्दर' तथा 'दुटप्पी की टुहेरी' नामक उपन्यास, 'श्रमसाफल्य', 'शिवपावित्र्य' तथा 'मायाविवाह' नामक नाटक, अपन आत्म चरित्र, किछु निबन्ध तथा समीक्षा आदि लिखलनि। अपन सुप्रसिद्ध 'महाराष्ट्र गीत' ओ एतहि लिखलनि। जीवनक एहि ढहैत सन्ध्या वेलामे हुनका विभिन्न साहित्यक सम्मान सेहो प्राप्त भेलनि। 1917 मे बंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालयक, वार्षिक सभा तथा 1918 मे ठाणाक मराठी संग्राहालयक वार्षिक सभाक अध्यक्ष पदकें ई सुशोभित कयलनि। 1922 मे ओ द्वितीय महाराष्ट्र कवि सम्मेलनक अध्यक्ष बनलाह तथा 1927 मे पूनामे भेल बारहम महाराष्ट्र साहित्य सम्मेलनक अध्यक्ष पदक सम्मान हुनका प्राप्त भेलनि। एहि अवसर पर ओ जे भाषण देलनि ओहिसँ हुनक साहित्य एवं कला विषयक गम्भीर चिन्तनक पता चलैत अछि।

कोल्हटकरक युग महाराष्ट्रक वैचारिक संघर्षक युग छल। नवीन तथा पुरातनक विवाद चलि रहल छल। साहित्यिक शैलीक दृष्टिसँ कृष्णशास्त्री चिपलूणकर तथा वैचारिक दृष्टिसँ न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे हुनक आदर्श छलथिन। मराठीमे अस्पृशताक विषयमे ई एक उपन्यास लिखने छलाह। ई मात्र संयोग नहि छल, ई हुनक सामाजिक चिन्तनक स्वाभाविक परिणति छलनि। हुनकर वृत्त मे जे ई आधुनिकता छलनि, ओहि पर ओ आचरण सेहो कयलनि। पिताक मृत्युक पश्चात् ओ अपन सतमायक केश नहि वपन होमय देलनि; यद्यपि ई ओहि समयक प्रथा छल। अपन दुनू बहिनक विवाह ताधरि नहि होमय देलनि

जाघरि 14-15 वर्षक नहि भ' गेलीह। जाति-भेद तँ ओ कहियो नहि मानलनि। 'समानता' हुनक समाज सुधारक एकमात्र उद्देश्य छल। 'चित्रगुप्ताचा जमाखर्च' नामक अपन एक विनोदी लेखमे ओ स्वर्गक जे कल्पना कयलनि अछि ओहिमे ओकरा ओ 'जाति-भेदसँ रहित' मानैत छथि। हुनक समीक्षा, नाटक, उपन्यास, कहानी तथा विनोदी साहित्यकेँ पढ़लासँ पता चलैत अछि जे ओ सदिखन समाजाभिमुख रहलाह तथा हुनक तीव्र अभिलाषा रहलनि जे समाज मे सुधार हो। जे व्यक्ति सौन्दर्यासक्त तथा विशुद्ध कलावादी रहल होथि। हुनक साहित्यमे सोद्देश्य समाजाभिमुखता किछु विरोधाभास सदृश प्रतीत हैत परन्तु एकर परिहार तखन होइत अछि जखन हम देखैत छी जे ओ ललित साहित्यमे मात्र भावने टाकेँ प्रधानता नहि देलनि, प्रत्युत बुद्धि एवं भावना दुनूकेँ ओकर घटक मानलनि। ओ जतबे कला प्रेमी छलाह ओतबे सामाजिक विषयमे रूचि रखनिहारर सेहो छलाह।

दिनांक 1 जून 1934क दिन पूनामे श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकरक जीवन-दीपक निर्वाण भेलनि आओर ओकरा संगहि एक साहित्यिक पर्व सेहो समाप्त भेल। ईश्वर जे हमरा शक्ति सामर्थ्य प्रदान कयलनि अछि ओकर तथा समयक उचित सदुपयोग करबे हमर धर्म थीक, इऐह हुनका प्रति असली श्रद्धा थीक। एहि कारणेँ ओ अपन जीवनक प्रत्येक क्षणक सदुपयोग एवं सद्विनियोग कयलनि। कोल्हटकरक जीवन तथा साहित्य जतेक विवादास्पद तुफानी रहल ओतबे कृतार्थता सँ परिपूर्ण सेहो रहल। श्री गडकरी हुनका प्रति जे उद्‌गार व्यक्त कयलनि अछि जे---"तात्या ती तलवार एक तुमची वाकी विले कायते' अर्थात् 'हे आदरणीय, तलवार कहबाक योग्यतँ अहाँक मात्र लेखनी अछि, अन्यक लेखनी तँ मात्र साग-भाजी करबाक छुरी वा दँतारीए अछि" ओहिमे हुनक साहित्यिक महत्ताक मर्म नुकायत अछि। बुद्धि आओर सौन्दर्यक ई प्रतिभाशाली उपासक महाराष्ट्र शारदाक अंग-प्रत्यंगकेँ जाहि विविध अर्थपूर्ण तेजस्वी अलंकारसँ अलंकृत कयलनि अछि, ओकर तेज अनन्त काल धरि प्रेरणा दैत रहत, एहिमे सन्देह नहि।

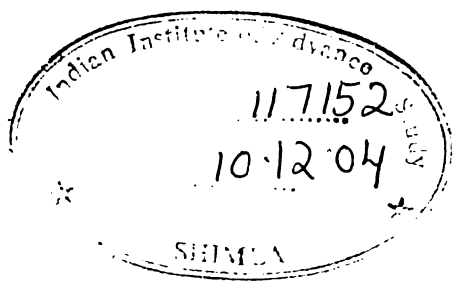

2

विनोद गोठक आचार्य

सन् 1902 मे श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकरक 'साक्षीदार' नामक एक विनोदी निवन्ध 'विविध ज्ञान विस्तार' मे प्रकाशित भेल आओर ओकर आह्लाददायक सौरभसँ मराठी साहित्य क्षेत्रमे एक अभूतपूर्व हास्य युगक नव वसन्त अवतीर्ण भेल।

कोल्हटकर-पूर्व मराठी साहित्यमे विनोदक अस्तित्वक बोध अभावात्मक रूपहिसँ अनुभूतिक विषय बनैत अछि। भक्ति एवं वेदान्त प्राचीन मराठी सन्त-काव्यक दुइ प्रमुख प्रेरणा छल। एहि कारणेँहिनकर विनोद पराङ्मुख रहि जायब स्वाभाविके छल। तथापि सन्त वाङ्मय रहितहुँ सेहो रूक्ष नहि अछि, रसपूर्ण अछि परन्तु वीर-शृंगारादि लौकिक रस सभक स्थान पर ओ अलौकिक 'शान्त' रस केँ प्रधानता देलनि अछि। अतः प्राचीन मराठी सन्तकाव्यमे, सर्वसंगपरित्यागी साय-कक अधर पर उद्भूत भेनिहार अस्फुट स्मित रेखाक समानहि विनोदक स्थित रहल अछि। ज्ञानेश्वर, तुकाराम, रामदास-सदृश सन्त कविलोकनिक अथवा मोरोपंत, मुक्तेश्वर, वामन सदृश पंडित कवि लोकनिक काव्य सभमे विनोदक सर्वथा अभाव हो एहन बात नहि, परन्तु ई अपवादात्मक थीक। एकनाथ द्वारा लिखित 'भारूड' एक एहन कविता थीक, जकरा विनोदी कहल जा सकैत अछि। परन्तु ओकरो आधार आध्यात्मे थीक। 'शाहीरो' साहित्यमे सेहो विनोदक —जे कि शृंगार रसक सखा मानल जाइत अछि अधिक स्थान नहि देल गेल अछि।

विनोदकेँ मराठी साहित्यमे तखन स्थान प्राप्त भेल, जखन लोक सबकेँ अंग्रेजी साहित्यक जानकारी होमय लागल। सबसँ पहिने जे लोकनि अंग्रेजी मे लिखब प्रारंभ कयलनि ओ सामाजिक कुप्रभाव सभक आलोचना करबाक हेतु उप-हास गर्भित विनोदक आश्रय लेलनि। साहित्यक स्तर पर वक्रोक्ति एवं उपहासक मराठी साहित्यमे सर्वप्रथम प्रभावोत्पादक रीतिसँ उपयोग विष्णु शास्त्री चिपलूण-कर कयलनि अछि। विनोदी साहित्यक सृष्टिक लेल भाषाकेँ प्रभावशाली हैबाक आवश्यकता अछि। विष्णुशास्त्री ई कार्य कयलनि। हुनकर युयुत्सु व्यक्तित्वमे तीव्र बुद्धिमत्ता तथा सहृदयता युक्त रसिकताक मनोज्ञ संगम छलनि। सन् 1874 सँ प्रारम्भ भेल निबन्धमालामे हुनक सुन्दर प्रतिबिम्ब दृष्टिगत होइत अछि।

परन्तु ओहो स्वतन्त्र रूपसँ विनोदी लेखन नहि कयलनि। विनोदक दृष्टिसँ कृपण मराठी साहित्यमे विनोदी वाङ्मयक सृजन क' कय ओकरा एक स्वतन्त्र एवं सुप्रतिष्ठित स्थान प्रदान करबाक जँ क्यो सर्वप्रथम प्रयत्न कयलनि अछि तँ ओ श्रीपाद कृष्णे छथि। "हुनकर विनोदी वाङ्मयक परिधि एतेक विशाल अछि जे ओ मराठी साहित्यक विनोद पीठक शंकराचार्य तँ छलाहे, हुनका आधुनिक कालक अखिल भारतीय साहित्यमे सेहो आद्य विनोदी लेखकक रूपमे सम्बोधित कयल जा सकैत अछि।" ई गौरवपूर्ण उद्‌गार अछि, जे प्रह्लाद केशव अत्रे हुनका सम्बन्धमे व्यक्त कयने छथि।

हुनकर समीक्षात्मक लेख 1893 ने छपब शुरू भ' गेल छलनि। 1902 मे ओ 'साक्षीदार' लिखलनि। ओहिसँ पूर्व 'वीरतनय', 'मूकनायक' आदि नाटक लिखलनि। ओहिमे हुनक विनोद प्रवरण प्रतिभाक नीक परिचय भटैत अछि। फार्स, प्रहसन आदिमे अयनिहार ग्राम्य तथा किछु-किछु अश्लील रूपक विनोदसँ अकुलायल मराठी प्रेक्षककेँ ओ एक सर्वथा नवीन शैलीक विनोद प्रदान कयलनि। ग. त्र्यं. माडखोलकर कहैत छथि—"पुरान-धुरान, घसायल-पिटायल ग्राम्य-विनोदक पंजासँ मराठी रंगमंचकेँ सर्वदाक हेतु मुक्त क' कय पाश्चात्य शैलीक अभिज्ञान उत्कृष्ट विनोदक आनन्द प्राप्त करबाक सर्वप्रथम अवसर सँ क्यो प्रेक्षक लोकनिकेँ प्रदान कयलनि तथा संकोच विरहित निर्मल हास्यक कल्लोलसँ मराठी रंगमन्दिरकेँ पूर्ण शक्तिसँ आन्दोलित कयलनि अछि तँ ओ कोल्हटकरे थिकाह।" 'मूकनायक' क 'पतोदेवेत्रिका' तथा 'गुप्त-मंजूषा' क 'शृंगी-भृंगी' मराठी रंगमंच पर विनोदक एक अभूतपूर्व परंपराक श्री गणेश कयलक। इऐह नहि हुनक समीक्षात्मक लेख सभमे सेहो विनोद सूक्ष्म रूपसँ अनुस्यूत रहैत अछि। अपन एहि विनोदयुक्त प्रतिभाकेँ पूर्ण अवसर प्रदान करबाक इच्छहिसँ ओ स्वतन्त्र रूपसँ विनोदी लेख लिखब शुरू कयलिन। एहि सम्बन्धमे अपन आत्मचरित्रमे ओ लिखैत छथि—"हमर अनेक समीक्षात्मक लेख सभमे विनोदक झलक विद्‌यमान अछि। बहुत दिनसँ हम सोचैत छलहुँ जे एहि विनोदकेँ स्वतन्त्र रूपमे पल्लवित कयल जाय। एहि विचारकेँ क्रियान्वित करबाक अवसर हमरा 1902मे प्राप्त भेल। एहिसँ पहिने हम जेरोम तथा मार्केट्‌वेन इत्यादि विनोदी ग्रन्थकार लोकनिकेँ पढ़ि गेल छलहुँ। हुनकर लेख सभक आधार पर हम 1902 मे 'साक्षीदार' लेख प्रकाशित करबोलहुँ।" ओकर पश्चात् 1922 धरि ओ अव्याहत रूपसँ प्रचुर मात्रामे विनोदी लेख लिखैत रहलाह तथा महाराष्ट्रकेँ खूब हँसबैत रहलाह।

कोल्हटकरक विनोदी साहित्य कलापूर्ण अछि। 'हास्यक हेतु हास्य क' भावना हुनकामे नहि छलनि। "विनोदयुक्त लेख सभक आवश्यकता सदिखन समाज-सुधारक कालहिमे रहैत अछि।" हुनकर ई कथन यथेष्ट अर्थ रखैत अछि। हुनक साहित्यक आधार भूमि प्रगतिशील एवं पुरागामी बुद्धिवादी सामाजिक तत्त्वज्ञान

रहल अछि। वस्तुतः कोल्हटकरक युगे सामाजिक उथल-पुथलक युग छल। नवीन आओर पुरातन आस्था सभक टक्करसँ संपूर्ण वातावरण संचालित भ' उठल छल। महाराष्ट्रमे सेहो एक प्रकारक वैचारिक मन्थन शुरू भ' गेल छल। आधुनिक शिक्षाक संस्कारसँ युक्त कोल्हटकर सदृश संवेदनशील लेखकक साहित्यमे एकर प्रतिविम्ब दृष्टिगत हैब स्वाभाविके छल। समय विरोधी सामाजिक रूढ़ि आदिक दंभ-विस्फोट करबाक हेतु कोल्हटकर व्यंग्य एवं विनोदक एतेक प्रभावशाली रूप सँ आश्रय लेलनि अछि जे कखनो-कखनो हुनकर साहित्यक समीक्षक लोकनि केँ कहय पड़लनि जे "आगरकरक सोझ प्रकारक अपेक्षा कोल्हटकरक प्राण लेनिहार व्यंग्ये अधिक प्रहारकारी प्रतीत होइत अछि।"

"जीवनगत व्यवहार सभमे विभिन्न प्रकारक असंगति सभक पता लगा क' ओकरा अभिव्यक्ति प्रदान कयनिहार सामर्थ्य" श्री वा. ल. कुलकर्णीक शब्दमे कोल्हटकरक विनोद प्रवण प्रतिभाक एक लक्षण थीक। सामाजिक रूढ़ि सभमे जे हास्यास्पद असंगति सभ अछि ओकरा कौशल पूर्वक चुनि क' सुधारवादी कोल्हटकर अत्यन्त मार्मिक ढंगसँ लोक सभक सोझाँ प्रस्तुत कयलनि अछि। हुनका एहि बातक दुःख छलनि जे "रूढ़ि हमर आचार-विचारक नियामक बनि बैसल अछि।" औ लिखैत छथि—"वास्तवमे हमरा प्रत्येक कार्यक सम्बन्ध ज्ञान, साधना, तथा प्रयत्नसँ जोड़बाक चाही। परन्तु एकरा बदला ओकर सम्बन्ध हम भाग्य, पूर्व जन्मक कर्म, अंतरिक्षक ग्रह, जीवयोनिमे उल्लू, बिलाइ, आओर गिरगिटियासँ जोड़ैत छी। मनुष्य द्वारा कयल गेल चेष्टा सबसँ जोड़बाक हो तँ हम छींक, हुचकी आओर नाकक स्वरसँ जोड़ैत छी। जे पंडितम्मन्य लोक अपन दुर्बलताकेँ कबूल करबाक शक्ति नहि रखैत छथि, अपन दुष्प्रवृत्ति सभक सम्बन्धमे दोसराक मनमे झूठ-साँचक धारणा उत्पन्न करैत छथि तथा देशक सुस्थितिकेँ भाग्यक भरोसेँ जोड़ि दैत छथि, एहन लोक समकेँ अपनहि हाथे यथाशक्ति 'मरम्मत' करबाक तथा अनर्थकारक रूढ़ि आदिक भंडाफोड़ करबाक विचारसँ ओ अपना हाथ मे कलम पकड़ने छलाह। भव्य एवं क्षुद्रक मध्य जे विरोध अछि ओकरे ओ अपन विनोदक आधार बनौलनि। ओ अत्यन्त ठीके चिन्हलनि जे "जे व्यक्ति येन-केन-प्रकारेण गलत बात सभकेँ ठीक साधित करबाक चेष्टा करैत अछि, ओकर धृष्टता तथा अपन रूचिक प्रथा सभक समर्थन करबाक हेतु प्रस्तुत प्रमाणक लघुता मध्य एतेक अन्तर होइत अछि जे ओकर हास्यास्पदताक चित्रण करबाक हेतु अधिक श्रम करबाक आवश्यकता नहि रहि जाइछ।" ओ अपन व्याजोक्ति पूर्ण साहित्यमे एहि विरोधाभास पर पर्याप्त प्रकाश देलनि अछि।

ओ एहि विरोधाभासात्मक लेखनक तन्त्रक मनोरंजक प्रयोग 1903 मे लिखल अपन 'शिगमा' नामक निबन्धमे कयलनि अछि। हुनकर युगक किछु लोक एहन विक्षिप्त परम्परावादी छलाह जे सुधारक लोकनिकेँ देखि क' नाक-भौंह सिकोड़ैत

छलाह तथा जनिक मान्यता छलनि जे विमान विद्यासँ ल' कय आधुनिकतम वैज्ञानिक आविष्कार धरिक सब किछु वेद कालमे विद्यमान छल। वस्तुस्थितिमे तथा हुनका लोकनिक द्वारा प्रस्तुत प्रमाणमे जे हास्यास्पद असंगति अछि, ओकरा कोल्हटकर अत्यन्त मार्मिक रूपेँ प्रस्तुत कयलनि। हुनकर साहित्यक मानस-पुत्र 'सुदामा' गाममे एक अहम्मन्य प्रोफेसर साहेबक एक व्याख्यानमाला प्राचीन परम्पराक समर्थनार्थ चलि रहल छल तकर वृत्तान्त दैत ओ कहैन छथि—

"प्रोफेसर साहेब हमरा गाममे व्याख्यान द' कय हमर धारणा सुदृढ़ क' देलनि जे अंग्रेजी सुधारक लोकनिमे नवीनता किछुओ नहि अछि। ओ प्रमाण-सहित 'अग्निमीले पुरोहितं' नामक वेद-मन्त्रसँ सिद्ध क' देलनि जे हमर पूर्वज लोकनिक कालमे रेलगाड़ी विद्यमान छल। एहि प्रकारेँ ओ इहो जनौलनि जे डाक आओर तारक प्रणाली सेहो ओहि दिनमे वर्तमान छल। बीच-बीचमे अपन स्वरकेँ ऊँच करैत वक्ता महोदय इहो जनौलनि जे वेदमे बूट-पतलूनक तथा स्मृति सभमे ऐनाक सेहो वर्णन अछि तथा अगस्त्य ऋषि सोडावाटरक कारखाना खोलने रहथि। ओ ई सेहो सिद्ध कयलनि जे पूर्वकालिक ऋषिगण मद्य-मांसक सेहो सेवन कयल करैत छलाह। ई सुनि क' तँ हमर आनन्दक सीमा नहि रहल। हमरा लोकनि सुधारवादी सभासदक दिस तुच्छतापूर्वक देखय लगलहुँ। एहन उन्मत्त सुधारवादी लोकनिककेँ लगैत छनि जे मद्य आओर मांसक प्रयोग एकदम नवीन अछि। परन्तु हुनका एतवा सेहो ज्ञान नहि जे वशिष्ठ ऋषि जखन खयवाक हेतु बैसैत छलाह तखन पूर्णक पूर्ण बड़द डेकार क' जाइत छलाह तथा इन्द्र तँ शराव क निसामे धुत्त भ' गन्दा नाली मे जा खसैत छलाह। आधुनिक लोक जाहि बात सभकेँ नव बुझैत अछि सब हमर पूर्वजक ऐंठिक अतिरिक्त किछु नहि अछि। जेम्हर देखू इऐह कहैत सुनबामे अबैत छल। अन्त मे जोरदार थपड़ी गड़गड़ायल तथा सभा विसर्जित भेल।"

उपर्युक्त सम्पूर्ण परिच्छेद कोल्हटकरक लेखन तन्त्रक एक सुन्दर उदाहरण थीक। 'व्याजस्तुति' क द्वारा परम्परावादी लोकनिक जे उपहास एतय कयल गेल अछि ओहिसँ हुनका लोकनिक धारणा सभक स्वयंमेव सिद्ध भ' जाइत अछि।

एही प्रकारेँ ओहि समय समाजमे 'दहेज' क जे प्रथा कायम छल, ओकर सेहो ओ 'लग्नसभारंभ' नामक अपन निबन्धमे 'व्याज समर्थन' कयलनि अछि। सुदामा कहैत छथि—"दहेजक प्रति हमर मनकेँ आकृष्ट हैवाक एक आओर कारण छल। एखन हालमे हम महारानी विक्टोरियाक जीवनी पढ़ने छलहुँ। ओहिमे हुनक अलौकिक गुणसभकेँ पढ़िक' हमरा मन पर एतेक प्रभाव पड़ल जे तखनसँ हमरा हुनक आकृत सभकेँ जमा करबाक सौख लागि गेल अछि। काश्तकार क पैइसा अयलाक पश्चात् हम अनेक बेर रानी साहिबाक मुँहक दिस राज-भक्तिसँ

ओत-प्रोत भेल देखैत रहैत छी। रानी-साहिवातँ हमरा छोडि क' चल गेलीह, हुनक रौप्य प्रतिभा समकेँ कम-सँ-कम वियोग ने हो।" अपन द्रव्य लोभ पर सुदामा राज-भक्तिक आवरण चढ़ा दैत छथि, परन्तु मजेदार बात ई अछि जे विनोदक पारदर्शी सूत्रक कारणेँ हुनक आओर वेशी रहस्योद्भेद भ' जाइत अछि।"

कोल्हटकरक विनोद-शैलीक वर्णन करैत आचार्य अत्रे जे बात कहलनि अछि जे "निरर्थक रूढ़ि सभक तथा गम्भीरतापूर्वक ओकर समर्थन कयनिहार दुराग्रही मूर्ख व्यक्ति सभक फोकपन कोना प्रकट कयल जाय एकर एक जबरदस्त तन्त्र (टेकनीक) कोल्हटकर निर्माण क' राखने छथि। ओ एकदम ठीक अछि। एहि मर्म विदारक विरोधाभासात्मक तन्त्रक उद्देश्य मात्र समाजक उपहासे करब नहि छल, प्रत्युत ओकरा विचार करवाक हेतु प्रेरित करब सेहो छल। कदाचित् हुनकर विनोदक मुख्य उद्देश्य सेहो इऐह छलनि। एहि सामाजिक मूर्ति भंजनक पाछाँ हुनकर एक अन्य सूक्ष्म उद्देश्य छलनि निर्व्याज सौन्दर्यक साक्षात्कार। कारण ई हुनकर स्वभावक अंग कछल, अतः सामाजिक जीवनक सौन्दर्य विरहित असंगतिक खटकव हुनका लेल स्वाभाविके छल। एहि मूर्ति भंजनक द्वारा हुनक सौन्दर्य दृष्टि एक सुन्दर, सुसंगत आदर्श समाजक निर्माणक स्वप्न देखने छल। अतः ओ तथा असुन्दरता, संगति तथा असंगतिक मध्य जे पराकाष्ठाक विरोध रहैत अछि, ओकरा विनोद एवं उपहास द्वारा प्रकट करवाक प्रयत्न कयलनि। श्री वा. ल. कुलकर्णी जे ई बात लिखलनि अछि जे "कोल्हटकर जखन अपन कलम उठवैत छलाह तखन अर्थपूर्ण विरुद्ध कल्पना विन्यासात्मक वाक्य समक वर्षा होमय लगि जाइत अछि" हुनकर रहस्य हुनक एही स्वभाव धर्ममे निहित अछि।

धार्मिक एवं सामाजिक दंभ एवं कुप्रथा सभपर ओ वक्रोक्तिपूर्ण प्रहार कयलनि ओकर अनेक मार्मिक उदाहरण हुनकर साहित्य मे छिड़ियाएल पड़ल अछि। 'कुलुप' (ताला) नामक विनोदी लेखमे बाल-विवाह, निरक्षरता, बहुपत्नीत्व आदि प्रथा सभक ओ जे उपहास कयलनि अछि से दर्शनीय अछि। कुंजीकेँ तालाक अर्द्धांगिनी बताक' ओ लिखैत छथि—

"बहुत रास ताला अन्त धरि अविवाहिते रहैत जछि। ई बात सुनि क' हमर धर्माभिमानी आर्यपुत्र चकित भ' कय कहय लागताह—शैशवावस्थामे चर्तुभुज (विवाहित) नहि भ' कय आजन्म ब्रह्मचर्यक पालन करब कतेक मूर्खता पूर्ण बात थीक। सोलहम वर्षमे वैवाहिक जीवन प्रारम्भ क' कय अपन बाल-बच्चा सभक जनगणना करवैत तीसम वर्ष में मनुष्य प्रौढ़त्व केँ प्राप्त क' सकैत अछि। एहि अकाल परिपक्वताक परित्याग क' कय अपन शक्ति स्वतन्त्रता केँ सुरक्षित राखव कतेक पैघ साहस-थीक ? ताला सभमे जँ एक प्रकारक भ्रष्टाचार आवश्यके हो तँ ओ विदेशी ताला सभमे हैवाक चाही। जँ देसी ताला सभमे हो तँ कम-सँ-कम ओ पढ़ल-लिखल तँ हो, हम अपन धर्माभिमानी लोकनिक चतुरताक प्रशंसा करैत

छियनि। कारण ई ब्रह्मचारी ताला सब वास्तव मे साक्षर होइत छथि। हुनका अक्षर कण्ठस्थ होइत छनि तथा जनिका 'अक्षरी-ताला' (लटर्स लॉक्स) कहल जाइत छनि। हमरा अपन दुर्धारक (सुधार विरोधी) बन्धु लोकनिक सन्तोषक हेतु निश्चय पूर्वक ई कहल जा सकैत छनि जे ई धर्म परिवर्त्तनकारी ताला सबक अधार्मिकताक बात एक भाग राखि दी तँ अन्य सब ताला विवाहक मामलामे सर्वथा एहि आर्य भूमिक शोभामे वृद्धि कयनिहारे छथि। अर्थात् प्रत्येक तालाक हेतु एकहि समयमे दुइ कुंजी खरीद करबा कालमे भेटैत अछि। आओर जँ दुनू हेरा जाय तँ हुनका धर्माज्ञा छनि।"

हुनक एहि प्रहार सबसँ परम्परावादी लोकनिकेँ ने खिसियाब आश्चर्यक बात होइत। अपन आत्मचरित्रमे ओ लिखैत छथि—" एहि लेख सभमे हिन्दू-धर्म पर तीव्र कटाक्ष हैबाक कारणेँ धर्माभिमानी लोकनि एहि लेख सभक प्रति अधिकाधिक विरोध दृष्टिगत होमय लागल। मोरमकरक लग अनेक शिकायत आवय लागलनि।

एहन स्थितिमे सेहो कोल्हटकरक परम्परा भंजनक कार्य निर्भय भ' कय चलैत रहलनि। परन्तु जखन ओ 'गणेश चतुर्थी' नामक लेख लिखलनि तखन विरोधक बड़ पैध बिहाड़ि उठि क' ठाढ़ भेल। बहुत रास धर्माभिमानी क्रोधान्ध भ' बाहर भ' गेलाह। एहि लेखक पृष्ठभूमि अत्यन्त मनोरंजक अछि। मई 1903 मे हुनकर चचेरी बहिनक पूनामे विवाह भेलनि। सुधारवादी प्रकारक विवाह पूनामे अनेक वर्षसँ नहि भेल छल, अतः धर्माभिमानी लोकनि ओहिमे विघ्न उपस्थित करबाक निश्चय कयलनि। वैवाहिक अक्षत विधिक हेतु वर-वधूकेँ गणपतिक मन्दिरमे अबितहि ओ सभ मन्दिरक बाहरी फाटक बन्द क' देलनि। एहिसँ क्रुद्ध भ' कय कोल्हटकर स्वयं विघ्नहर्तहि (गणपतिए) केँ अपन उपहासक केन्द्र बनौलनि। देवता लोकनिक उत्पत्तिक पौराणिक कथाकेँ हास्यास्पद बनबैत ओ लिखैत छथि—"पार्वती पुछलथिन—" महाराज द्वारिपर हमर कृतक पुत्रक रहितहुँ अहाँ कौना आबि गेलहुँ?" शंकरक सम्पूर्ण कहानी सुनलः पर पार्वती आक्रोश करय लागलीह। शंकर हुनका बहुत बुझौलथिन जे देखू "हाफी ल' कय, जटा सभकेँ फटकारि क' अथवा कान झटकि क' जतेक चाही ओतेक पुत्र हम अहाँक हेतु जन्मा सकैत छी", परन्तु पार्वती जी केँ एकदम सन्तोष नहि भेलनि। "देवता लोकनिक उपहास करैत जखन ओ कहैत छथि जे" तमाशा सभक आर्य कन्या लोकनिकेँ जखन विष्णुक मोहिनी रूपक स्मरण भ' अबैत छनि, तखन ओहिमे मटकी मारब तथा अधिक पैइसा उत्पन्न करबाक भावना जागि जाइत छनि···गणपति पर हमर प्रीति बाँकीक बत्तीस करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे देवता लोकनिक अपेक्षा अधिक हैबाक कारणेँ हुनक शरीर कुरूपतापूर्ण भ' गेल छनि।" तखन एहि वाक्यमे श्री तेन्दुलकर केँ 'विनोद अपेक्षा हिंस्रवृत्ति एवं

कटुता' अधिक प्रतीत होइत छनि। परन्तु ई कहय नहि पड़त जे कोल्हटकर जाहि रूढ़ि सभ पर ई प्रहार करैत छलाह ओहि रूढ़ि सभक हिंस्रता किछुओ नहि अछि। सामाजिक कुप्रथा सभ पर प्रहार करबा काल हुनकर लेख सभमे कखनो-कखनो विनोद एवं हिंस्रताक जे सम्मिश्रण दृष्टिगत होइत अछि, कदाचित् ओकरे ध्यानमे राखि क' सुप्रसिद्ध तत्त्वज्ञानी नित्शेक संज्ञाक उपयोग क' कय श्री न. चि. केलकर हुनका 'हँसौनिहार सिंह' कहलनि अछि।

कोल्हटकर कहल करैत छलाह जे 'आस्तिक भावना हिन्दू' धर्मक लक्षण नहि भ' सकैछ। बाह्य वा आन्तरिक चमत्कार जखन चर्मचक्षु सभ वा मनुश्चक्षु सभक सोझाँसँ जाइत अछि तखन ईश्वरी शक्ति अनायासे चिन्तन होइत अछि, ओकरा छोड़ि क'अन्य कोनो प्रकारक चिन्तनक कहियो सेहो आवश्यकता नहि प्रतीत भेल।" एहन बुद्धिवादी व्यक्ति पुनर्जन्म-सदृश कल्पना आदिकेँ अपन स्वार्थ सिद्धिक काजमे अयनिहार व्यक्ति सभक उपहास करथि, ई स्वाभाविके छल। एक ढोंगी बाबाक प्रसंगमे ओ लिखलनि अछि—" बाबा जी अपन पछिला जन्म सभक बात सब बताओल करैत छलाह। ओ अत्यन्त अजीब होइत छल तथा ओहिसँ एहि बातक संगति बैसि जाइत छल जे एहि जन्ममे हुनका एतेक पैघ पद कोना प्राप्त भेलनि। रामावतारक युगमे ओ वशिष्ठ ऋषि छलाह आओर ओ ऋग्वेदक अनेक सूक्त सभक रचना कयने छलाह। बहुत वर्ष बीत जयबाक कारणेँ हुनका एहि जन्ममे ओ सूक्त वा ओकर अर्थ स्मरण नहि रहलनि ई बात दोसर थीक···ओना बाबाजी पूर्ण वैरागी छलाह, परन्तु स्वभावतः अन्तःकरणसँ अत्यन्त करुणामय हैबाक कारणेँ ओ अपन पूर्वजन्मक पत्नीकेँ नहि बिसरि पौने रहथि। जखन क्यो लावण्य-मयी हुनकर चरण स्पर्श करबाक हेतु अबैत छलीह तखन हुनका एहि बातक अन्त-र्ज्ञान भ' जाइत छलनि जे ओ हुनक पूर्वजन्मक पत्नी छलथिन आओर ओ ओकरा दिस सेहो ओही भावनासँ देखय लागि जाइत छलाह। ओहि स्त्रीकेँ एहि जन्ममे परस्त्री भेलो पर सेहो हुनका दिस ओ अनात्मीयतासँ नहि देखैत छलाह। दुइ दस्तावेज सभमे पहिने दर्ज कराओल गेल दस्तावेजकेँ प्राथमिकता देल जाइत अछि जे कानूनक ई सिद्धान्त सेहो कदाचित हुनका नीक जकाँ ज्ञात छलनि। एक बहादुर एहन बहरायलाह जे अपन पत्नीक संग हुनक पूर्वजन्मक सम्बन्धक बात बाबाजीक मुँहसँ सुनितहि पैर पोछबाक एक कपड़ाकेँ ई कहि क' बाबाजीक माथ पर द' मारलथिन जे 'ई पूर्वजन्ममे अहाँक पगड़ी छल।'

एहि प्रकारेँ अपन विनोदक प्रहारसँ ओ अनेक युगसँ घोर निद्रामे मग्न समाजकेँ जागृतिमे अनबाक प्रयास कयलनि। हुनकर गुरुवत् पूज्य न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे एक ठंडा वर्फक सदृश जमल महाराष्ट्रमे नवीन चेतनाक संचार कयने छलाह। कोल्हटकर हुनके कार्यकेँ आगाँ बढ़ौलनि तथा अपन वैचारिक वाङ्मयक द्वारा महाराष्ट्रकेँ सामाजिक सुधारक क्षेत्रमे अग्रसर कयलनि। परन्तु

ई वात ध्यान देवा योग्य थीक जे हुनकर साहित्य-मात्र प्रचारात्मक नहि छल, ओहिमे कलात्मकता सेहो कूटि-कूटिक' भरल गेल छल।

एकर अतिरिक्त ओ 'श्रावणी', 'चित्रगुप्ताचा जमाखर्च', 'मरणोत्तर', 'यशः सिद्धीचे सोपे व अचूक मार्ग', 'पांडुतात्यांची निर्जली एकादशी', 'साधुसन्त', 'धर्मान्तर' इत्यादि विविध लेख सभक द्वारा सामाजिक तथा धार्मिक कुप्रथा सभ-पर तीव्र आघात कयलनि। चातुर्वर्ण्य एवं जाति-भेद समाजक प्रकृति ने भ' कय विकृति थीक, ई ओ निर्भय भ' कय कहलनि। ओ ई जानि लेने छलाह जे 'विधि-निषेधात्मक नियम' सभसँ मनुष्य एतेक जकड़ल जाइत अछि जे ओकर पुरुषार्थक हेतु कोनो गुंजाइशए नहि रहि जाइछ। "आओर एहि लेल ओ विनोदक प्रहारसँ रूढ़ि सभक शृंखलाकेँ अधलाह जकाँ तोड़िक' राखि देलनि। एहि प्रहारक तीव्रताक सम्बन्धमे आचार्य अत्रे लिखने छथि—" तिलक, परांजये आदिक राजनैतिक लेख सभमे जतवे निडरता आओर आगि छल ओतवे कोल्हटकरक सामाजिक उप-हासमे छल। शिगमा (फगुआ), गणेशचतुर्थी 'श्रावणी अथवा धर्मान्तर आदिकेँ ओ जाहि प्रकारेँ धज्जी-धज्जी उड़ा क' राखि देलनि, ओहि प्रकारेँ ओ विदेशी शासक लोकनिक कोनो अन्याय वा अत्याचारक सेहो 'खबर' लितथि तँ हुनका कम-सँ-कम पाँच छओ वर्षक हेतु जेलखानाक वसात खायब पड़ि जयतनि।"

कोल्हटकर सुदामा, वंडूनाना तथा पांडुतात्या नामक तीन पात्र तैयार कयलनि तथा हुनकर आचार विचारगत विरोधक चित्रण करितहुँ ओ परम्परावादी लोक-निक दांभिकताक पर्दाफाश कयलनि अछि। कोल्हटकर अपना आपकेँ सुदामाक रूपमे प्रस्तुत कयलनि अछि। 'माझे टीकाकार' (हमर आलोचक) नामक एक निबन्धमे कोल्हटकर लिखैत छथि—"हमर पुरानपंथी पाठक कतहु अपन गारि-फइज्जतिक केन्द्र हमरे ने बना बैसथि एहि विचारसँ हम 'सुदामा' नामक अपन एक मानस पुत्रक निर्माण कयलहुँ तथा अपन मतकेँ समर्थन करबाक हेतु ई पुरातन-पंथी जाहि बालोचित एवं हास्यास्पद प्रमाण सभक एवं तर्क सभक आश्रय लैत छथि ओहि सबकेँ हुनका मुँह सँ बाहर करबौलहुँ।" श्री वा. ल. कुलकर्णी लिखैत छथि—"कोल्हटकर सुदामाक अन्तर्गत चातुर्य एवं मूर्खता, विनोद एवं विवेक-हीनताक मनोरंजक समन्वय साधलनि अछि।" ओहि समयमे लोकमे एहि बातकेँ ल' कय अत्यन्त कौतूहल छल जे वडूंनाना तथा पांडुतात्या नामक पात्र काल्प-निक छथि वा वास्तविक। तेल्हारा कोर्टमे काज कयनिहार वंडूनाना तथा तात्याबा चान्देकरकेँ देखि क' हुनका एहि जोड़ीक बात सुझलनि। पांडुतात्या अत्यधिक सुतनिहार तथा खाधुर व्यक्ति छलाह। ई स्वभाव ओ अपन मित्र वासुदेव पिपली-करसँ पौने छलाह। कोल्हटकर अपन आत्मचरित्रमे लिखैत छथि—" अनेक बेर हम देखैत छी जे कल्पनामे तथा ओकर मूर्त्तस्वरूपमे अकाश-पतालक अन्तर रहैत अछि। आओर इऐह बात एतहु सेहो भेल। एकर अतिरिक्त प्रत्येक लेखक संग

ओहि दुनू पर नवीन-नवीन गुणसभक आरोप सेहो होमय लागल।" ई तीनू कट्टर धार्मिक रहथि। हुनकर सभक आचार-विचारमे विनोद मिश्रित अतिशयोक्ति अछि ओकरा जँ छोड़ि देल जाय तँ स्पष्टे ई पात्र ओहिकालक अंध श्रद्धालु धार्मिक लोकनिक प्रतिनिधित्व करैत अछि। एहि पात्रक सम्बन्धमे न. चि. केलकर लेखैत छथि—" हुनकर लीला सभक वर्णनक विस्तारक कारणेँ किछु अतिशयोक्ति पूर्ण दृष्टिगत होइत अछि, तइयो हुनक विचार, हुनक त्रुटि सभक तथा हुनका हाथे भेनिहार अनुचित काज आदि सब बात व्यावहारिकताक मर्मकेँ छूबनिहार अछि, अतः ई विनोद अत्यन्त सजीव भ' उठल अछि।" ई तीनू पात्र मराठी-साहित्यमे अत्यधिक लोकप्रिय भ' गेल छथि।कोल्हटकरक विनोद विदूषकक विनोद ने भ' कय विचारवान् व्यक्तिक विनोद थीक। अतः एहि त्रिकूटक लीला सभक मराठी पाठक केँ भरि-पेट हँसौलक अछि संगहि ओकरा अन्तर्मुखी भ' कय विचार करवाक दिस सेहो प्रवृत्त कयलक अछि। मराठी-साहित्यमे विनोदी लेखनक जे परम्परा कोल्हटकरक समयमे प्रारम्भ भेल, ओहिपर एहि तीनू पात्रक छाया हैव स्वाभाविके छल। डॉ. अ. ना. देशपांडे लिखैत छथि—" आधुनिक मराठीमे विनोदक मुख्य प्रवर्त्तक श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर कोनो विशिष्ट प्रवृत्ति सभक प्रतिनिधित्व कयनिहार किछु एक काल्पनिक व्यक्ति लोकनिक आचरणकेँ अपन उपहासक विषय बनौलनि जकरा माध्यमे विनोदक निर्माण कयलनि। ई सम्भव अछि जे हुनकर पश्चात्क विनोदी वाङ्मयमे जे कथात्मकता एवं व्यक्ति-चित्रणात्मकताक प्रथा-चलि पड़ल ओकर कारणेँ कोल्हटकरक इऐह शैली हो।" कोल्हटकरक पश्चात् विनोदी साहित्यक इतिहासक अनुशीलन कयलासँ श्री देशपांडेक उपरोक्त कथन यथार्थ सिद्ध होइत अछि।"

प्राचीन रूढ़ि-सभकेँ तँ श्री कोल्हटकर अपन विनोदक लक्ष्य बनयबे कयलनि, अंग्रेजी शासनक संग-संग आयल समाचार पत्र, सिनेमा, ऑब्जर्वेटरी एग्जीबीशन संसभाम्मेलन आदि नव वस्तु सभकेँ सेहो ओ अपन विनोदक लक्ष्य बनौलनि। परन्तु एहि विनोदक स्वरूप एवं तन्त्र सर्वथा भिन्न छल। ई विनोद सर्वथा विशुद्ध स्वरूपक विनोद अछि। तीक्ष्ण व्यंग्य एवं वक्रोक्ति सभसँ प्राचीन रूढ़ि पर टूटि पड़निहार कोल्हटकर एतय आबि क' अत्यन्त सौम्य एवं आह्लादायक विनोदी बनि गेलाह अछि। एतय हुनक उद्देश्यक समाज-सुधार नहि रहि क' एक मात्र विनोदक सृष्टि रहि गेल अछि। 'भविष्य कथनाची सावने' नामक लेखमे ऑब्जर्वेटरीक जे टीका कोल्हटकर कयलनि अछि, ओ विशुद्ध विनोदक उत्तम उदाहरण थीक। ओ लिखैत छथि—

"ऑब्जर्वेटरीक सम्पूर्ण भवन किऐक तँ वायुमंडल पर स्थिरभ' गेल अछि अतः अनेक वेर वायुक झोंकक संग ओ जँ सत्यसँ कोसो दूर चल जाय तँ आश्चर्यक कोनो बात नहि। जखन ऑब्जर्वेटरी अनावृष्टिक पूर्व सूचना दैत अछि तँ बुझि जयबाक

चाही जे सम्पूर्ण सृष्टि अतिवृष्टिक कारणें जलमय होमय जा रहल अछि। आओर जँ ओ वर्षाक पूर्व सूचना दिअ तँ बुझि जयबाक चाही जे सम्पूर्ण संसार ओहिना सुखल रहत जहिना वायुशास्त्रवेत्ताक मस्तिष्क। जखन ऑब्जर्वेटरी यन्त्र सभमे विहाड़िक सूचना अबैत अछि तखन वायु अत्यन्त शान्त भ' कय ओकर अप्रयोजनीयताक प्रसगमे विचार करय लगैत अछि। परन्तु जँ ऑब्जर्वेटरी शान्त वातावरणक उत्कण्ठा पूर्वक प्रतीक्षा करय लागय तँ अंदर चारु भाग ईर्षालु प्रेमीक समान मँडराय लगैत अछि। एहि प्रकारें ई ऑब्जर्वेटरी सृष्टिक संग चोरिया-नुकिया खेल खेलायल करैत अछि तथा जाहि प्रकारें राति आओर दिन कहियो परस्पर भेंट नहि क' पबैछ ओही प्रकारें ऑब्जर्वेटरी आओर सत्यक वर्षक वर्ष धरि परस्पर भेंट नहि होइछ।

रेलगाड़ीक वर्णन करबाकाल "गाड़ीक प्रत्येक डिब्बामे अत्यधिक भीड़ छल आओर एहन लगैत छल जे सब डिब्बा एहि प्रकारें खचाखच भरल रहैत अछि, जाहि प्रकारें कोनो प्रेसमे कम्पोजीटरक अक्षर सभ वाला खाना टाइपसँ भरल रहैत अछि। प्रत्येक यात्रीक भारी आओर मन्द श्वासोच्छवासक स्थितिकें देखिक' एहन लगैत छल मानू ओ वम्बईक यात्री नहि भ' कय परलोकक यात्री होथि।" हुनकर ओहि समयक इ वर्णन आइयो अनुभव कयल जा सकैत अछि। 'वर्तमान-पत्र-कर्त्ता' नामक निबन्धमे समाचारपत्र तथा पत्रकारक अत्यन्त रोचक एव मार्मिक हँसी उड़ौलनि अछि। ओ तँ पढ़ितहि बनैत अछि। समाचार पत्रक कालम भरबाक हेतु युद्ध तथा रक्तपातक केहन उपयोग होइत अछि आओर ओ नहि हो तँ पत्रकार कतेक मनहूस भ' जाइत अछि, ई बतबैत ओ लिखैत छथि—

"ईश्वर साम्राज्यवादी लोकमे जे बीज वपन क' देलनि अछि, ओ हम पत्रकारकें बड़ वेशी काज अबैत अछि। मात्र 'बोअर युद्ध' हमर समाचारपत्रक हेतु लगातार तीन वर्ष धरि काज दैत रहल। ओम्हर अफ्रिकामे वन्दूक सभक गोली सभ चलैछ आओर एम्हर हमर लेख सभक गोलाबारी प्रारम्भ भ' जाइछ। ओम्हर रक्तपात होइछ तँ एम्हर हमर स्याही खर्च होइछ। ओम्हर सेहो छापा पड़ैछ आओर एम्हर छापाखानामे छापा पड़ैछ। जहिना ओम्हर सैनिक लोकनि अपन किला सभक आओर पुरद्वारि सभमे पड़ल दड़ारिकें पीटैछ ओहिना हम सेहो कलम सभक रिक्तताकें पाटय लगलहुँ। अन्त जखन युद्ध-विराम होयबाक वार्तालाप होमय लगैछ तखन हमर उत्साह पर पानि पड़य लगैछ। तीन वर्ष धरि लगातार चेंवरलेनकें 'खबर' लैत रहलाक पश्चात् आब फेरसँ सुधारक लोकनिक खबर लेब वेस्वाद होमय लागल। परन्तु ईश्वर हमरा पर अत्यन्त दयालु छलाह। दक्षिणी अफ्रिकामे दुश्मन सभक आगि एखन धरि नीक जकाँ नहि बुझायल छलनि कि उत्तरी अफ्रिकामे सनकल छौंड़ा सभ हो हल्ला करव प्रारम्भ क' देलक। किछुए दिनक

पश्चात् तँ रूस आओर जापानमे सेहो लड़ाई प्रारम्भ भ'गेल। तखन कतहुसँ हमर जानमे जान आयल।

किछु समाचारपत्र सभक सम्पादक लोकनि चहटगर समाचार पढ़वाक प्रयास कयल करैत छलाह। सुदामा सेहो अपन समाचार पत्रमे झूट साँचक सनसनी खेजक समाचार छापैत छथि—

"अमेरीकाक क्युमेलो नामक गाँवमे एक स्त्रीकेँ एक तीन मुँह वाला बच्चा भेल अछि। ओकर सम्पूर्ण शरीर पर केश अछि तथा माथक ठीक मध्य भागमे एक नाङरि अछि। बच्चा, एक घण्टा धरि जीवित रहल। रावणक अस्तित्वक सम्बन्धमे सन्देह कयनिहार सुधारक लोकनिक मुँह एहि तीन मुँहा प्राणी सदिखनक हेतु बन्द क' देलक।

लंबेडो नामक स्थानमे भारी भूकम्प आयल, जकर फलस्वरूप ओतय जमीनमे एक अत्यन्त गहीर दरारि पड़ि गेल। ओहिमे सँ झाँकि क'नीचाँ देखलासँ शेषनागक मस्तक देखबामे अबैत छल। शेषनागक माथ परक मणि सभसँ सम्पूर्ण दरारि जगमगा रहल छल। एहन स्थितिमे हमर पुराण सभकेँ आब के असत्य कहि सकैछ?"

एहिमे कोल्हटकर जाइत-जाइत रूढ़िवादी लोकनिकेँ सेहो अपन ताना सभक लपेटमे ल' लेलनि अछि।

समाचारपत्र सभमे जे रामवाण औषधि सभक विज्ञापन छपैत अछि, ओकरा सेहो कोल्हटकर खिल्ली उडौलनि अछि। ओ लिखैत छथि—"हमर समाचारपत्रमे जाहि स्थान पर श्वेत कुष्ठक मलहमक विज्ञापन छपैत अछि, प्रत्येक सप्ताह ओकर सफेदी कम होइत जाइत अछि।" विज्ञापन सभमे औषध सभक गुणसभक जे अतिरंजित प्रशंसा होइत अछि, ओहि पर कोल्हटकर एक प्रबल तानाकशी कयलनि अछि।

एक उत्कृष्ट विनोदी लेखकक अर्थहीन प्राचीन रूढ़ि सभमे जाहि प्रकारेँ विनोदक मसला हाथ लागि जाइत अछि, ओहिना आधुनिक कल्पना सभमे सेहो ओ हाथ लागि जाइत अछि। 'स्वदेशी' तथा 'शराब-बन्दी'क आन्दोलन कोल्हटकरक समयमे पूर्ण जोर पर छल। कोल्हटकर सदृश उर्वर मस्तिष्क विनोदी लेखकक दृष्टि ओहि भाग नहि जाय से सम्भव नहि छल। हुनक 'चोरांच्या सम्मेलनांत' नामक लेखमे स्वदेशाभिमानी शविलकक दुइ प्रस्ताव प्रस्तुत क' कय ओहि आन्दोलन सभक प्रबल समर्थन करैत छथि—

"प्रस्ताव संख्या 7—स्वदेशी आंदोलनकेँ प्रोत्साहन देबाक हेतु ई सभा प्रस्ताव करैत अछि जे प्रत्येक सभासद् एहि बातक ध्यान राखथि जे चोरी करबा काल रस्सी, सीढ़ी, रेती, कुलहड़ आदि जे कोनो वस्तु उपयोगमे आनल जाय ओ सब स्वदेशीए हो। भविष्य मे जखनहि चोरी कयल जाय तखन अपन देशवासी सभक घर मे

चोरी कयल जाय, विदेशी सभक घर मे नहि । तथा चोरी सेहो स्वदेशी वस्तु सभक कयल जाय, विदेशी वस्तु सभक नहि ।

प्रस्ताव संख्या 8—'शराब पीवि क' चोरी कयलासँ बहुत बेर सफलता नहि भेटैछ । अतः ई सभा मद्य-पानक निषेध करैत अछि ।"

कोल्हटकरक सर्वतोमुखी विनोद-प्रतिभाक क्षेत्र अत्यन्त व्यापक छल । नव-पुरान सब बात सभकेँ ओ अनायासहि अपन विनोदक विषय बनौलनि अछि । एहि व्यापकताक कारणेँ हुनकर कतिपय विनोदी लेख एखनो टटका लगैत अछि ।

कोल्हटकर विनोद निर्माणक हेतु जतय व्यंग्योक्ति एवं वक्रोक्तिक प्रयोग कयलनि अछि, ओतय ओ अतिशयोक्तिक सेहो कुशलतासँ उपयोग कयलनि अछि । किछु समीक्षक कहैत छथि जे अतिशयोक्ति हुनक विनोदक प्राण थीक । अति-शयोक्तिकेँ विनोदसँ अत्यन्त निकट सम्बन्ध थीक । अत्युक्तिसँ विनोदक स्वाद बढ़ि जाइत अछि । 'अतिशयोक्ति विनोद सिद्धिक हेतु सबसँ पैघ साधन थीक ।' आचार्य अत्रेक एहि कथनमे कतहु अतिशयोक्ति नहि अछि । परन्तु ओकरा हेतु उर्वर मस्तिष्कक प्रतिभाक अत्यधिक आवश्यकता अछि । कोल्हटकरक अत्युक्ति रंजक कल्पना सभक कारणेँ अत्यधिक आस्वाद्य भ' गेल अछि । "पाँडुतात्याक मोछ अत्यधिक वेगसँ बढ़ैत छलनि । ओकरा सम्बन्ध मे हुनकर अत्युक्तिगत कल्पनाक चमत्कार तँ देखू—"पांडुतात्याक मोछ एहि वेगसँ बढ़ैत छल जे जँ हुनका 'शकुन्तला' नाटकक पहिल अंकमे नटीक काज देल जाइत तँ कृत्रिक दाढ़ी मोछ लगयबाक मेहनति कयनहि बिना दोसर अंकमे हुनकासँ दुष्यन्तक, चारिम अंकमे कण्व तथा सातम अंकमे सिंह आओर मारीचक काज अत्यन्त सुगमतासँ लेल जा सकैत छल ।" 'चोराच्या सम्मेलनांत' नामक निबन्धमे शर्विलक-सम्मेलनक अध्यक्ष 'सराट्या मिल्ल' क गौरवार्थ भाषण करैत स्वागताध्यक्ष महोदय कहैत छथि—'अध्यक्ष महोदयक गुण सभक वर्णन जँ करय लागी तँ हुनका हेतु एतेक कागज आओर स्याहीक प्रयोजन हैत जे ओकरा जुटैबाक हेतु हमरा जीवन भरि एही दुइ वस्तु सभक चोरी करय पड़त ।" 'बैठे खेल' नामक निबन्ध मे कोल्हटकर शतरंजक शौखीन सुदामा, बंडुनाना तथा पांडुतात्याक तल्लीनता अत्यन्त अत्युक्तिपूर्ण एवं मनोरंजक वर्णन कयलनि अछि । सुदामा कहैत छथि—

"खेलमे एक बेर रमि जाइ तँ लग-पासक सम्पूर्ण संसार हमरा हेतु खत्म भ' जाइत अछि । हमरा स्मरण अबैत अछि जे एक बेर खेलक समयमे कुटल सुपारीकेँ नोसि बुझि क' नाममे सुड़कि गेलहुँ आओर नोसिकेँ सुपारी बुझि मुँहमे द' देलहुँ । दोसर बेर तँ हम बीड़ी बुझि क' एक ऊँटहिकेँ मुँहमे पकड़िक' जराबय लगलहुँ । पांडुतात्या एक बेर सम्पूर्ण हाथीकेँ सुपारी बुझिक' मुँहमे ध' लेलनि आओर जखन देखलनि जे ओ दाँतसँ नहि कटि रहल अछि तखन ओ एक दोसर हाथी सरौतासँ काटि क' गलासँ नीचा उतारि लेलनि । हँ, एतय ई बात स्पष्ट क' दी जे आगाँ जा

क' अत्यन्त शीघ्र एहि गजानन महाराजकेँ हस्तिरोग (फील पाँव) भ' गेलनि। परन्तु एहि सबसँ मजेदार बात बंडुनानाक हाथसँ भेलनि। ओ पानि पीबाक हेतु एक ग्लिास पानि अपना लग राखने रहथि आओर एक जरूरी चिट्ठी लिखबाक हेतु ओ एक दवात सेहो राखि नेने रहथि। परन्तु खेलमे एतेक मस्त भ' गेल रहथि जे सम्पूर्ण चिट्ठी तँ पानिसँ लिख देलनि आओर जल्दीमे ओकरा लिफाफमे बन्द क' पठबा देलनि। आओर तकर बाद ओ दवातकेँ मुँहसँ लगौलनि आओर पानि बुझि क' समग्र स्याही गटागट पीबि गेलाह। ओहि स्यायीकेँ पी जयबाक हुनकर शरीर पर ई प्रभाव पड़लनि जे शीघ्रहि हुनकर उज्जर केश कारी भ' गेलनि आओर हुनकर शरीरसँ जे पसेना बहराइछ ओ सेहो स्याहीएक रंगक होइछ।"

कोल्हटकरक कल्पनारम्य अत्युक्तिकेँ देखिक' न. चि. केलकर ई कहने छलाह जे "विनोदक आधार ल' कय अत्यन्त कुशलतापूर्वक कल्पना-तरंग सभक सृजन करबामे हुनका सदृश समर्थ मराठी लेखक आई धरि नहि जन्म लेलक।" कोल्हट-करक विनोदक सफल अनुकरण क' कय लगभग हुनके सदृशहि विनोद-सृष्टि निर्माण करबाक श्रेय रामगणेश गडकरीकेँ प्राप्त छनि। परन्तु गडकरीक विनोदक किछु सीमा सभ सेहो अछि जाहि पर आचार्य अत्रे ठीक ढंगसँ प्रकाश देलनि अछि। "कोल्हटकरक मार्मिक विनोदक परिधि तथा विविधता धरि गडकरी अपन विनोद नहि पहुँचा सकलाह। एकर कारण ई छल जे कोल्हटकर सामाजिक तत्त्व-ज्ञानक अत्यन्त गम्भीर अध्ययन कयने छलाह। जकर फलस्वरूप प्रगतिशील विचार सभक आश्रय ल' कय ओ सामाजिक दोष सभक ठीक विश्लेषण क' सकलाह।" कोल्हट-करक गम्भीर सामाजिक-चिन्तन हुनक विनोदी साहित्यक एक उद्‌बोधक विशेषता थीक। न. चि. केल करक कथनानुसारेँ "समाजमे किछु लोक मात्र विद्वान् होइत छथि, तँ किछु लोक मात्र विनोदी। परन्तु एहन लोक गनले-गुथल होइत छथि। जे विद्वान् सेहो होथि आओर विनोदी सेहो होथि।" कोल्हटकरक गणना एहने गुनल-गुथल लोक सबमे कयल जायत। हँ, विद्वताक कारणेँ हुनक विनोदमे कतहु-कतहु बलिष्टता सेहो आबि जाइत अछि। तथापि एहन स्थल अधिक नहि अछि।

सन् 1902 सँ ल' कय 1922 धरि अर्थात् दुइ दशाब्दी धरि-विविध ज्ञान विस्तार', 'मनोरंजन', 'सुधारक', 'करणमूक', 'उद्‌यान', 'चित्रमय जगत', 'नव-युग', 'अरविन्द' इत्यादि ओहि समयक प्रमुख मासिक पत्र सभमे ओ पर्याप्त विनोदी लेख लिखलनि। कोल्हटकर वाल्टेयर, स्टर्न, फील्डिग, स्मालेट, मौलियर, रैबेल, पास्कल, सर्वेंटीज, मार्कट्वेन इत्यादि पाश्चात्य विनोदी लेखक लोकनिक साहित्यक गम्भीर अध्ययन कयने छलाह। परन्तु ओहि साहित्यकेँ आत्मसात् क' कय ओ पृथक्सँ अपन एक प्रभावशाली विनोदक तन्त्र (टेकनीक) तैयार क' लेने छलाह। हुनकर विनोदी साहित्य भनहि पाश्चात्य साहित्यसँ प्रभावित रहल हो तथापि कथ्यक मामला मे ओ सर्वथा मौलिक छथि। विनोदी लेख लिखबाक प्रेरणा

हुनका पाश्चात्य साहित्यसँ प्राप्त भेलनि, परन्तु ओ ओकर कल्पना सभक अनुकरण वा अनुवाद नहि कयलनि। अतएव आचार्य अत्रे एक स्थान पर लिखलनि अछि जे "शैली अथवा ढंगक अनुकरणकेँ छोड़ि क' ओहि पाश्चात्य विनोदी लेखक लोकनि सँ ओ अन्य किछुओ नहि लेलनि। कोल्हटकरक विनोद-विषयक प्रतिभा पूर्णतया मौलिक छलनि" ज० ल. कुलकर्णी तँ एक डेग आओर आगाँ जा क' कहैत छथि—"कोल्हटकर जे निबन्ध हम पढ़ल अछि, ओ शतप्रतिशत मौलिक थीक। ओकर रूप, ओकर आकृति, ओकर अन्तरंग—सब किछु हुनकर अपन आविष्कार छनि।" कोल्हटकरक प्रतिभा स्वयं प्रकाशित छनि। अपन आत्म-चरित्रमे ओ लिखने छथि —"दोसरा द्वारा ऐंठ कयल कल्पना सभसँ हमरा अत्यधिक घृणा अछि। हम आइ धरि जे किछु लिखल अछि, ओ ने कोनोक भाषान्तर थीक ने रूपान्तर।" हुनक ई कथन हुनकर विनोदी साहित्यक सम्बन्मे एकदम ठीक अछि।

कोल्हटकरक पहिल अठारह लेख सभक संकलन 'सुदाम्याचे पोहे अर्थात् अठरा धान्याचें कडबोल क, नामसँ सन् 1910 मे प्रकाशित भेल। ओकर पश्चात् 1923 मे हुनकर बत्तीस लेख सभक संकलन 'सुदाम्याचे पोहे अर्थात् साहित्य बतीसी'क नामसँ प्रकाशित भेल। एहि पुस्तकक अनेक संस्करण छपल। सूक्ष्म समाज-निरीक्षण एवं मार्मिक विनोद-बुद्धिक मनोज्ञ संगम रूपमे ई लेख की छल, महाराष्ट्र शारदाक कण्ठमे अर्पित एक अत्यन्त तेजस्वी रत्नहार सदृश छल।

एहि सब लेख सभमे कोल्हटकरक वार्त्तालाप प्रेमी मानस-पुत्र 'सुदामा अपना दिससँ 'हम क' रूपमे समग्र बात करैत छथि। शैलीक दृष्टिसँ ओ ललित निबन्ध एवं कहानीक सीमा स्पर्श करैत छथि। प्रारम्भिक किछु लेख ललित निबन्ध सभक रूपमे थीक। ओकर पश्चात् शनैः-शनैः सुदामा अपन कल्पना-जगतक विस्तार करब प्रारम्भ क' देलनि आओर तत्फलस्वरूप ओहि लेख सभकेँ कथानक प्राप्त होइत चल गेल। अन्तिम लेख 'धर्मान्तर' तँ एक कहानीए थीक। एहि लेख सभक आन्तरिक संरचना सेहो एक विशेष शैली थीक। अत्यन्त गम्भीर आकृति बना क' ओ निबन्धक आरम्भ करैत छथि। शनैः-शनैः ओहिमे विनोदक छटा उभरय लगैत अछि। गम्भीरता विलीन होइत जाइत अछि। वक्रोक्ति, व्यंग्योक्ति, उपहासोक्ति एवं अत्युक्ति सभक वर्षा होभय लगैत अछि। परन्तु मजा ई अछि जे गम्भीरताक आवरण पूर्ण रूपेँ दूर नहि भ' पोबैछ। बनाबटी गम्भीरताक बुर्का पहिनाएक' ओ सामाजिक पाखण्डक भण्डाफोड़ कयलनि अछि।

वाग्वैचित्र्यक ओ बड़ शौखीन रहथि। अतः दुरान्वय, कृत्रिमता, कल्पना सभक खींचातानी, वालोचितता, अतिशयोक्तिक अतिशयोक्ति आदि हुनक लेख सभक किछु दोष सभक दिस अ० ना० देशपांडे आङुर निर्देश कयलनि अछि। परन्तु हमरा एतय ई नहि बिसरबाक चाही जे कोल्हटकर मराठी साहित्य मे एक एहन नवीन विधाक जन्म द' रहल छलाह जे हुनकासँ पहिने मराठीक अस्तित्व

मे नहि छल। तथापि आइ सेहो हमरा मराठी साहित्यमे एहन विनोदी लेखकके खोजबाक हेतु यथेष्ट प्रयास करय पड़ैत अछि, जे हुनक बराबरी क' सकथि। एहिसँ अनायासहि हुनकर एहि साहित्यिक विधाक सफलताक कल्पना कयल जा सकैत अछि। कोल्हटकरक एहि बहुमुखी विनोद-साहित्यक एक अन्य विशेषता ई अछि जे एहिमे वैयक्तिक निन्दा वा आक्षेपक नाम सेहो नहि अछि। सामाजिक प्रगतिक मार्गमे बाधा उत्पन्न कयनिहार आचार-विचार, कल्पना सभक तथा संस्था सभक ओ पर्याप्त हँसी उड़ौलनि अछि। परन्तु हुनक ध्येय सामाजिक जागृति रहलनि। विशुद्ध विनोद तथा सामाजिक व्यंग्य एहि दुनू दृष्टिसँ हुनकर साहित्य अत्यन्त समृद्ध अछि। इऐह कारण अछि जे कोल्हटकरक विनोद आइ सेहो मराठी साहित्यक सिरमौर बनल अछि।

3

नाटककार लोकनिक नाटककार

श्रीपाद कृष्ण अपन पहिल कल्पनारम्य मौलिक नाटक 'वीरतनय' सन् 1893 मे लिखलनि। ओहि समयक मराठी नाट्य व्यवसायमे अग्रगण्य सुप्रसिद्ध किर्लोस्कर नाटक मण्डली एहि नाटककेँ मई 1896 मे अहमदनगरमे अभिनीत कयलक। एहि नव नाटकक द्वारा मराठी-रंगमंच पर जे परिवर्त्तन उपस्थित कयल गेल ओकर ध्वनि लगभग एक चौथाई सदी धरि मराठी-नाट्य-जगत्मे प्रतिध्वनित होइत रहल। पू. रा. लेलेक कथानानुसार ई 'वीरतनय' नाटक मराठी रंगमंच पर एक बिहाड़िक वर्षा क' देलक। परन्तु जहिना बिहाड़ि अबैत अछि आओर थोड़बहि कालमे किछुए चिह्न पाछाँ छोड़िक' विलीन भ' जाइत अछि, ओहिना कोल्हट-करक नाटक सभ मराठी-रंगमंचकेँ अपन संस्कार-सामर्थ्यसँ प्रभावित कयलक तथा ओकरा एक नव मोड़ द' कय ओ स्वयं अस्तंगत भ' गेल।

'वीरतनय' रंगमंच पर जखन आयल, ओहि समय मराठी नाट्य-कलाकेँ जन्मला आधा शताब्दीसँ किछुए अधिक समय भेल हैत। विष्णुदास भावे 'सांगली' मे सन् 1843 में 'सीतास्वयंवराख्यान' नामक एक पौराणिक आख्यान-नाटक प्रस्तुत क' कय मराठी रंगमंचक नेओ राखने छलाह। ओ स्वयं एक स्थान पर कहने छथि जे—"ई राष्ट्रीय मनोरंजन बहुत समयसँ बन्द पड़ल छल, जकर एहि नाटकक द्वारा पुनर्जीवन भेल।" परन्तु विष्णुदासक ई रंगमंच प्राथमिक अवस्थाक किछु उभड़-खाबड़ सदृश छल—जाहिमे अद्भुत भयानकताक तथा विचित्रता सभसँ भरल चटकीलापनक प्रधानता छल। एहि कारणेँ अंग्रेजी शिक्षासँ प्रभावित नव पीढ़ीक रसिक व्यक्ति अधिक उन्नत, प्रगतिशील एवं प्रौढ़ संस्कृत तथा अंग्रेजी रंगमंचक दिस आकृष्ट भेलाह। जखन ओ ओकर सम्यक् अनुशीलन कयलनि तँ हुनका भावे द्वारा प्रस्तुत पौराणिक रंगमंच विशेष क' ओतय भेनिहार विदूषकक गमैया हँसी-मजाक तथा राक्षस सभक ऊधम कोहुना पसिन नहि अयलनि। ओ भावे द्वारा प्रस्तुत रंगमंचकेँ जे 'तागडथोम' वा 'अललडुर्र' क संज्ञा देलनि अछि। ओहीसँ ओकर वास्तविकताक पता चलैत अछि।

जनिका 'सामाजिक नाटक सभक अग्रदूत' कहल जाइत छनि, ओ 'फार्स' सन् 1856 सँ पौराणिक नाटक सभक संगहि-संग रंगमंच पर आबय लागल छल। ई मराठी रंगमंचक इतिहासक दोसर महत्त्वक अध्याय थीक। बंबई मे भेनिहार

अंग्रेजी नाटक सभक नकल पर ई फार्स मराठी रंगमंच पर अवतरित भेल। पौराणिक रंगमंचसँ भिन्न, स्वतन्त्र, तत्कालीन समाजक बिडम्नात्मक चित्रण एवं सामाजिक समस्या सभपर आधारित नाट्य परम्परा 'फार्स' क रूपमे जन्म लेलक। ओकर पश्चात् 1861 मे विनायक जनार्दन किर्तने' क पहिल ऐतिहासिक मराठी नाटक 'थोरले माधवराव पेशवे' पुस्तक रूपमे प्रकाशित भेल। तहियासँ 'बुकिश' नाटक सभक परम्परा प्रारम्भ भेल। 'बुकिश' क अभिप्राय थीक पुस्तक रूपमे प्रकाशित भेनिहार। सुप्रसिद्ध नाटक-इतिहासकार श्री० वा० वनहट्टी लिखैत छथि—"बुकिश नाटक सभक प्रचार ताधरि जोर-शोरसँ होइत रहल, जाधरि किर्लोस्करक संगीत-प्रधान नाटक-रंगमंच पर नहि आयल। ओहि मे कतेक प्रकारक नाटक छल। ओहिमे 'थोरले साधवराव पेशवे', 'झाशीची राणी', 'नारायणराव पेशवे यांचा मृत्यु' आदि किछु ऐतिहासिक नाटक छल। 'जयमाला' सदृश मौलिक नाटक छल। 'ऑथेलो', 'सिवेलाईन तारा', 'भ्रांतिकृत चमत्कार' आदि अंग्रेजीसँ अनूदित नाटक छल। तथा 'वेणीसंहार', 'शाकुन्तल' आदि संस्कृतसँ मराठीमे अनूदित नाटक छल। एहि प्रकारेँ मराठी नाट्य-साहित्य अनेक प्रकारक नाटक सभसँ उत्तरोत्तर समृद्ध होइत गेल। 1880 क लगभग भावे क परम्परा वाला पौराणिक रंगमंच 'फार्स' तथा अधिकांशमे अनूदित एवं रूपान्तरित बुकिश नाटक सभक कारणेँ मिश्रित स्वरूप वनि गेल।"

सन् 1880 क वर्ष मराठी रंगमंचक इतिहासमे एक महत्त्वक वर्ष थीक। एही वर्षसँ मराठी रंगमंच पर संगीत नाटक सभक वैभवशाली युग प्रारम्भ भेल। अण्णा साहेब किर्लोस्कर एहि युगक प्रमुख प्रवर्त्तक छलाह। संगीत-प्रधान रंगमंचक विकास एवं विस्तार एहि वेगसँ भेल जे ओकर परवर्त्ती कालमे रंगमंच पर अन्य प्रकारक नाटक सभक प्रचलने क्षीण भ' गेल। स्वयं कोल्हटकर सन् 1894 मे लिखल अपन एक समीक्षा-लेख मे एहि प्रक्रियाक मार्मिक विवेचन कयलनि अछि। ओ लिखैत छथि—"आइ-काल्हि ई संगीत-नाटक सभक 'जीवनकलह' क क्षेत्रमे एहि वेचारा पौराणिक नाटक सभकेँ निकाल-वाहर क' देलक अछि। इऐह नहि अंग्रेजी शैली मे लिखल गद्य रूप नाटक सभक तँ दुर्गति क' देलक अछि। अधलाह सँ अधलाह संगीत-नाटकक वढ़ियाँ सँ बढ़ियाँ गद्य नाटककेँ पराजित क' दैत अछि। एखन हमर अभिनय कलामे आवश्यक प्रगति नहि भ' पौलक अछि। परन्तु नाटक मे निम्न कोटिक शृंगाररस भेटि जायत। कखनो-कखनो तँ ऐहन निकृष्ट शृंगारक पराकाष्ठहि भ' जाइत अछि।"

कोल्हटकरक एहि आलोचनाक लक्ष्य 'सौभद्र', 'शाकुन्तल' सदृश उच्चकोटिक नाटक नहि छल। 'विक्रम-शशिकला' सदृश कथ्य आओर कला दुनू दृष्टिसँ सामान्य कोटिक नाटक छल। जाहि मे 'नीति-देवता' क खून क' देल गेल छल। संगीत-नाटक सभक एही किर्लोस्करी परम्परा मे सेहो आगाँ जा क' एक रसता

आओर एक प्रकरता आवय लागि गेल छल। सब नाटक एकहि प्रणालीमे लिखल जाइत छल। वैह भंगला चरण, वैह सूत्रधार, वैह नटीक अभिनय, गायन, वैह बन्दी लोकनिक चूर्णिका, वैह कंचुकीक वार्द्धक्य, वैह विदूषकक पेटूपन सब-किछु वैह। इऐह पद्धति स्थिर भ' गेल छल। एहि बातक अनुकरण जन्य पुनरावृति प्रायः प्रत्येक संगीत नाटक मे कयल जाइत छल। कोल्हटकर-सदृश जे व्यक्ति शेक्सपियर, मौलियर, कार्नेल, कांग्रीव, शिलर इत्यादि पाश्चात्य नाटककार सभक अवगाहन कयने होथि तथा जे नवीनता प्रिय रसिक होथि हुनका तँ ई नाटक 'बोरिंग' लगवे करतनि। अन्य नाटक मण्डली सभक सेहो एकरसता खलय लागि गेल छल। अतः किर्लोस्कर मण्डली-सदृश मानल गेल नाटक कम्पनी—अपना लग गोविन्द वल्लाल देवस-सदृश नाटक लेखकक रहितहुँ सेहो—इनाम घोषित क' कय नवीन शैलीक मौलिक-नाटक मँगबौलनि। कम्पनीक लग जे पचीस नाटक आयल, ओहिमे सँ 'वीरतनय' सर्वश्रेष्ठ सिद्ध भेल।

'वीरतनय' नाटकके रंगमंच पर अभिनीत होइतहि, जतय ओ अत्यन्त लोकप्रिय भेल, ओतय ओ विवादक विषय सेहो बनि गेल। एकर कारण ई छल जे ओहि समय नाट्य-जगत्मे प्रचलित प्रथा सभक एहि नाटकमे बड़ अधलाह जकाँ अवहेलना क' देने छल। ओहि समय प्रचलनमे जे नाट्य-प्रणाली छल, ओकरा कोल्हटकर बदलि देलनि। पु. रा. लेले कहैत छथि जे, "ओ सूत्रधार-नटीके तिलाञ्जलि द' देलनि। पारसी शैलीक तर्ज पर गाना सबके देलनि। सर्वथा काल्पनिक कथानकक आश्रय लेलनि। एकदम नव स्टाइलक विनोद निर्माण कयलनि। तबलावादक लोकनिके नवीन प्रकारक ताल आदिक प्रशिक्षण देलनि। गानामे नवीनता तथा विचित्रता उत्पन्न कयलनि संगीत-नाटकक गद्यांशमे पर्याप्त वृद्धि कयलनि। एहन नाटक लिखलनि जकर सफलताक हेतु मात्र संगीतेक नहि, अभिनयक सेहो कौशल प्रदर्शित करब आवश्यक हो। पात्र सभमे सेहो विविधता आनल गेल। कहबाक अभिप्राय ई अछि जे ओ सब प्रकारक नवीनता सभसँ दर्शक लोकनिके चकित क' देलनि।" रंगमंच पर दर्शक लोकनिकके 'वीरतनय' नाटक मे पाश्चात्य शैलीक एक सुखान्त नाटकक सम्पूर्ण विशेषता देखबाक हेतु भेटि गेलनि।

'वीरतनय' एक रमणीय कल्पनासँ युक्त प्रणय-कथा थीक। एकर नायक सूर्यसेन विदुर तथा प्रौढ़ छथि, जनिक मिलन हुनका पर मोहित शालिनी नामक नायिकासँ अनेक संघर्ष सभक पश्चात् होइत छनि। इऐह एहि नाटकक मुख्य कथा थीक। अनेक नाटकीय घटना सभक, उत्सुकतामे वृद्ध कयनिहार उलझन वाला प्रसंग थीक, चहटगर सम्वाद सब तथा सबसँ बढि क' नवीनता युक्त संगीतक कारणे ई नाटक शीघ्रहि अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त क' लेलक। उत्कृष्ट कोटिक अभिरूचि एवं रसिकताक एहिमे दर्शन होइत अछि। 'मराठी रंगभूमि' नामक पुस्तकक लेखक श्री अ. वि. कुलकर्णी लिखैत छथि—"शालिनी तथा शूरसेनक

मध्य जे सम्वाद अछि ओकर शृंगार सुरूचिपूर्ण थीक। इऐह कारण अछि जे दर्शक लोकनिक मन पर एहि नाटकक प्रभाव बड़ बढियाँ पड़ैत अछि।" सुरूचिपूर्ण शृंगार' तथा 'उन्नत कोटिक विनोद' इऐह दुइ अनमोल उपहार कोल्हटकर मराठी रंगमंचकेँ प्रदान कयलनि अछि।

परन्तु मजेदार बात ई छल जे महाराष्ट्रक ई सुखान्त नाटककारक पहिल नाट्य-कृति मूलतः दुःखान्त छलनि तथा ओकर विषय छल विधुर विवाहक समस्या। ओहिमे इऐह उपदेश छल जे विधुरकेँ दोसर विवाह नहि करबाक चाही आओर सेहो कुमारिका संग। 'परन्तु किर्लोस्कर कथनीक कारणे कोल्हटकर ओकर रूप बदलि देलनि। ओहि बदलल रूपमे ई समस्या विलीन भ' गेल।' ई बात श्री पु० रा० लेले एक स्थान पर कहने छथि। ओ आगाँ सेहो लिखैत छथि—"एही समस्याकेँ आगाँ चलि क' 'शारदा' नामक नाटकमे गोविन्द बल्लाल देवल सेहो उठौलनि अछि। "एहि प्रकारेँ श्री लेले देवलकेँ 'कोल्हटकरसँ प्रेरणा प्राप्त कयनिहार प्रथम नाटककार' बतौलनि अछि। सुप्रसिद्ध नाटककार श्री मामा साहेब बरेरकर सेहो एही कथनक समर्थन करैत लिखलनि अछि—"पहिने देवल लावणी क तर्ज पर नाटकक गाना लिखल करैत छलाह; परन्तु आगाँ चलि क' ओ 'वीर-तनय' नाटकमे श्रीपाद कृष्ण द्वारा अपनाओल तर्ज समक अनुकरण कयलनि। अतः ओहि समयक समीक्षक लोकनिक कथन छनि जे देवल श्रीपाद कृष्णक प्रथम अनुयायी छथि। 'शारदा' देवलक एकक्षत्र मौलिक नाटक थीक तथा सत्य अर्थ सभमे मराठी साहित्यक पहिल सामाजिक नाटक थीक। देवल सदृश किर्लोस्कर कम्पनीक अग्रगण्य नाटककारक सर्वश्रेष्ठ नाटक पर कोल्हटकरक नाटक सभक प्रभावकेँ देखलासँ पता चलैत अछि जे कोल्हटकर ओहि समय कतेक प्रबल क्रान्ति कयने छलाह। कोल्हटकरक पश्चात् जे क्यो व्यवित सभ नाटक लिखलनि ओहि सब पर कोल्हटकरक नाटकक प्रभाव पड़लनि।' श्री लेले एहि कथनक सत्यता ओहि कालक नाट्य साहित्यक अवलोकन कयलासँ स्वयंमेव सिद्ध भ' जाइत अछि।

'वीरतनय' क सफलताक पश्चात् ओ 'मूकनायक' तथा 'गुप्त मंजूषा' नामक दुइ सुखान्त नाटक लिखलनि तथा 1901 मे किर्लोस्कर मण्डली ओकरा रंगमंच पर प्रस्तुत कयलक। एहन प्रतीत होइत अछि जे कोल्हटकरक मनोरचना सुखान्त नाटक सभक पक्षमे छलनि। अपन आत्मचरित्रमे ओ लिखैत छथि—"हम निसर्गतः आज्ञावादी छी। प्रत्येक परिस्थितिक सुखद अंशकेँ चुनि लैत छी तथा दुखद अंशके छोड़ि दैत छी—इऐह हमर मनोरचना थीक।" कदाचित् एही मनोरचाक कारणेँ ओ सुन्दर सुखान्त नाटक लिखलनि। आमोदपरक नाटक साहित्यमे 'मूकनायक' क स्थान अनेक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण अछि। गडकरी एक स्थान पर लिखने छथि—"नाट्य साहित्यक स्वर्गीय आनन्द पायबे तँ अहर्निश रमणीय मूकनायक पढ़ू।"

एहि नाटकक सुन्दर अर्थगर्भित एवं श्रवण मधुर पद रचनासँ तथा प्रणयरम्य वातावरणसँ ओहि कालक शायदे क्यो एहन दर्शक रहल होथि जे मोहित ने भ' गेलि होथि ।

मूकनायक एक सोद्देश्य कलाकृति थीक । एकर प्रस्तावनामे कोल्हटकर लिखने छथि—"ई बात नहि थीक जे नाटककेँ उपदेश देनिहार हैबाक चाही । कथानक तथा दृश्य आदि नाटकक मुख्य सामग्री जँ चित्ताकर्षक एवं मनोरंजक रहय आओर ओहिमे उपदेश नहियो रहय तइयो नाटकक महत्त्व कम नहि होइत अछि । नाटकमे जँ उपदेशक सेहो अंश रहय तँ चीनीक संग चिड़ैता पियबाक श्रेय नाटककारकेँ प्राप्त भ' जाइत छनि । एहि कारणेँ अनेक रास नाटककार उपदेश प्रधान नाटक लिखबाक दिस प्रवृत्ति होइत छथि । एही सम्प्रदायक अनुसरण क' कय प्रस्तुत नाटकमे मद्यपानसँ भेनिहार हानि आदिक परोक्षतः आविष्करण करबाक प्रयत्न कयल गेल अछि ।' एहि प्रस्तावनाकेँ पढ़लासँ ई स्पष्ट भ' जाइत अछि जे श्रीपाद कृष्णक उद्देश्य अपन नाटकक माध्यमसँ समाजकेँ शर्करावगुंठित गुटिका (शूगर कोटेड पिल) खोआयब छलनि । एहन लगैत अछि जे अपन सम्पूर्ण साहित्यमे ओ सौन्दर्य एवं उद्बोधन दुनूक समन्वय साधबाक सतत प्रयत्न कयलनि अछि । ओ एहि बातकेँ नीक जकाँ बुझैत छलाह जे 'निषिद्ध प्रतीत भेनिहार उपदेशकेँ सेहो मनोहर रंगमंच पर काज कयनिहार उत्कृष्ट नट समक मोहक सम्वाद सभक तथा मधुर गीत सभक संग श्रवणेन्द्रियक माध्यमसँ अन्तःकरणमे प्रवेश करबाक पूर्ण अनुमति प्राप्त होइत अछि ।' आओर कदाचित् एही समझक कारणेँ ओ अपन नाटक सभक द्वारा अनेक सामाजिक समस्या सभक समाधान खोजि निकालबाक प्रयास कयलनि ।

बौकक अभिनय कयनिहार युवा सम्राट विक्रांत राजा शरच्चन्द्रक शराब पीबाक अभ्यास छोड़यबाक शर्तकेँ—जे हुनक बहिन सरोजनी राखने छलीह—पूर्ण क' कय ओकरा अपन रानी बना लैत छथि । इऐह अछि एहि नाटकक कथानक । नर्म—प्रणय, गुदगुदौनिहार विनोद, घटनाक लयबद्ध ग्रन्थन आदि गुण सभक कारणेँ एहि नाटकक रंजकता आओर बढ़ि गेल अछि । एहि नाटकमे प्रयुक्त काव्यमय पद सभक (गेय पद्य) सम्बन्धमे गडकरी लिखैत छथि—"कोनो कविताकेँ उत्तम हैबाक हेतु शब्द-सौन्दर्य, अर्थ गाम्भीर्य, कल्पना वैचित्र्य, प्रसाद, रस परिपाक आदि अनेक गुण सभक आवश्यकता होइत अछि । एकर उदाहरण तकबाक हो तँ 'मूकनायक' क पद्य सभमे साठिसँ अधिक उदाहरण भेटि जायत ।" सन् 1901 क फरवरी मासमे निपाणीमे जखन ई नाटक खेलल गेल तखन एकर अनेक मधुर एवं ललित पद मराठी रसिक लोकनिक जिह्वा पर नृत्य करय लागल । एहन प्रतीत होइत अछि जे खाडिलकर द्वारा लिखित 'मानापमान' नामक नितान्त सुन्दर सुखान्त नाटक पर एहि नाटकक संगीतक अत्यधिक प्रभाव पड़ल अछि ।

मामा साहेब वरेरकर लिखलनि अछि जे—"मूकनायक' क अभिनय देखतहि हम मुग्ध भ' उठलहुँ। एहन लागल जेना हम कोनो अद्वितीय दृश्य देखि रहल छी।" एहिसँ जानल जा सकैत अछि जे तत्कालीन मराठी दर्शक तथा नाटककार पर एहि प्रणयरम्य नाटक कतेक प्रबल मोहिनी मन्त्र देने छल। ओही वर्ष जून-जुलाईक मासमे किर्लोस्कर मण्डली धारवाड़मे हुनक नाटक 'गुप्त मंजूषा' क अभिनय कयलक। नाटकक अपेक्षा एकरा एक 'अद्भुत रम्य प्रहसन' क नाम देब अधिक उचित हैत। 'स्त्रीगणकेँ देवत्वक दिस ल' गेनिहार शिक्षा' एहि नाटकक विषय थीक। परन्तु कथानक सभ-उपकथानक सभक ताना-बाना तथा असम्भव घटना-चक्रमे ई विषय लुप्त भ' जाइत अछि। शृंगी-भृंगी, वंचक आदि पात्र सभक माध्यमे प्रकटीकृत कोल्हटकरक वाक्यनिष्ठ, अत्युक्तिपूर्ण विनोदक मोहक विलास एहि नाटकमे प्रकर्षकेँ प्राप्त करैत अछि। श्री बोडस 'भृंगी' क पार्ट अत्यन्त सुन्दर कयल करैत छलाह। अपन रंजकताक कारणेँ ई नाटक किर्लोस्कर कम्पनीक 'नमन का नाटक' भ' गेल अछि। "ई नाटक प्रहसनात्मक थीक तथा दुइ तीन घण्टा धरि लोक सभक नीक मनोरंजन करैत अछि। एहि कारणेँ आइ-काल्हि ई कम्पनी जखन एक स्थानसँ दोसर स्थान जाइत अछि। तँ अक्सर एही नाटकक नमनसँ अपन अभिनय प्रारम्भ करैत अछि।" ई बात ओहि कालक एक नाट्य समीक्षक श्री आ. वि. कुलकर्णी एक स्थान पर लिखने छथि।

एहि आधुनिक पद्धतिक कल्पनारंभ नाट्य त्रयीक कारणेँ कोल्हटकर मराठीक अग्रगण्य नाटककार तथा किर्लोस्कर मण्डलीक एक प्रमुख आधार स्तम्भ बनि गेल छलाह। जतय एक भाग मराठी दर्शक हुनक नाटकमे प्रदर्शित उन्नत कोटिक बुद्धि निष्ठ विनोदसँ पेट भरिक क' हँसैत अछि ओतय दोसर भाग नाटकक प्रणयरम्य वातावरणसँ पुलकित सेहो भ' उठैत अछि। एकर संगीत तँ एक रम्य एवं अद्भुत स्वर-सृष्टिक निर्माण क' देलक अछि। एहि नाटक सभक रंगमंच पर अभिनीति करबाक कारणेँ जतय किर्लोस्कर प्रणालीकेँ विपुल मात्रामे कीर्ति प्राप्त भेल ओतय पैइसा सेहो प्रचुर मात्रामे प्राप्त भेल। एहि कारणेँ सन् 1906 तथा 1910मे हुनक 'मतिविकार' तथा 'प्रेमशोधन' नामक नाटक सभक रंगमंच पर अवतरित हैब स्वाभाविके छल। 'मतिविकार' अपन उन्नत नाटकीय गुण सभक तथा विचारगत आधुनिकताक कारणेँ अत्यन्त लोकप्रिय भेल। किर्लोस्कर मण्डली जखन पूनामे अबैत छल तखन कम्पनीक व्यवस्थापक लोकनिक लग अर्जी आबय लागि जाइत छलनि जे—"आगामी शनिवारकेँ 'मतिवकार' देखाबथि।" आचार्य अत्रे लिखैत छथि—"करुणा एवं गम्भीरतासँ युक्त ई नाटक अपन शक्तिशाली टेकनीकक बल पर प्रभावोत्पादक साहित्य-निर्मितक' एक महान पराक्रम बनि गेल छल।" वि. सं. खाडेकरक कथन छनि जे—"साहित्यक रचना रूपमे ओ नाटक क एक अमर कृति हैत।" सुशिक्षित युवक चकोर, हुनक प्रेयसी बाल-विधवा

चन्द्रिका, चन्द्रिकाक वयोवृद्ध पिता आनन्दराव तथा हुनक सतताय सरस्वती आदि पात्र सभक द्वारा कोल्हटकर विधवा-विवाहक वैचित्र्य तथा बाला-वृद्ध-विवाहक अनौचित्यक एहि नाटकमे मार्मिक चित्रण कयलनि अछि। संगहि विहार-तरंगिणी क कथाक माध्यमे ओ पुनर्विवाहक सेहो समर्थन कयलनि अछि। सरस्वतीक व्यक्तित्वक चित्रण तँ अत्यन्त चिन्ताकर्षक एवं मर्मस्पर्शी भेल अछि। वृद्ध पतिक ई एक तरुण सुख-वंचिता पत्नी मनोहर सदृश सुशील युवकक मोहमे पड़ि क' अधः पतनक सीमा धरि जा पहुँचैत छथि। एतेक भेलो पर सेहो दर्शक लोकनिक सहानुभूति ओ नहि समाप्त करैत छथि। सामाजिक अन्यायक ई मर्म विदारक अंत दर्शक लोकनिकेँ अन्तर्मुख बनबैत छथि तथा सामाजिक प्रथा सभक कारणेँ चन्द्रिका सदृश निष्पाप प्राणीकेँ जीवनमे जे यातना सभ भोगय पड़ैह छनि, ओकरा देखि दर्शक लोकनिक नेत्र सजल भ' उठैत छनि। भारतीय जन-जीवनक अनेक पेंच वाला समस्या सभकेँ ओ एहि नाटकमे वाणी प्रदान कयलनि अछि। श्री गडकरी एहि नाटकक आधुनिकताकेँ देखैत तत्कालीन समाजक सन्दर्भमे कहने छलाह जे —"कोल्हटकर सौ वर्ष पहिने जनमल छथि।" ई नाटक जाहि समयमे अभिनीत भेल छल। ओ काल सुधारवादी आन्दोलनक दृष्टिसँ अत्यन्त प्रतिकूल छल। श्री पु. रा. लेले कहैत छथि—"1906 क वर्ष किर्लोस्कर कम्पनीक हेतु बड़ वेशी उपद्रवसँ भरल गेल छल। कलकत्ता काँग्रेस पहिल वेर उग्र कार्यक्रमकेँ स्वीकृति देने छल। दादाभाई नौरोजी काँग्रेस क अध्यक्षीय मंच परसँ स्वराज शब्दक उच्चारण कयने छलाह। निष्क्रिय राजनीतिज्ञ लोकनिक दलक पूर्ण पराजय तथा लोकमान्य तिलकक दलक पूर्ण विजय एहि कलकत्ता कांग्रेसक निष्कर्ष छल। निष्क्रिय राजनीति एवं समाज-सुधारक एक भागतँ सक्रिय राजनीति एवं सनातन धर्म दोसर भाग छल। यद्यपि लोकमान्य समाज-सुधारक विरोधी नहि छलाह तथापि साधारण जनताक धारणा हुनका सम्बन्धमे किछु एही प्रकारक छलनि। ओही समय नेमालकर द्वारा लिखित 'दंडधारी' नाटकक अत्यधिक बोल-बाला भ' रहल छल। ओहि नाटकक पात्र 'दंडधारी' अनमन लोकमान्य तिलकक पोशाक पहिन क' आयल करैत छलाह। ई नाटक आगाँ जा क' बन्द भ' गेल। परन्तु ओहि समय ओकरा लोकप्रियता अत्यधिक छलैक। एहने दिनमे 'मति-विकार' सदृश समाज-सुधारकेँ प्रोत्साहित कयनिहार नाटक रंगमंच पर आनब किर्लोस्कर कम्पनीक हेतु बड़ साहसक बात छल। ओहि समय कम्पनी मात्र एहि हेतु ई साहस देखौलक जे नाटक कोल्हटकर द्वारा लिखित छल।"

ई पैघ उद्धरण ओहि समयक सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति पर सुन्दर प्रकाश दैत अछि। विषम विवाह इत्यादि ओहि समयक समग्र समस्या सभ आब ओतेक उग्र नहि रहि गेल अछि; परन्तु महाराष्ट्रमे एक एहन समय छल जखन हिनका ल' कय बड़ पैध भीषण विवाद भेल करैत छलनि। एहन समयमे कोल्हट-कर जाहि निर्भयतासँ अपन प्रत्येक प्रकारक साहित्य द्वारा समाज सुधारक बुद्धि-

एवं सक्रिय प्रतिपादन कयलनि अछि, ओ निःसन्देह प्रशंसनीय थीक। एहि नाटक सभ पर आलोचक लोकनिक वक्र-दृष्टिक रहव स्वाभाविके छलनि। आओर ओ रहल सेहो।

ओकरा बाद रंगमंच पर अभिनीत 'प्रेमशोधन' कोल्हटकरक पाँचम नाटक छलनि। ई एक काव्यात्मक, प्रणय-प्रधान सुखान्त नाटक थीक। एहिमे भनहि विषय-विवाहक समस्याक उल्लेख भेल हो तइयो एहि नाटकमे हिनक दृष्टि विशुद्ध कलात्मक रहल अछि। नन्दन तथा कन्दन दुइ जौँआ भाय छलाह, जनिक स्वभाव परस्पर विरोधी छलनि तथा मोहिनी आओर इन्द्रा नामक दुइ बहिन छलीह। एही पात्र सभक जीवन कथासँ एहि नाटकक रचना भेल अछि। कोल्हटकरक सर्वोत्तम कल्पना प्रधान नाट्य रचना सभमे एहि नाटकक स्थान अछि। 1910 क जून मासमे किर्लोस्कर मण्डली ई नाटक अहमद नगरमे अभिनीत कयने छल। एकर निर्देशन नाट्याचार्य खाडिलकर कयने छलाह। महाराष्ट्रीय रसिक जनता एकर बढ़िया स्वागत कयने छल। 1910मे जखन ई पूनामे खेलल गेल तखन 'पूना निवासी सभ प्रेमशोधनक उत्तम स्वागत कयलनि', ई बात गणपतराव बोडस अपन आत्मचरित्रमे लिखने छथि।

नन्दन आओर कन्दन दुन् जौँआ भाय छथि। नन्दनक विवाह कन्दनक प्रेयसी मोहिनीक संग होइत छनि। एकर दुइ फल होइत अछि। एक ई जे दुःखी कन्दन गृह-त्यागि क' दैत छथि तथा दोसर ई जे नन्दनक वैवाहिक जीवन प्रेम हीन भ' जाइत छनि। आगाँ जा क' दुन् इन्द्रासँ प्रेम करय लागि जाइत छथि एहि प्रेमक कारणेँ नन्दनक हत्या करबाक इच्छा रखनिहार कन्दनक हृदय परिवर्त्तन भ' जाइत छनि। अन्तमे एकर तथा मोहिनीक अन्त भ' जाइत छनि तथा इन्द्रा आओर नन्दनक मिलन होइत अछि। प्रेम मूलक विवाहक समर्थन कोल्हटकर एहि सुन्दर कलाकृतिमे कयलनि अछि। नाट्य-साहित्यक एक मर्मज्ञ समीक्षक श्री द. रा. गोमकाले लिखैत छथि—"एहि नाटकमे प्राचीन तथा अर्वाचीन दुइ पीढ़ीक संघर्ष थीक। एक पीढ़ी कहैत अछि हमरा जकरासँ कही ओकरेसँ हमर बच्चाक विवाह करबाक चाही तथा दोसर पीढ़ी कहैत अछि जे विवाहमे प्रेमकेँ महत्त्व देल जयबाक चाही। इऐह एहि प्रेमशोधन नाटकक कथाक आधार थीक। एहि संघर्षक प्रतिपादन पर्याप्त तर्क-संगत एवं प्रभावोत्पादक रीतिसँ कयल गेल अछि।" एहि नाटकक पाँचम अंकक दोसर दृश्यक वर्णन करैत खांडेकर एकरा 'मराठी नाटक-सभमे सर्वोत्तम दृश्य' कहलनि अछि। श्री पु. रा. लेले लिखलनि अछि—"एहि दृश्यकेँ पढ़िक' भवभूतिकेँ सेहो बहुत आनन्द भेल होइतनि।" निःसन्देह 'प्रेम-शोधन' नाटक श्रीपाद कृष्णक कीर्ति मन्दिरक कलश थीक। ओकरा बाद 1911 मे खाडिलकरक संगीत प्रधान नाटक 'मानापमान' अभिनीत भेल तथा कोल्हटकर युगक परिसमाप्ति प्रारम्भ भेल।

एहि प्रकारेँ पाँच सरस सुखान्त नाटक लिखलाक बाद कोल्हटकर गद्य-प्रधान रंगमंच दिस अग्रसर भेलाह। 1912 मे ओ 'वधूपरीक्षा' नामक नाटक लिखलनि। सबसँ पहिने खामगाँव मे महाराष्ट्र नामक मण्डली 1913 मे एहि गद्य प्रधान नाटकक अभिनय कयलक। पु. रा. लेले लिखैत छथि—"सयाजी-राव गायकवाड एहि नाटककेँ बड़ वेशी पसिन करैत छलाह। दुइ गद्यात्मक स्वगत भाषण एहि नाटकमे बड़ सुन्दर बनि पड़ल अछि। ओकरा सुनबा काल दर्शक लोकनिकेँ आतबे आनन्द अबैत छलनि जतवा बाल गन्धर्व द्वारा गायल गेनिहार संगीतकेँ सुनिक' अबैत छलनि। ई दुन् स्वगत भाषण श्री पोतनीस दर्शक लोकनिक समक्ष प्रस्तुत कयल करैत छलाह। एहिसँ प्रतीत होइत अछि जे कोल्हटकर नाटक सभक सम्वाद लेखनमे कतेक निष्णात छलाह। संगीत प्रधान नाटक सभमे ओ जतवे सफलता प्राप्त क' सकलाह ओतवे सफलता गद्य-प्रधान नाटक सभमे प्राप्त भेलनि। एक रियासतक आधुनिक विचार रखनिहार युवा नरेश वेष बदलि क' रूपगुणसम्पन्न वधूक खोजमे वहराइत छथि तथा अन्तमे हुनका भेटि जाइत छनि। इऐह एहि नाटकक कथानक थीक। यद्यपि एहि नाटकमे अनेक सामाजिक समस्या सभक उल्लेख आयल अछि तइयो हुनका एहि कलाकृति द्वारा ई प्रदर्शित करव छलनि जे 'नाटकक नायिका सदृश सद्गुण सम्पन्न बालिकाकेँ मात्र ओकर हीन कुलक हैवाक कारणेँ पाणिग्रहण योग्य नहि मानव ठीक नहि अछि। नाटकक कथानक अत्यन्त पेंचवाला अछि तइयो एकर रचना सुव्यवस्थित थीक आओर दर्शक लोकनि पर प्रभाव देनिहार अछि। विनोद निर्मालक हेतु ओ ग्रामीण भाषाक सेहो सफल प्रयोग कयलनि अछि।

'वधूपरीक्षा' क बाद ओ 1917 मे 'सहचारिणी' तथा 'परिवर्त्तन' नामक दुइ नाटक लिखलनि। ओकर अभिनय बाल गन्धर्वक सुप्रसिद्ध 'गन्धर्व' नाटक मण्डली, करबाक निश्चय कयलक। ओहिमे सँ 'सहचारिणी' क अभिनय बड़ौदामे 1918क अप्रैल मासमे उक्त मण्डली द्वारा कयल गेल। ई एक प्रहसनात्मक नाटक थीक। एहिमे 'दुइ महिलाक पति लोकनिक चरित्र-चित्रण' थीक। सुप्रसिद्ध कथाकार श्री गुर्जर गन्धर्व मण्डलीसँ एहि नाटकक सिफारिश करबाकाल कहने छलाह जे 'ई नाटक मराठी नाटक सभमे अत्यधिक विनोद-प्रधान बनि पड़ल अछि।' एतेक भेलो पर सेहो ई नाटक रंगमंच पर सफल नहि' भ' सकल। 'सहचारिणी' क विफलताक कारणेँ आन्तकित 'गन्धर्व कम्पनी' केँ 'परिवर्त्तन' नाटकक अभिनयक साहस नहि भेलैक। श्री बा० ल० कुलकर्णीक मनमे 'सहचारिणी' तथा 'परिवर्त्तन' नामक नाटकहि कोल्हटकरक असली नाटक छनि। ओहिमे पहिल नाटकक वातावरण प्रहसनात्मक थीक। तथा दोसरक अद्भुत स्वप्न नाट्यात्मक थीक। एहि कारणेँ ओहिमे विनोद नाटकक अविभाज्य अंग बनि गेल अछि। "यद्यपि 'परिवर्त्तन'

नाटकमे सेहो कोल्हटकर अपन प्रिय सामाजिक सुधार सभकेँ अपन प्रतिपादनक ध्येय बनौलनि अछि तइयो नाटक अत्यन्त पठनीय बनि पड़ल अछि। नाटकमे किछु नाटकीय मूल्य सेहो विद्यमान अछि। अर्थात् जे दृश्य एवं प्रश्न एतय उपस्थित कयल गेल अछि, ओहिमे अनेक स्थान सभ पर मनोरंजक नाटकीय गुण वर्तमान अछि। "ई प्रशंसा कयलनि अछि श्री वा० ल० कुलकर्णी। कोल्हटकरक नाट्य-साहित्यक मर्मज्ञ समीक्षक श्री द० रा० गोमकालेकेँ बुझबामे नहि अयलनि जे ई नाटक रंगमंच पर असफल किऐक भ' गेल। ओ लिखैत छथि—"स्त्री तथा पुरुषक सर्वत्र समानतहि एहि नाटकक मुख्य प्रतिपाद्य विषय थीक, जकरा ओ अनेक नाटकीय एवं अद्भुतरम्य घटना सभक सहायतासँ पुष्पित एवं पल्लवित करबाक प्रयास कयलनि अछि। एतेक सुन्दर नाटक पिछड़ि कोना गेल इऐह एक रहस्यमय बात थीक।" साहित्यिक दृष्टिसँ पठनीय नाटक रंगमंच पर आबिक' असफल किऐक भ' जाइत अछि, ई नाट्य क्षेत्रक एक निरन्तर रहस्ये थीक, एहिमे कोनो सन्देह नहि।

कोल्हटकरक नवम् तथा अन्तिम उल्लेखनीय नाटक थीक 'जन्मरहस्य'। ओकरा बाद सेहो ओ तीन नाटक आओर लिखलनि अछि। परन्तु ओहिमे हुनक प्रतिभा किंचित् निष्प्रभ भ' गेल छलनि। कोल्हटकरक अनेक कल्पनारम्य सुखान्त नाटक सभमे 'जन्मरहस्य' पहिल दुःखान्त नाटक थीक। एहि नाटकक सम्बन्धमे स्वयं कोल्हटकर लिखैत छथि—"हमर सब नाटक सभमे ई सर्वोत्तम नाटक बनि पड़ल अछि।" बलवन्त संगीत मण्डली बम्बईमे 1918 क सितम्बर मासमे एकरा पहिल बेर रंगमंच पर प्रस्तुत कयने छल। मण्डलीक संचालक चिन्तामणराव कोल्हटकर अपन आत्म वृतान्तमे एकरा 'सात पात्र सभक नवीन कल्पनासँ युक्त नव नाटक' तथा 'संगीत प्रधान दुःखान्त नाटकक रूपमे रंगमंच पर अयनिहार पहिल नाटक' कहलनि अछि। रघुनाथ कान्ताक दुःखान्त प्रेमकथामे ओ प्रतिलोभ विवाहक समस्याकेँ हाथमे लेलनि अछि। प्राध्यापक पराडकरक ई कथन सर्वांशमे सत्य थीक जे "एहि सामाजिक दुखान्त नाटकमे अद्भुत रम्य कथाक आश्रय ने ल' कय कोल्हटकर स्पष्ट जीवनक यर्थाथताक दिस अग्रसर भेल प्रतीत होइत छथि।"

एकर पश्चात् ओ 'शिवपावित्र्य', 'श्रमसाफल्य' तथा 'माया विवाह' नामक तीन नाटक 1921 सँ ल' कय 28 क मध्य लिखलनि। कोल्हटकरक नाट्य प्रतिभाक ह्रासक दिनमे लिखल गेल ई नाटक रंगमंचसँ हुनक तिरोभावक साक्षी थीक। मात्र 'मायाविवाह' नामक एकहि नाटक रंगमंच पर आबि सकल। अन्य नाटक सभक अभिनय सेहो नहि भेल। 'शिवपावित्र्य' हुनक एकमात्र ऐतिहासिक नाटक थीक। ई शिवजी पर लिखल गेल अछि। परन्तु कलाक दृष्टिसँ सामान्य थीक। श्रमसाफल्य' क विषय ई बतबैत अछि जे 'माथाक रेखा सभक अपेक्षा भुजा सभक बल अधिक श्रेष्ठ थीक।' 'एहि नाटकमे ई स्वगत भाषण समकेँ तिलाञ्जलि

द' देलनि अछि। कोल्हटकरक ई दुखान्त नाटक हुनक मृत्युक बारह वर्षक बाद 'युगवाणी' मे प्रकाशित भेल। ई तीनू नाटक मराठी रंगमंच पर उपेक्षिते रहल।'

कोल्हटकरक प्रारम्भिक छओ नाटक कला एवं विषय दुनू दृष्टिएँ अत्यधिक महत्त्वपूर्ण अछि। इऐह नाटक सभ मराठी रंगमंचकेँ नव मोड़ देलक अछि। 1896सँ ल' कय 1911 धरि मराठी रंगमंच पर हुनकर आधिपत्य रहल। 1911 मे खाडिलकर रचित 'संगीत मानपमान' रंगमंच पर आयल तथा रंगमंचक ऊपर कोल्हटकरककेँ जे एकाधिकार प्राप्त छलनि, ओ समाप्त भ' गेलनि। 1912 मे गडकरी द्वारा रचित 'प्रेमसंन्यास' क रंगमंच पर अवितहि कोल्हटकरक लोकप्रियता तेजीसँ कम होमय लागलनि। परन्तु खाडिलकर तथा गडकरी दुनू गोटेक कोल्हटकरक नाट्य तन्त्रसँ प्रभावित छलाह। गडकरीक नाट्यसृष्टि कोल्हटकरहिक नाट्यतन्त्रहिक अधिक विकसित रूप छल। अतः ग. त्र्यं. माडखोलकर कहैत छथि—"कोल्हटकरक नाट्य कलाक मूल्यांकन करबाक हो तँ हमरा जतय हुनक अपन रंगमंचीय लोकप्रियताक लेखा-जोखा करबाक हैत, ओतय हमरा इहो देखबाक हैत जे ओ अपन कलासँ खाडिलकर तथा गडकरीकेँ कतेक प्रभावित कयलनि अछि।" मराठी रंगमंचक प्रतिभाशाली नाटककार किर्लोस्कर, देवल, कोल्हटकर, खाडिलकर तथा गडकरीकेँ 'नाट्यपंचक' क नामसँ जानल जाइत छनि। कोल्हटकर जखन नाटक लिखब प्रारम्भ कयलनि ओहि समय विश्वक रंगमंचसँ किर्लोस्करक अस्त भ' गेल छलनि। शेष देवल, गडकरी तथा खाडिलकर तीनू नाटककार लोकनिक रचना सभ पर कोल्हटकरक प्रभाव न्यूनाधिक मात्रामे दृष्टिगत होइत अछि। एहिसँ हुनका नाट्य वाङ्मयक युग प्रवर्त्तक स्वरूपक पता लगैत अछि।

शेक्सपियर तथा मोलियरक कल्पनाप्रधान सुखान्त नाटक सभक तथा प्रहसन सभक कोल्हटकरक नाट्यकृति सभ पर विशेष प्रभाव दृष्टिगोचर होइत अछि। हुनका जे नाटक लिखबाक प्रेरणा भेटलनि ओ हुनक चचेरा पितामह महादेव शास्त्री कोल्हटकरक द्वारा रचित शेक्सपियरक 'ऑथेलो' नामक विश्व विख्यात नाटकक अनुवाद पढ़िएक' भेल छलनि। कोल्हटरकक युगमे शेक्सपियरक अनेक नाटक मराठीमे अनूदित भ' गेल छल तथा 'आर्योद्धारक', 'शाहूनगरवासी' आदि नाटक मण्डली सभक द्वारा रंगमंच पर अभिनीत सेहो भ' गेल छल।

कोल्हटकरक नाट्य वाङ्मयक अध्ययन करबाकाल श्री वि० द० साठे अनेक एहन बात सभ हुनक नाटक सभमे देखलनि जे साक्षात् शेक्सपियरक प्रभाव प्रदर्शित करैत अछि। संविधानक उलझन पूर्ण, मुख्य समर प्रसंगक पोषक तथा पूरक अन्य छोट समर प्रसंग, एक वा दुइ उपकथा सभसँ कोनो प्रसंगक निर्मित, वेश परिवर्त्तन तथा संदेश प्रेषणमे भेनिहार गड़बड़, पत्र आदिक सहायतासँ रहस्यक पोषण, लड़ाई, द्वन्द्व, भव्य राज दरबार आदिक उपयोग क' कय अभिनयक महत्त्व

मे वृद्धि करब आदि वाह्य गठन संबंधी व्यौरा शेक्सपियरक नाट्यतन्त्रक प्रभावक द्योतक थीक। 'कोल्हटकर लेख-संग्रह' नामक ग्रन्थक पैघ प्रस्तावनामे न. चि. केलकर किछु एहन स्थल उद्धृत कयलनि अछि, जे शेक्सपियरक नाटक सभमे ओही रूपमे अवैत अछि। 'वीरतनय' मे बंकुल तथा हुनकर हत्याराक दृश्यक स्पष्ट अनुकरण अथवा रूपान्तर थीक···'अपन राज्यसँ हाथ धो क' विरक्त स्थितिमे जंगल मे जा क' रहनिहार 'प्रेमशोधन' नाटकक राजाक दृश्य शेक्सपियरक रचना सभमे सेहो आबि जाइत अछि।' तथापि ओ कहैत छथि जे 'कोल्हटकरक रचना सभ प्रायः मौलिके रहैत छनि।' कोल्हटकर अनेक साहित्यिक प्रभाव सभकेँ आत्मसात कयलनि अछि तथा ओहि सभमे सँ अपन एक मौलिक नाट्य सृष्टिकेँ निर्मित कयलनि अछि। कोल्हटकरक अपन आत्मचरित्रमे लिखैत छथि—"अनेक पुस्तक सभकेँ पढ़लाक पश्चात् ओकर विषय-वस्तु हमरा पृथक्सँ स्मरण नहि रहैछ, ओकर एक सम्मिश्रण संस्कार मन पर रहैत अछि तथा ओ मनक एक स्थायी घटक बनि जाइत अछि। हमरा सुझनिहार नवीन विषय-वस्तुक उद्गम भनहि अन्य ग्रन्थकार लोकनिक ग्रन्थ सभमे हो तइयो ओ विषय-वस्तु हमर अपन मनोरचनाक अनुरूप रूप धारण क' लैत अछि।" एही कारणेँ मामा साहेब बरेरकरकेँ 'मूकनायक' नामक नाट्यलेखनक तन्त्रमे जे परिवर्त्तन उपस्थित क' देलक अछि, ओकरा सम्बन्धमे लिखैत कहय पड़त जे "ओहि नाटक पर ने शेक्सपियरक प्रभाव छल ने मोलियरक। इब्सनकेँ जाननिहार लोक ओहि समयमे बड़ थोड़ रहथि। परन्तु हुनक प्रभाव एहि नाटक पर दृष्टिगत नहि अवैत छल। कालिदासक अनुकरण तँ छले नहि। भासक नाटक ओहि समयमे प्रकाशमे नहि आयल छल। निःसन्देह ई तन्त्र श्रीपाद कृष्णक अपन छलनि।" 'शिवपावित्र्य' नामक नाटकहिकेँ कथा एहन अछि जकर आधार इतिहासमे उपलब्ध अछि। शेष हुनक सब नाटक पूर्णरूपेण मौलिक थीक। अनुवाद तथा रूपान्तरणक दलदलसँ बहार निकालि क' मराठी रंगमंचकेँ कोल्हटकर मौलिक नाटक सभक द्वारा जे अपन स्वतन्त्र सामर्थ्य प्रदान कयलनि अछि, ओकरा के बहुमूल्य नहि कहत ?

कोल्हटकरक कल्पना-प्रधान नाटक सभक एक मुख्य विशेषता ई अछि जे ओहिमे अधिकांश नाटक 'नायिका-प्रधान' थीक।अपन आत्म चरित्रमे ओ एक स्थान पर लिखलनि अछि जे हमर नाटक सभमे नायकक अपेक्षा नायिका अधिक समर्थ एवं चित्ताकर्षक प्रतीत होइत छथि।' कोल्हटकरक अन्य विशेषता सभक समान एहि विशेषताक प्रभाव हुनकर समकालीन मराठी नाटक सभपर पड़ल अछि। प्रसिद्ध नट एवं नाटककार गोविन्दराव टेंवेक कथनानुसार मराठी नाटक सभक रचना तन्त्र, पद्य सभक, तर्जक भाषा, शैली आदि बात सभमे कोल्हटकरक समयसँ क्रान्ति होमय लागल छल। परन्तु सबसँ पैघ क्रान्ति इहो छल जे लेखकगण नायक लोकनिक अपेक्षा नायिका लोकनिक अधिक प्रधानता देमय लागल छलाह।

एक स्थान पर श्री टेंबे लिखैत छथि—"वीरतनय' क पश्चात् कोल्हटकरक नाटक, 'मानापमान' तथा ओकर वादक खाडिलकरक नाटक तथा गडकरीक अधिकांश नाटक नायक लोकनिक अपेक्षा नायिका लोकनिक आओर उपनायिका लोकनिक लगपास अधिक मंडराइत दृष्टिगत अयलाह।" एहिमें स्पष्ट अछि जे कोल्हटकर द्वारा स्थापित आदर्श सभहिक रंगमंचक क्षेत्रमे अनुसरण कयल जाइत छल।

कोल्हटकरक नाटक सभक एक आओर विशेषता थीक—'मुग्धप्रणय' एव 'उत्फुल विनोद'। सौभद्र सदृश किछुएक अपवाद सभकें छोड़ि क' ओहि समय लिखल गेल प्राय: प्रत्येक नाटक सभमे उत्तान एवं अतिरेकी स्वरूपक शृंगारक बाहुल्य रहल करैत छल। कोल्हटकरक नाटक सभसँ एहि प्रवृत्तिमे परिवर्त्तन भेल। कोल्हटकरक शृंगार विदग्ध शृंगार थीक। अनुनय प्रणयक अनेक मधुर एवं ममोज्ञ छवि हुनक नाटकमे परिलक्षित होइत छल। कोल्हटकरक मत छलनि जे शृंगारक स्थायी भाव रति नहि भ' कय प्रीति हैबाक चाही। एहिसँ प्रतीत होइत अछि जे शृंगार-विषयक हुनकर रूचि एवं दृष्टिकोण एकदम आधुनिक छलनि। अतएव 'शृंगार' नाम देबाक अपेक्षा 'प्रणय' नाम देब अधिक उचित सिद्ध भेल। पहिल बेर प्रीति भावनाक मधुर प्रदर्शन कोल्हटकरक नाटक सभमे मराठी रंगमंच पर कयल गेल। पहिने जे प्रदर्शित होइत छल ओ मात्र शृंगार छल। गाछीमे सुतल विक्रान्तक चुम्बन लैला पर सरोजिनी हुनका लग जाइत छथि, परन्तु हुनकर नीनमे व्यवधान भ' जयबाक कारणें ओ लज्जित भ' कय पाछाँ हटि जाइत छथि। विक्रान्त एवं सरोजिनीक अचुंबित चुम्बनक ई प्रसंग समीक्षक लोकनिक कथनानुसारें अत्यन्त मधुर बनि गेल अछि। सरोजिनीक प्रणय पूर्ण कृतिसँ मोहित भ' विक्रान्त कहैत छथि—"नृप झालों दैवी तरिहो हे जागृत होणें नाही। या श्वासांचे ताडनि लाजवि मलयाँचलिच्या वाता। कंकणख हा बंदि जनाते स्तुतिपाठाते गाता।" मलयाचलसँ अयनिहार मारूतकें लज्जित कयनिहार श्वास तथा वन्दी लोकनिक स्तुतिपाठसँ सेहो अधिक उत्कृष्ट कंकण वक महिमासँ युक्त एहि प्रणयरम्य प्रसंगक सम्बन्धमे लिखैत ग. त्र्यं. माडखोलकर कहैत छथि—"कोल्हटकर आधुनिक कालक सुशिक्षित एवं प्रणय परवश युक्तीकें अपन प्रेमीक संग एकान्तमे कयल गेनिहार व्यवहारक ठीक-ठीक कल्पना कय क' नाटकमे एहि प्रसंगकें स्थान देने हैताह।" 'मूकनायक' क एहि प्रसंगकें देखिक' ओ स्वाभाविकतया वात्स्यायनक काम सूत्रमे सँ "सुप्तस्य मुखमवलोकयन्त्या स्वाभिप्रायेण चुंबनं रागदीपनन्" एहि सूचक स्मृति भ' आयल हैतनि। प्रणयक विविध छटासँ युक्त हुनक एहि नाटकक तत्कालीन युवा पीढ़ीकें मोहित क' देब कोनो आश्चर्यक बात नहि।

विनोद तँ कोल्हटकरक प्रतिभाक एक असाधारण विशेषता थीक। हुनकर प्रतिभाक एहि विशेषताक प्रतिबिम्ब हुनक नाटक सभपर सेहो पड़ल अछि।

'सहचारिणी' तथा 'परिवर्त्तन' ई दुन् नाटक तँ विशुद्ध प्रहसने थीक; हुनकर अन्य नाटक सभमे सेहो विनोदकेँ पर्याप्त स्थान प्राप्त भेल अछि। कोल्हटकरक विनोद प्रसाद गुण युक्त, प्रांजल तथा उच्च अभिरुचि सम्पन्न थीक। संस्कृत नाट्य वाङ्मय जगत्क विदूषकक समानहि ओ मात्र एकहि पाँत्रमे सीमित नहि रहि गेल अछि। ई ठीक अछि जे विनोद-युक्त रचना सभक हेतु कोल्हटकर अपन कोनहु नाटक सभमे पात्र सभक योजना कयलनि अछि, तथापि हुनक सभ पात्र विनोद-शील छथि। हुनक सुशिक्षित एव विदग्ध नायक वाक्याश्रित विनोदक उपयोग करैत छथि तथा आधुनिक नायिका सभ ओही ढंगक प्रत्युत्तर दैत छथि। उपनायक उपनायिकाए नहि, खलनायक धरि विनोद निर्माणमे प्रत्यक्षतया अथवा परोक्षतया योगदान करैत छथि। कोल्हटकर अपन खलनायक सभक व्यक्तित्वमे खलत्वक संगहि भीरुपन आओर मूर्खता सेहो द' देलनि अछि जाहिसँ 'मूर्खता' पर पेटभरि क' हँसबाक रसिक लोकनिक इच्छा पूर्ण भ' जाइत छनि। ओ एहि विनोदक स्थापना एहि कुशलताक संग कयलनि अछि जे ओ मुख्य कथानकमे विधात उत्पन्न ने करय तथा ओकर पूरेक सिद्ध हो। कोल्हटकरक सूक्ष्म एवं नर्म विनोदक कारण हुनक नाटकीय सम्वाद सभमे रंजकता भरि गेल अछि। हुनकर विनोदक विस्तार एवं कल्पना-वैभवकेँ देखि क' दर्शकगण चकित रहि जाइत छथि। हुनक नाटक सभमे जाहि विनोदक सृष्टि भेल-अछि, ओकरा मराठी नाट्य जगत् पर अत्यन्त गम्भीर प्रभाव पड़ल अछि। खाडिलकर, गडकरी, माधवराव जोशी, वरेरकर, अत्रे, रांगणेकर प्रभृति मराठीक प्रमुख नाटककार कोल्हटकरक विनोद तन्त्रक ऋणी छथि। ग० त्र्यं० माडखोलकरक कथनानुसार "कोल्हटकर अपन नाटक सभमे पाश्चात्य नाटक सभक विनोदक समकक्ष उत्कृष्ट विनोदक अवतारणा क' कय एक नवीन प्रकारक रंजकताकेँ जन्म देलनि। हुनक पूर्ववर्ती धुरंधर लेखक लोकनि शेक्सपियर, मोलियर, गोल्डस्मिथ, शेरिडन इत्यादि पाश्चात्य नाटककार लोकनिक रचना सभक मराठीमे सुन्दर अनुवाद कयलनि अछि; परन्तु ओ पाश्चात्य नाटक सभक विनोदक मराठीमे अवतारणा करबाक श्रेयोलाभ नहि क' सकलाह। ई जादू तँ कोल्हटकरक नवनिर्माणक्षम प्रतिभा 'वीरतनय' एवं 'मूकनायक' नामक अपन प्रारम्भिक मौलिक नाटक सभमे एतेक प्रभावोत्पादक रीति क' देखौलनि अछि जे हुनक परवर्ती नाटक सभमे विदूषककेँ सर्वदाक हेतु देश निकाला भेटि गेल अछि तथा हुनक प्रतिपाद्य विषय एवं पधान रसक पोषए विनोद एक अनिवार्य अंग बनि गेल।" ओ विनोदी एवं गम्भीर दृश्य सभक योजना रंगमंच पर फेरा-फेरी सँ कयल करैत छलाह। हुनकर एहि तन्त्रक अनुकरण सेहो अनेक परवर्त्ती मराठी नाटककार लोकनि कयलनि अछि। कोल्हटकरक नाटक सभक आश्रय ल' कय मराठी रंगमंच पर जे नवीन विनोद युग अवतरित भेल, ओ एतेक वैशिष्ट्य पूर्ण

एवं कल्पनारम्य छल जकर प्रभाव मराठी रंगमंच पर आइ धरि पौन सदी गुजरि गेलाक पश्चात सेहो तद्वत् विद्यमान अछि।

लोक सभमे विवादक विषय बनल गेल अछि जे कोल्हटकरक नाटक समस्या-प्रधान अधिक अछि वा कला-प्रधान। ई सत्य अछि जे हुनक नाटक सभमे अनेक सामाजिक समस्या सभक उपस्थापना कयल गेल अछि तथापि हुनकर प्रमुख उद्देश्य कलाक विलासे प्रतीत होइत अछि। 'उद्बोधन' कें ओ कहियो नाटकक अनिवार्य अंग नहि माननि। कलाक रक्षा करैत काल जँ समाजक उद्बोधन कार्य सेहो भ' सकय तँ हुनका कोनो आपत्ति नहि छल। ओओर ओ एहन सेहो कयलनि अछि। अतः हुनक ओ नाटक जाहिमे सामाजिक उद्बोधनक प्रमुखता भेटैत अछि, कलाक दृष्टिसँ कोनो अर्थमे हीन नहि अछि। 'मूकनायक' एकर एक उत्तम उदाहरण थीक। कोल्हटकरक भाषा वैभव, समृद्ध कल्पना तथा काव्यात्मकताक कारणें हुनकर नाटक सामाजिक समस्या सभक बावजूद कलात्मक बनि क' रहल अछि।

'संगीत-प्रधान-रंगमंच' मराठी भाषी लोकनिक हेतु विशेष प्रीतिक विषय थीक। मराठी नाट्य-कविता तथा नाट्य-संगीतक सेहो परम्पराकें त्यागि क' कय कोल्हटकर जानि बूझि क' अपन नाटक सभमे प्रारम्भहिसँ एक नव चोला पहिरौलनि अछि। हुनकर पूर्ववर्ती नाटककार लोकनिक नाट्य कविताक दिस देखबाक दृष्टिकोणहिसँ भिन्न छलनि। हुनक पद-कथासँ जोड़ल रहैत छल आओर कथानकहिक अंग भेल करैत छल। परन्तु कोल्हटकर ओकरा नाटक सभमे एक स्वतन्त्र स्थान प्रदान कयलनि। अपन एक समीक्षात्मक लेखमे 'सौभद्र'क दुइ पदक उद्धरण द' कय ओ बतौलनि जे ओ पद 'संविधानिकक अपरिहार्य अंग हैबाक कारणें नीरस' भ' गेल अछि। हुनकर कहब छलनि जे—"साधारण विचार सभक अपेक्षा अधिक उन्नत विचार सभक अभिव्यक्तिक हेतुए नाटककार नाट्य कविताक आश्रय लैत छथि। ओ एहि भावना सभक अभिव्यक्तिक हेतुएँ अपन नाटकक पात्र सभक मुँहमे कविता देलनि अछि, जकरा गद्य द्वारा झेलल नहि जा सकैत छल। हुनकर एहि क्रान्तिकारी विचार-धाराक कारणें मराठी-संगीत प्रधान नाटक सभमे पद सभक संख्या उत्तरोत्तर कम होइत चल गेल तथा गद्य सम्वाद सभकें अधिक अवसर प्राप्त होमय लागल। एकर दोसर फल ई भेल जे नाट्य-कवितामे अधिक काव्यात्मकता आबय लागल। कोल्हटकरक समयहिसँ नाट्य-कविता अपन रूप बदलक। ओ आख्यान कविता ने रहि क' विशुद्ध काव्य बनि गेल। इएेह कारण अछि जे एक प्रसिद्ध संगीत निर्देशक हुनका 'मराठी रंगमंचीय ललित संगीतक प्रवर्त्तक' कहि क' सम्बोधित कयलनि अछि।

गोविन्द राव टेंबेक कथनानुसार कोल्हटकरक समयहिसँ 'संगीतक धर्म परिवर्त्तन युग' प्रारम्भ भेल। संगीत नाटकक पर्व प्रारम्भ भेल। संगीत नाटकक पर्व प्रारम्भ कयनिहार किर्लोस्करक अथवा हुनक पश्चात् देवलक पद अधिकांश

लावणी सदृश भेल करैत छल। 'रसानुरूप राग विशेषमे ओहि पद सभकेँ गाओल जाइत जल। कदाचित् एही लेल ओहि लावणी सदृश पद सभक एकरूपता ओहि कालक संगीत रसिक दर्शक लोकनिकेँ अखरल नहि हैतनि।" ई बात मामा वरेरकर एक स्थान पर कहलनि अछि। गोविन्द राव टेंबेक कथन छनि जे 'शाकुन्तल' नाटकमे संगीतक उत्क्रान्ति मात्र पच्चीस पद सभ धरि सीमित रहल" ओ प्राचीन परम्पराकेँ पूर्ण रूपेण भंग करबाक श्रेय' कोल्हटकरकेँ देलनि अछि, ओ एकदम ठीक अछि। ओ शास्त्रीय राग सभ तथा पारसी-गुजराती रंगमंचीय रण सभक सम्मिश्रण क' कय मराठी नाट्य-संगीतकेँ समृद्ध कयलनि। सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ वसन्त शान्ताराम देसाई लिखैत छथि, "मराठी नाट्य जगत्मे पद्य सभकेँ तर्जक दिस दर्शक लोकनिक ध्यान प्रथमतः कैलाशवासी (स्व०) श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर आकृष्ट कयलनि। तर्जक पर्यायवाची मराठी शब्द 'चाल' जाहि अर्थमे श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकरक 'वीरतनय नामक नाटकसँ संगीत जगत्मे रूढ़ भेल अछि, ओहि अर्थमे ओहिसँ पहिने ओकर प्रचलन नहि छल।" एहिसँ नाट्य संगीतक क्षेत्रमे श्रीपाद कृष्णक कार्यक महत्त्व मानल जा सकैत अछि।

कोल्हटकर अपन पहिल नाटकहिसँ नाट्यसंगीत अनबाक प्रयत्न कयलनि। नवीनताक प्रति निस्सीम आकर्षणक कारणेँ ओ पारसी-गुजराती रंगमंचीय नाट्य संगीतक दिस आकृष्ट भेलाह। 'वीरतनय' क प्रस्तावनामे ओ लिखैत छथि जे "एहि पुस्तककेँ लिखबाक दुइ उद्देश्य छल। एक ई जे शृंगारक संगहि संग वीर रसक योजना कयल जाय। तथा दोहर ई जे नवीन तर्ज सभमे पद सभक प्रचार कयल जाय। नाटकमे आयल पद्य सभक तर्ज प्रायः बम्बईक पारसी तथा गुजराती नाटक सभसँ लेल गेल अछि। 'बलासागरतुम्हीं', 'मजवरी हे भाले' इत्यादि पुरान परिचित मित्र सभक अभावमे श्रोता सभक भेनिहार निराशा-आशा थीक जे किछु अंशमे तर्ज सभकेँ विचित्रतासँ दूर भ' जायत।" परन्तु संगीत-रचना सभक ई नवीनता किछु दर्शक लोकनिकेँ नीक नहि लगलनि। अपन आत्मचरितमे स्वयं कोल्हटकर एक स्थान पर लिखलनि अछि—"नाटकक विरोधी लोकनिक हो-हल्ला करवे शुरू कयलनि जे पारसी तर्जक नाटक-सभसँ किऐक लेल गेल? हुनकर एहि व्यक्तिगत द्वेषकेँ एहि प्रकारकेँ नैतिक आधार भेटि गेला पर अन्य दर्शक लोकनिक सेहो समर्थन हुनका प्राप्त भेलनि तथा नाट्यगृहमे 'नभूतो न भविष्यति' क स्वरूपक कोलाहल मचि गेल।"

कोल्हटकर जाहि विशेष प्रकारक संगीतक योजना स्वीकार कयने छलाह, ओकर प्रभाव हुनक पद्य रचना पर सेहो पड़ल तथा ओ यथेष्ट क्लिष्ट भ' गेल। एहि सम्बन्धमे कोल्हटकर लिखने छथि—'वीरतनय' तथा 'मूकनायक' नाटक सभक कविताकेँ क्लिष्ट हेबाक कारण ई अछि जे ई पद्य जाहि तर्जक आधार पर रचल गेल अछि ओहिमे ह्रस्व अक्षर सभक बाहुल्य हैबाक कारणसँ तथा ओकर

विशेष गठनक कारणसँ संस्कृत शब्द सभक योजनाक आवश्यकता भेल, जकर फल-स्वरूप हुनकर रचना पर्याप्त दुर्बोध भ' गेलनि। परन्तु एहि दुर्बोधताक कारणेँ हुनकर अनेक पद सभक सुन्दर कल्पना सभ अगम्य भ' गेल छनि। बिम्ब फलक आस्वादसँ वाणी जड़ तथा मंद बुद्धि होइत अछि' ई सत्य थीक; परन्तु अहाँक बिम्ब फल समान अधरक स्पर्श भेनहि विना आई हमर ई स्थिति किऐक भ' गेल ?"

"भारती जड़ा सुधीहि मंदधी बने !
जनी वदे असे सुधी मंजु भाषणें।।
मधुर-मधुर बिंब सम अधर चुंबिता नच दंते।
मधुमधूनि रसना काअदू रगतिका ही होते।।"

एहन शब्द जड़ रचना ओ कयलनि अछि। अतएव चिन्तामणराव कोल्हटकर लिखलनि अछि जे "श्रीपाद कृष्णक भावना सभक आनन्द लेबाक हेतु बुद्धिक धारकेँ तेज करय पड़ैत अछि।' तथापि 'उगिच का कान्ता गांजिता दासी दीना' वा 'सहज काशी खेल विते ललना' सदृश पद अपन अर्थ गौरव एवं स्वर माधुर्य्य दुनू दृष्टिसँ मराठी रंगमंच पर पर्याप्त लोकप्रिय भ' गेल अछि।

एहि प्रकारेँ मराठी रंगमंचकेँ समूल परिवर्त्तित क' कय कोल्हटकरक नाटक स्वयं रंगमंचसँ विलीन भ' गेल। एकर मुख्य कारण भावना सभक उत्कृष्टताक स्थान पर वैचित्र्य तथा चमत्कृति पर अत्यधिक वल देब तथा समर्थ नाट्यनिष्ठ संघर्षक अभाव अछि। लगैत अछि जे नाट्यक अपेक्षा वाक्याश्रित विनोद-युक्त सम्वाद सभक उलझन तथा रहस्यपूर्ण कथानक सभक तथा स्वर विलास युक्त संगीतकेँ हुनक नाटक सभमे अधिक स्थान प्राप्त भेल छनि। स्थायी कला मूल्य सभक अभावमे कोल्हटकरक नाट्य सृष्टि शीघ्रहि विस्मृत प्राय भ' गेल। परन्तु आनन्दक वात ई थीक जे हुनकर समकालीन नाटककार लोकनि हुनके नाट्यतंत्रक 'कुशल' उपयोग क' कय मराठीक रंगमंचक श्रीवृद्धि कयलनि अछि। अतएव कोल्हटकरकेँ 'नाटककार लोकनिक नाटककार' कहल जाइत छनि। 1896 सँ ल' कय 1911 धरिक नाट्य क्षितिज पर कोल्हटकर पर्याप्त तेजस्विताक संग चमकैत रहलाह। किर्लोस्कर, गन्धर्व भगत, वलवंत, शिवराज, ललितकलादर्श प्रभृति अग्रगण्य नाट्य व्यवसायी मण्डली आदि हुनक नाटक सभक रंगमंच पर अभिनीत क' अपनाकेँ धन्य मानलनि। वाल गन्धर्व, गणपतराव बोडस, नाना साहेब जोग-लेकर प्रभृति अभिनय कुशल नट सभ हुनक नाटक सभमे अभिनय करबाक बल पर ख्याति प्राप्त कयलनि। गड़करी, बरेरकर प्रभृति नाटककार सभ हुनका अपन गुरु मानलनि। टेंबे प्रभृतिकेँ हुनक नाट्य वाङमयमे हिमनगक उत्तुगंताक प्रतीति भेल-नि। मराठी नाट्य जगत पर हुनकर जे सर्वांगीण प्रभाव पड़ल, ओकरा हेतु चिर-काल धरि हुनक ऋणी रहत।

4

आधुनिक समीक्षाक जनक

आंग्ल संस्कृतिक सम्पर्कमे अयलाक पश्चात् उनैसम शताब्दीमे मराठी साहित्यमे नवीन-नवीन साहित्यिक विधा सभ जन्म लेलक। परन्तु ओकर मूल्यांकन तथा रसग्रहण कयनिहार समीक्षाशास्त्रक अभाव बड़ वेशी खटकैत छल। एही कारणेँ नवीन साहित्य तथा प्राचीन समीक्षा-शास्त्र एहि दुनूक बड़ विचित्र गेठँ जोड़ भ' रहल छल। 'परोत्कर्षा सहिष्णु आलोचक' नवीन विषय सभ तथा साहित्यिक विधा सभक मूल्यांकन करवा काल 'हजार वर्ष पुरान तराजूक' उपयोग कयल करैत छलाह। एहन स्थितिमे कोल्हटकर अपन समृद्ध एवं शास्त्रीय आलोचना साहित्यसँ मराठी साहित्यमे नवीन आलोचना प्रणालीक कमीकेँ दूर कयलनि। एहि क्षेत्रमे हुनक कार्य एतेक मौलिक तथा व्यापक थीक जे कुमुमावती देश पांडे सदृश मर्मज्ञ समीक्षक लोकनि हुनका असंदिग्ध रूपसँ 'आधुनिक समीक्षाक जनक' कहि क गौरवान्वित कयलनि अछि। हुनकर समीक्षा लेखनक स्वरूप एवं महत्त्व पर प्रकाश दैत वा. भ. पाठक लिखैत छथि—"आंग्ल साहित्यक समीक्षा प्रणालीक आधार ल'कय नाटक सभ तथा उपन्यासे सभक कथानक, चरित्र-चित्रण, मनोविश्लेषण, वातावरण, भाषा-शैली, आदि विषयक गुण-दोषक मार्मिक रीतिसँ विवेचन कयनिहार श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर मराठीक प्रथम समीक्षक छलाह। साहित्य-कलाक सम्बन्धमे ओ जे सिद्धांत आविष्कृत कयलनि अछि ओकरा मराठीक आधुनिक समीक्षा-शास्त्रक आधार शिला कहल जा सकैत अछि।" पाठकक ई कथन यथार्थ होइतहुँ एक दृष्टिएँ अपूर्ण थीक। किऐक तँ श्रीपाद कृष्ण मात्र साहित्य-कलाकेँ नहि, प्रत्युत सम्पूर्ण ललित कला सभक वैज्ञानिक एवं तुलनात्मक मूल्यांकन कयलनि अछि। सर्वथा अर्वाचीन मराठी साहित्यक सन्दर्भमे सेहो हुनकर समीक्षा लेखनक महत्त्व असाधारण थीक।

वस्तुतः अर्वाचीन समीक्षा सेहो पाश्चात्य समीक्षक लोकनिक देन थीक। ओहिसँ पूर्व मराठीक मौलिक साहित्यिक मूल्यांकनक अथवा समीक्षाक प्रणाली छले नहि इऐह कहब उचित हैत। एहन बात नहि अछि जे प्राचीन मराठी सन्त कवि लोकनि प्रसंगवश साहित्यक सम्बन्धमे कोनो मौलिक विचार प्रकट नहि कयलनि। परन्तु ओ अत्यल्प आओर छिडिआएल छल अतः ओकरा आधार पर एक स्वतन्त्र समीक्षाशास्त्र नहि बनि सकल। आंग्ल पूर्वकालमे नगेश तथा बिट्ठलक

'रसमंजरी' संस्कृत साहित्य शास्त्रक ऋणी थीक। पहिले पहिल अंग्रेजीक माध्यमसँ जे साहित्य-सम्बन्धी मूल्यांकन भेल ओकर आधार सेहो संस्कृतक साहित्य-शास्त्रहि छल। मराठीमे एतद्विषयक साहित्य सृष्टि भेल ओ संस्कृतक अनुवादे भरि छल ई कहब अतिशयोक्तिपूर्ण नहि हैत। गणेश शास्त्री लेलेक 'साहित्यशास्त्र', ज. वि. दामलेक 'अलंकारदर्शन' केमरेकर शास्त्रीक 'अलंकार-विलास' तथा 'अंग्रेजीक सर्वप्रथम साहित्य समीक्षा विषयक ग्रन्थ सब संस्कृत साहित्य-शास्त्रक सिद्धान्त-सभहिक पुनर्लेखन कयनिहार छल। ओहिसँ पहिलुका दुइ एक फुटकर ग्रन्थ सभक अपवाद मानिलेल जाय तँ कहय पड़त जे चिपलूणकरक 'निबन्धमाला'क समयेसँ मराठी साहित्यक समीक्षा एक सुनिश्चित आकार धारण कयलक। मराठी साहित्यमे जे विविध प्रकारक गद्य पद्यात्मक साहित्यिक विधा सभ जन्म ल' रहल छल, ओकर स्वरूपक आकलन करबाक तथा ओकर मूल्यांकन करबाक आवश्यकता अनुभव होमय लागल छल। श्रीपाद कृष्ण अपन समीक्षा लेख सभक द्वारा एकरे पूर्ति कयलनि।

साहित्यक सम्बन्धमे वैज्ञानिक विवेचन क'कय समीक्षा-शास्त्रक कोनो निश्चित सिद्धान्त सभक मूल्य स्थिर करब तथा तद्द्वारा साहित्यिक रचना सभक परीक्षा करब ई दुनू बात साहित्यक समीक्षाक अंग थीक। एहि दुनूक कोल्हटकर कुशलता-पूर्वक प्रयोग कयलनि। हुनकर समीक्षा लेख सभक द्वारा 'वाङ्मय सम्बन्धी तात्त्विक एवं तान्त्रिक प्रश्न सभक चर्चा तँ होइतहि छल, समीक्षा सम्बन्धी सिद्धांत सभक मूल्य सेहो स्थिर होमय लागल छल, जकर आधारपर साहित्यिक रचना सभक समालोचनाक मार्ग सेहो प्रशस्त भ' गेल छल। हुनक काल वाङ्मयगत कल्पनारम्यताक श्रीगणेशक काल छल। एहि बातकेँ ध्यानमे रखितहुँ ओ साहित्य विषयक तन्त्र (टेकनीक) क सेहो विवेचन कयलनि।" कुसुमावती देशपांडेक एहि कथनमे आओर 'पुनश्च' क आवश्यकता अछि। हुनकर सौन्दर्यवादकेँ बुद्धि-प्रामाण्यक कठोर अधिष्ठान प्राप्त छलनि। हुनकामे शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि सेहो छलनि। अतएव 'सौन्दर्य संकल्पना' सभक विवेचन सेहो ओ शुद्ध वैज्ञानिक पद्धतिसँ कयलनि। इएह कारण अछि जे हुनक समीक्षामे आस्वाद्यत क गुण ओतेक नहि अछि; जतेक विश्लेषणात्मकताक थीक। कोल्हटकरक समीक्षाकेँ विज्ञान तथा ललित वाङ्मयक बीचक विधा मानलनि अछि। परन्तु हुनकर समीक्षा लेखनमेँ हुनकर झुकाव वैज्ञानिकताक दिसहि अधिक छलनि। एक दृष्टिसँ हुनक ई प्रवृत्ति मराठी साहित्यक उपकार सेहो कयलक अछि। कोल्हटकर अपन साहित्यिक जीवनक श्रीगणेशहि समीक्षात्मक लेख सभसँ कयलनि। 'विक्रमशशिकला, नामक नाटकक सम्बन्धमे हुनक समीक्षात्मक लेख 1893 मे 'विविधज्ञान विस्तार' मे प्रकाशित भेल। ओकरा बाद 1928 धरि ओ अनेक रास समीक्षात्मक लेख लिख-लनि। एहिमे पुस्तक सभक समीक्षाकेँ महत्त्वपूर्ण स्थान भेटल। ओ पुस्तक सभक

समीक्षाक माध्यमे अनेक साहित्य सम्बन्धी समस्या सभक उद्‌भावना कयलनि अछि। पुस्तकक समीक्षाक अपेक्षा हुनक लेख सभमे साहित्य विषयक वैज्ञानिक चर्चो अधिक दृष्टिगोचर होइत अछि। न. चि. केलकरक 'तोतयाचे बंड' नामक पुस्तक पर ओ 111 पृष्ठक पैध समीक्षा लिखलनि अछि जाहिसँ हुनक समीक्षा शक्तिक पता लगैत अछि। परन्तु एहि समीक्षाक शिकायत करैत केलकरक कहब छनि—"एहिमे पुस्तकक सन्बन्धमे बड़ थोड़ लिखल गेल अछि, शेष सम्पूर्ण लेख नाट्यकलाक सम्बन्धमे एक स्वतन्त्र निबन्ध थीक।" ओ एहि समीक्षाकेँ "नाट्य-विषयक तत्त्वज्ञान प्रचण्ड विवेचन' सेहो कहलनि। कोल्हटकर अपन समीक्षात्मक लेख सभमे साहित्यिकताक जे विस्तृत विवेचन कयलनि अछि, जकर किछु कारण थीक। हुनकासँ पूर्व एतद्विषयक साहित्यक अभाव हैबाक करणेँ, पुस्तक सभक समीक्षा करबा काल एहि प्रकारक साहित्यिक विधाक स्वरूप, संरचना, तन्त्र अदिक सांगोपांग विवेचन क'कय प्राप्त निष्कर्ष सभक आधारपर हुनका साहित्यिक रचना सभक समीक्षा करय पड़लनि। 'तोतयाचे बंड' नामक मराठी नाटकक समीक्षा सभमे ललित कला सभक विस्तृत विवेचन द्वारा ओ तद्विषयक मूल्य निश्चित कयलनि तथा ओकर आधार पर एहि नाटकक समीक्षा कयलनि। कोल्हटकर जाहि पुस्तक सभक समीक्षा कयलनि ओ आई विस्मृत प्राय थीक; तथापि कोल्हटकरक समीक्षा एखन सेहो टटका प्रतीत होइत अछि। एकर कारण हुनका द्वारा समीक्षाक मूलभूत सिद्धान्त सभ, मूल्य सभ तथा वैज्ञानिक विचार सभकेँ देल गेल प्रमुखता थीक।

कोल्हटकर द्वारा कयल गेल पुस्तक-समीक्षामे स्वाभाविकतया नाटक सभकेँ प्राथमिकता देल गेल अछि। 'संगीतशाप संभ्रम', 'संगीत चन्द्रसेना', 'संगीत मातृ-शिक्षा प्रभाव', 'संगीत रूढ़ि विनाशन', 'संगीत सौभद्र' इत्यादि पन्द्रह नाटक सभक विस्तृत समीक्षा ओ कयलनि अछि। मजुमदार-कृत 'किर्लोकर चरित्र'क मार्मिक परिचय करौलनि अछि। तीन नाट्य सम्बन्धी पुस्तक सभक विवेचना पूर्ण प्रस्तावना लिखलनि अछि। एकर अतिरिक्त अन्य लेख सभमे सेहो ओ नाट्य कला तथा नाट्य साहित्यक सांगोपांग विवेचन कयलनि अछि। कुल मिला क' सम्पूर्ण लेख संभार चारि सै पृष्ठ सममे समाहित भेल अछि।

नाटकक व्याख्या करबा काल कोल्हटकर लिखैत छथि—"कथात्मक काव्यक समावेश श्रव्य काव्यमे कयल जाइत अछि। ओही मे जखन नाट्य नामक दृश्य भाग जोड़ि देल जाइत अछि, तखन ओ नाटक नामक काव्य बनि जाइत अछि।" महिम भट्ट अपन 'व्यक्तिविवेक'मे कहलनि अछि—"विभाव, अनुभव आदिक वर्णनसँ जे आनन्दक निर्माण होइत अछि, ओ 'काव्य' कहबैत अछि तथा नट सभक द्वारा जखन ओकर अभिनय कयल जाइत अछि तखन ओ 'नाट्य' भ' जाइत अछि।" 'कथात्मक काव्य' शब्दसँ संविधानक सम्वाद इत्यादि नाटकक वाङ्मयात्मक भागक

बोध होइत अछि तथा 'दृश्यात्मक नाट्य'सँ नाट्य कला तथा ओकर अभिनय एवं नेपथ्य आदि उपांग सभक सूचना भेटैत अछि। ललित कला सभक कृति सभ नेत्र एवं कर्ण द्वारा ग्राह्य होइत अछि।' हुनकर मत छलनि जे नाट्य कला एकहि संग उक्त दुनू ज्ञानेन्द्रिय सभकेँ तृप्त करैत अछि; एतावता ओ सर्वश्रेष्ठ कला थीक। भारतीय नाट्य-शास्त्रमे नाट्य कलाकेँ सब कला सभक आश्रय-स्थान मानल गेल अछि। कोल्हटकर सेहो नृत्य, संगीत, चित्र आदि कला सभकेँ नाट्यक पूरक मानलनि अछि। एहिसँ ज्ञात होइत अछि जे कोल्हटकरक नाट्य विषयक धारणा कतेक व्यापक तथा सर्वसंग्राहक छल।

रंजन द्वारा आनन्द निर्मितकेँ ओ नाट्य कला तथा अन्य कला सभक प्रधान उद्देश्य बतौलनि अछि। 'संगीत प्रेमाभास' नामक नाटकक समीक्षा करबा काल ओ लिखलनि अछि—"ललित वाङ्मयक अन्य शाखा सभक समानहि नाटकक सेहो मुख्य कार्य 'रसिक मनोरंजनए' थीक।" एतय मनोरंजन शब्दकेँ ओ व्यापक अर्थ सभमे प्रयोग कयलनि अछि। मनोरंजन बौद्धिक सेहो होइत अछि आओर भावनात्मक सेहो होइत अछि। जिज्ञासासँ तथा भिन्न वस्तु सभक अपूर्व संयोगसँ भेनिहार अर्थात् अलंकार सभक चमत्कृतिसँ भेनिहार आनन्द भौतिक होइत अछि। भावना सभक तृप्तिसँ भेनिहार रसात्मक आनन्दक स्वरूप भावनात्मक होइत अछि। कोल्हटकरक कथन छनि जे "कोनहु वस्तुक मनोरंजनक प्रतीतिक हेतु ओहि वस्तु द्वारा कल्पना तथा बुद्धि दुनूकेँ सन्तोष हैब आवश्यक थीक।"

'वैचित्र्य काव्यनिष्ठ थीक तथा आनन्द रसिक निष्ठ थीक तथा वैह वैचित्र्य एहि आनन्दक कारण बनैत अछि। ई कोल्हटकर द्वारा प्रस्तुत अभिनव सिद्धान्त थीक। पाश्चात्य समीक्षा-शास्त्रमे 'सौन्दर्यकेँ तथा संस्कृत काव्य-शास्त्रमे 'रस' केँ काव्यानन्दक जनक मानल जाइत अछि। वाङ्मयक विराट एवं व्यापक स्वरूपक आकलन करबा काल हुनका ध्यानमे अयलनि जे ई लक्षण अपूर्ण थीक। अतः ओ कहलनि जे काव्यक आत्मा 'वैचित्र्य, चमत्कृति अथवा अपूर्णता' थीक। कोल्हटकरक कसौटी कोनो कृतिक सरसताक हेतु ई अछि जे "निसर्गक झुकाव वैचित्र्यक दिस तथा कलाक झुकाव ऐक्यक दिस थीक। कल्पनामे विद्यमान उद्देश्यकेँ विकृत नहि करैत निसर्गगत वैचित्र्य जाहि कृतिमे तद्वत् बनल रहैत अछि वैह कृति उत्कृष्ट थीक।" 'वैचित्र्य' शब्दकेँ सेहो ओ एक विशिष्ट एवं व्यापक अर्थमे लेलनि अछि। ओकर व्याख्या करैत ओ कहैत छथि जे 'वैचित्र्यमे सौन्दर्यक समावेश तँ होइतहि अछि, संगहि करुण, वीर, भयानक, अद्भुत, शान्त इत्यादि रस सभक विविध आविष्कार सभक सेहो होइत अछि।" 'वेणीसंहार'क रणक्षेत्रक तथा 'हेमलेट'क श्मशानक दृश्य 'सौन्दर्य' मे परिगणित नहि होइछ, परन्तु ओ 'वैचित्र्य' मे परिगणित भ' सकैत अछि।" दुःखान्त काव्य, नाटक अथवा उपन्याससँ हमरा रसास्वादन होइत अछि ओकर संवेदना अनुकूले हो एहन बात नहि होइछ। ई

रस प्रसंग सुन्दरे हो एहन वात नहि होइछ। तथापि दुष्यन्त आओर शकुन्तलाक प्रथम मिलनसँ ल'कय अँथेलो द्वारा कयल गेल डेस्डिमोनाक हत्या धरिक अनुकूल एवं प्रतिकूल संवेदना सभकेँ जन्म देनिहार समग्र रस प्रसंग वैचित्र्य शब्दक कक्षा मे आवि जाइत अछि।" कोल्हटकरक एहि सिद्धान्त पर अनेक आक्षेप उठाओल जा सकैत अछि। तथापि ई तँ मानहि पड़त जे साहित्यक क्षेत्रकेँ अधिक व्यापक बनयवाक प्रयत्न एहि सिद्धान्तक पाछाँ काज क' रहल अछि। ओ इऐह करय चाहैत छथि जे साहित्य एक अत्यन्त व्यापक वस्तु थीक तथा केवल रस एवं सौन्दर्य क परिभाषामे अयनिहार अभिव्यक्तिए नहि; प्रत्युत जीवनक कोनहु स्वरूपक अभिव्यक्तिसँ ओकरा परहेज नहि अछि।

कोल्हटकर महाराष्ट्रमे 'कला कलाक हेतु' माननिहार दलक नेता छलाह। हुनकर स्पष्ट मत छलनि जे विशुद्ध वाङ्मय, विज्ञान तथा नीतिक कार्य क्षेत्र एक दोसरासँ सर्वथा भिन्न थीक तथा ओकरा एक दोसराक क्षेत्रमे जबरदस्ती कब्जा नहि करबाक चाही। हुनकर कहब छलनि जे काव्य द्वारा मनुष्य पैइसा, नाम, व्यवहारज्ञान तथा संकट निवारक उपदेश हासिल क' सकैत अछि; परन्तु ई सब गौण बात थीक। हुनकर क्रान्तिकारी विचार तँ एहि सीमा धरि पहुँचल अछि जे "बोधक वाङ्मयक सबलता एवं दुर्बलतासँ कोनो सम्बन्ध नहि अछि। ललित वाङ्मय जँ अपना आपमे उत्कृष्ट हो तँ ओकर बोध-हीन अज्ञान जनित अथवा अनीति परक भेलो पर सेहो ओकर योग्यता पर कोनो आँच नहि अबैछ।" ओ लिखैत छथि—"शेक्सपियरक नाटकमे प्रदर्शित अज्ञान भ्रमोत्पादक भ' सकैत अछि तथा क्रांगीवक नाटक नैतिक दृष्टिसँ ग्राह्य भ' सकैत अछि—परन्तु विशुद्ध वाङ्मय हैबाक कारणेँ ओकर महत्त्व कम नहि होइत अछि।" विचार सभमे अश्लीलताकेँ ओ बड़ पैघ विवाद माननलि, परन्तु संगहि ओ ई सेहो माननलि अछि जे सौन्दर्यक स्पर्शसँ अश्लीलतामे सेहो एक प्रकारक मधुरता आवि जाइत अछि। ओ लिखैत छथि जे "अश्लीलता प्रत्येक स्थितिमे निन्दनीय थीक। परन्तु ओ जँ कोनो एहन सुन्दर विचारसँ जोड़ल जाय जे ओकरा दूर कयला सँ ओ सुन्दर विचारे ने प्रस्तुत कयल जा सकय, तँ ओ अश्लीलता क्षम्य थीक। किऐक तँ एहि सब अवसर सभ पर सुन्दर विचारकेँ मुख्य हैबाक कारणेँ सभक ध्यान ओहि पर केन्द्रित रहैत छनि आओर ओहि गौण अश्लीलताक दिस नहि जाइछ।"

एकर अर्थ ई कदापि नहि जे हुनकर दृष्टिमे नीतिक महत्त्व कम छलनि। ओ ई जनैत छलाह जे 'नीति परक अथवा भावना सभक शुद्धताक ढाँचामे ढालनिहार ललित वाङ्मयक महत्त्व अत्यधिक अछि।' परन्तु ओ बल द'कय ई बात कहलनि अछि जे नीति तथा बोध वाङ्मयक शक्ति एवं अशक्तिक मानदण्ड नहि भ' सकैछ। 'काव्यक निःसीम आनन्दमय प्रदेशमे सीमित आकांक्षा सभ तथा संकुचित ध्येय सभक अश्वारोही अश्व सहित प्रविष्ट ओहि प्रदेश पर अधिकार क' लेथि तथा

ओतय अपन ध्वजा गाड़ि देथि ई हुनका पसिन नहि छलनि। हुनका लगैत छलनि जे एहन कलार्स साहित्यक क्षेत्र संकुचित भ' जायत।

कोल्हटकरक कला-मीमांसाक अनुसारेँ प्रत्येक कलाकार कलाकृतिक निर्माणक समय जनैत अथवा अनजान कोनो नियम-सभक पालन अवश्य करैत छथि। निसर्गजात वस्तु सभ सेहो नियममे आवद्ध भ' कय काज करैत अछि। परन्तु ओ सब अनजानमे होइत रहैत अछि; अतः ओहिमे संगति दृष्टिगोचर नहि होइछ। कलाकारक प्रतिभा संगतिक निर्माण करैछ। निसर्गजात वस्तु तथा कलाकारक प्रतिभाक आदान प्रदानसँ कला कृतिक सृजन होइत अछि अर्थात् कलाकार असंगति मे सँ संगति तथा अव्यवस्थामे सँ एक व्यवस्थाक निर्माण करैत छथि। कोल्हटकर कहैत छथि जे "वस्तुक भिन्न-भिन्न अवयवक पात्रताक अनुरूप ओकर प्रस्तुतीकरण कोना कयल जाय एकर विचार करब कलाक मुख्य कार्य थीक।" कलाकारक प्रतिभा कलात्मक अनुभूतिक विविध उपादान सभक संयोजन करैत छथि तथा तद्द्वारा एक सुश्रृंखल एवं ऐकात्म्युक्त कालकृतिक निर्माण करैत छथि।" एहि संयोजनक नियम सभक संकलन कयल जाय तँ ओहिसँ कलात्मक रचनासँ सम्बन्धित एक विशेष शास्त्र तैयार भ' जाइत अछि। कलाकृति द्वारा अनुसरण कयल गेनिहार नियम सभक विचार करैत कोल्हटकर व्यापक कलात्मक अनुभूतिकेँ अनिवार्य बतौलनि अछि। कला कृति सभक व्यापक अध्ययन कयल गेनिहार नियमे सर्वानुमत भ' सकैत अछि तथा ओहि नियम सभकेँ समेटनिहार शास्त्रे सर्वसम्मत भ' सकैत अछि। नियमक उत्पत्ति कलाक हेतु आवश्यक उपादानेसँ होइत अछि एकर निश्चय भ' गेलाक पश्चाते शास्त्रमे स्थान देल जा सकैत अछि। ई एक शर्त्त कोल्हटकर एहि विषयमे राखि देलनि अछि। बा. ल. कुलकर्णीक ई कथन सत्य थीक जे "विश्लेषण कयला तथा प्रत्येक विषयक नियम निर्धारण मे प्रवीण हुनक बुद्धि तर्क, अनुमान आदि साधन सभक आश्रय ल'कय ललितकला सभक दिस चलैत अछि तथा ओकर संरचनाक नियम खोजि क' बहार करैत अछि।"

नाटकक विविध वाङमयात्मक अंग सभमे सँ संविधानिक विषयमे कोल्हटकर अधिक विस्तारसँ विचार कयलनि अछि। 'दोन सामाजिक नाटके 'नामक समीक्षात्मक लेखमे ओ स्पष्ट कयलनि अछि जे संविधानक तीन गुण विशेष महत्त्वपूर्ण होइत अछि—1. एकोद्देश्यत्व, 2. निसर्गसिद्धता, 3. स्वतन्त्रता। हुनकर विशेष बल एहि बात पर छलनि जे नाटकके 'एककेन्द्रिक' हैबाक चाही। हुनकर कथन छनि—" अनेक किरण जखन एक बिन्दु पर केन्द्रित होइत अछि तखन पैघ बिन्दु प्रकाशमान भ' जाइत अछि। ओही प्रकारेँ नाटकक प्रत्येक दृश्य, वाक्य तथा शब्दक सेहो एक निश्चित केन्द्र हैबाक चाही तखने ओ दर्शक लोकनिक मन पर अपन सुन्दर छाप छोड़ि सकत।" एकरे कहल जाइछ 'एकोद्देश्यत्व'। कथानकमे जाहि कोनो घटना सभक समावेश हो ओकरा पाछाँ नैसर्गिक कार्य-कारण-भाव

हैबाक चाही ।" वास्तविक जगत्मे दैवक खेल कतेक मात्रामे देखबामे अबैत अछि ओकर अपेक्षा नाटकक जगतमे ओकरा अधिक मात्रामे प्रस्तुत कयल जाय तँ सम्पूर्ण संविधानक अस्वाभाविक बनि जाइत अछि। नायक एवं नायिका सभक सुख-दुःख जाधरि नैसर्गिक नियम सभक अनुरूप अबैत अछि तथा ओकर वर्णनमे अस्वाभाविकता नहि रहैत अछि ताधरि ओकरा देखिक' दर्शकक हृदयमे अनायासहि आनन्द आओर विषादक उत्पत्ति होइत अछि ।" कोल्हटकर एकरे 'निसर्ग-सिद्धता'क नाम दैत छथि । संविधानकगत प्रत्येक वस्तुक रचना नाटकसँ बाहरक वस्तु सभक ने भ'कय नाटकक अन्तर्गत वस्तु सभहिर्स तँ ओकरा 'स्वतन्त्रता' कहल जाइत अछि। ओ एक आओर महत्त्वक बात कहलनि अछि। ओ ई जे 'नाटकक आत्मा चिन्तन नहि, कृति थीक।" हुनका मतमे संविधानकमे कृतिके प्रधानता रहय तँ अभिनयक हेतु अधिक अवसर भेटैत अछि; चिन्तनकेँ प्रधानता देल गेल हो तँ ओहिसँ संविधानक गति अवरूद्ध भ'जाइत अछि।

संविधानक मे रहस्यमयता रहय तँ हुनकर मतमे ओकर रंजकता बढ़ि जाइत अछि। नाटक तथा रहस्यसँ सम्बन्धित किछु एक मौलिक विचार ओ 'तोतयाचे बंड' नामक नाटकक समीक्षा मे प्रकट कयलनि अछि। ओ कहैत छथि—"रहस्य-मय काव्य मे रहस्य स्फोटसँ उत्पन्न भेनिहार आनन्द सेहो बौद्धिक स्वरूपक होइत अछि···रहस्य-स्फोटसँ उद्भुत चमत्कारक आनन्दक अनुभूतिसँ पूर्व रसिक व्यक्तिक कृर्त्तत्व विशिष्ट कल्पना शक्तिक तथा विवेक शक्तिक सेहो उपयोग करय पड़ैत अछि। मनोविज्ञानक नियम अछि जे मनक कोनो शक्तिकेँ उपयुक्त व्यवसाय भेटि जाय तँ ओकरा आनन्द होइत छैक। एहि कारणेँ जखन मन कोनो रहस्यक पता लगयबामे जुटल रहैत अछि, तखन जाधरि रहस्य-रहस्यक रूपमे बनल रहैत अछि, ताधरि तँ ओकरा आनन्दक अनुभूति होइतहि अछि, परन्तु रहस्यक पता लागि गेला पर सेहो आनन्द होइत अछि आओर ओकर मात्रा आतबे अधिक होइत अछि, जतेक रहस्यक पता लगयबामे विलम्बक मात्रा अधिक होइत अछि तथा ओकरा सम्बन्धमे कल्पना द्वारा उपयोगमे आनल गेल विकल्प सभक संख्या अधिक होइत अछि···" रहस्यकेँ खोलबाक प्रयत्नमे कवि द्वारा स्थान-स्थान पर जानि बूझि क' प्रस्तुत कयल गेल भ्रमोत्पादक सामग्रीमे सँ वास्तविकताक खोज अछि, अतः एहि कार्यमे कल्पना एवं बुद्धिक विशेष सहायता अपेक्षित होइत अछि। एहि कारणेँ कखनो एहन होइत अछि जे व्यक्ति अपन कल्पनाक आश्रयेँ उक्त रहस्यकेँ उद्भेदक सम्बन्धमे जे धारणा बनि बैसैत अछि, ओहिसँ सर्वथा भिन्न स्वरूपक ओ सिद्ध होइत अछि आओर एहिसँ ओकर आश्चर्य एवं आनन्दक मात्रा अधिक भ' जाइत अछि।" कोल्हटकरक नाटक सभमे रहस्यमयताक जे एतेक आधिक्य हम देखैत छी, ओकरा पाछाँ ओकर की आशय रहल हैत ई ध्यान मे आबि जाइत अछि। रहस्यक कारणेँ जँ अन्य प्रकारक काव्यानन्दमे विघान उपस्थित होइत हो तँ एहन

स्थितिमे कुशल कवि रहस्यकेँ अपन काव्यमे स्थान नहि देताह।' इहो ओ कहि देलनि अछि। रहस्यक संग-संग ओ संविधानक रंजकतामे वृद्धिक हेतु 'चित्तवेधकत्व' तथा 'चिताकर्षत्व' नामक गुण सभकेँ सेहो आवश्यक मानलनि अछि। नाटकक संविधानकक प्रत्येक अंश एवं दृश्यसँ रसिकक चित्त विद्ध भ' जयबाक चाही संगहि कथानक विषयक उत्सुकता सेहो उत्पन्न भ' जयबाक चाही जाहिसँ 'आगाँ की हैत' एहि उत्कंठासँ संविधानक प्रवाहक संगहि संग ओ आगाँक दिस आकृष्ट होइत चल जाय। संविधानक जन्य कुतूहलक दबाब कतहु सेहो कम हैबाक चाही। जतय 'चित्तवेधकत्व' रसिक व्यक्तिकेँ नाटकक कोनो सरस दृश्य पर पहुँचा क' तन्मय क' दैत अछि, ओतय 'चित्ताकर्षकत्व' ओकर उत्कण्ठाकेँ जगाक' ओकरा संविधानकक प्रवाहक संगहि-संगखीचैत ल' चलैत अछि।

नाटकक अतिरिक्त उपन्यास, कहानी तथा कविता ई तीन मुख्य साहित्यिक विधा सभक सम्बन्धमे सेहो कोल्हटकर अपन समीक्षात्मक लेख सभमे व्यापक रूपसँ विवेचन कयलनि अछि। भिन्न-भिन्न मनुष्य सभक स्वभाव तथा ओकर भावना सभ उपन्यासक प्रमुख विषय होइत अछि। अतः ओ मानलनि अछि जे जीवनक अनुभूति सभक संग्रह करबाक विशेष मनोवृत्ति उपन्यास-लेखनक हेतु आवश्यक अछि। ओ आगाँ जा क' कहैत छथि जे उपन्यास-लेखककेँ एकहि संग अन्तर्मुख एवं बहिर्मुख रहय पड़ैत छनि। एहि कथनकेँ स्पष्ट करैत कोल्हटकर कहैत छथि—"उपन्यास-लेखकमे मनुष्य-स्वभावक मार्मिक ज्ञान, वर्ण्य व्यक्तिसँ तादात्म्य, विभिन्न भावना सभक मुखर करबाक सामर्थ्य तथा पाठककेँ प्रभावित क' सकनिहार कथा-कथनक कौशल आदि गुण सभक उपस्थिति नितांत आवश्यक अछि। एकर संगहि जगतक घटना चक्रकेँ तटस्थ भावसँ देखबाक तथा निर्विकार मनसँ ओहि पर विचार करबाक सन्तुलित मानसिक प्रवृत्तिक सेहो हैबाक चाही। एहि गुण सभक उपलब्धिक हेतु मनुष्यक वैचित्र्य प्रिय तथा बहिर्मुख दृष्टि वाला हैब आवश्यक अछि। एकर विपरीत एहि मानसिक प्रवृत्तिक हेतु एकरा 'एकमार्गी' तथा अन्तर्मुख दृष्टि वाला हैब आवश्यक अछि। नाटक तथा उपन्यास एहि दुनूक समावेश ओ 'काव्य' नामक व्यापक विधा मे करैत छथि। कोल्हटकर अनेक स्थान सभ पर 'काव्य' शब्दक प्रयोग 'ललित वाङ्मय' क व्यापक अर्थ मे कयलनि अछि; परन्तु किऐक तँ नाटक दृश्य होइत अछि आओर उपन्यास श्रव्य होइत अछि, अतः ओहि मे महत्त्वपूर्ण भेद सेहो होइत अछि' ई कहि क' कोल्हटकर एहि दुनू साहित्यिक विधा सभक विस्तृत तुलना कयलनि अछि। नाटकक अभिनयमे समयक सीमा होइत अछि। पात्र सभक भाव एवं स्वभावक अभिव्यक्ति करबाकक साधन सेहो सीमित होइत अछि। अतः प्रत्येक बातमे किफायतसँ काज लेमय पड़ैत अछि। परन्तु उपन्यासक हेतु ई सब बन्धन नहि होइछ। ओकर क्षेत्र विस्तृत एवं व्यापक होइत अछि। तइयो नाटक वा उपन्यासमे रसक आत्यंतिक उत्कर्षक साधनक हेतु

रसिक लोकनिक चित्तकेँ कोनहु खास विषय पर केन्द्रित करब आवश्यक होइत अछि। अतः ओ बल पूर्वक ई कहलनि अछि जे एहि उद्देश्यक प्राप्तिक हेतु संविधानक दुइ-एक व्यक्ति सभहिकेँ प्रधानता देमय पड़ैत अछि। कलाकृतिक उत्कृष्टता मे वृद्धि करबाक हेतु कलात्मक संयमक आवश्यकताक सेहो ओ प्रतिपादन कयलनि अछि। ओ ई महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त प्रस्ततु कयलनि अछि जे "थोड़हिसँ साधनसँ बड़ पैध कार्य सिद्ध क' कय रसिक लोकनिक चित्तमे चमत्कृतिकेँ जन्म देब प्रत्येक कला सभक एक-मात्र विशेष उद्देश्य थीक।"

सन् 1922 मे द्वितीय महाराष्ट्र कवि सम्मेलनक अध्यक्ष पदसँ ओ जे विचार प्रवर्त्तक भाषण देलनि ओहिमे काव्य वाङ्मयक बहुत सूक्ष्म एवं मूलस्पर्शी विवेचन कयलनि अछि। ओ स्पष्ट कयलनि जे 'काव्यक सौन्दर्य उभयनिष्ठ वस्तु थीक। ओ जतय विषय एवं भाषा क अभिनवता तथा कविक विशिष्ट मनोरचना पर सेहो अवलम्बित रहैत अछि। ई महत्त्वपूर्ण विचार ओ 'काव्यसर्जन' तथा 'काव्यास्वाद' क सन्दर्भमे प्रस्तुत कयलनि अछि। कवि द्वारा 'काव्यसर्जन' तथा रसिक द्वारा 'काव्यास्वाद' एहि दोहरा आदान-प्रदानसँ रसोत्पत्तिक प्रक्रिया पूर्ण होइत अछि। काव्य वस्तुक एक भेला पर सेहो कवि लोकनिक मनोभावनामे अन्तर हैबाक कारणेँ ओकर काव्यगत अभिव्यक्तिमे सेहो अन्तर आबि जाइत अछि। सर्जन प्रक्रियामे कवि भेदसँ जहिना भेद उत्पन्न होइत अछि, ओही प्रकारेँ आस्वाद प्रक्रियामे सेहो रसिक भेदसँ भिन्नता हैत। 'किऐक, 'काव्यक आस्वाद रसिक निष्ठ होइत अछि' तथा ओहि 'आस्वादक स्वरूप रस ग्राहकक पात्रता पर निर्भर करैत अछि।' कवि प्रतिभाक रूप स्पष्ट करबाकाल कोल्हटकर ई एक मौलिक विचार प्रस्तुत कयलनि अछि जे 'कवि वैचित्र्यक निर्मितिक हेतु कल्पना-शक्तिक बल पर भिन्न-भिन्न पदार्थ सभक विभिन्न एवं अभूतपूर्व रूप सभमे संयोजन करैत छथि। एनमन इऐह 'संकल्पनाक उपयोग करैत आगाँ जा क' बा. सी. मर्ढेकर बल पूर्वक कहलनि अछि जे सौन्दर्य एवं वैचित्र्य एहि दुनू कल्पना सभमे कोनो विरोध नहि अछि। ओ लिखैत छथि—"जँ क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः' केँ सौन्दर्यक स्वरूपक यथार्थ निरूपण मानल जाय तँ एहि लक्षणमे तथा काव्यक वैचित्र्यात्मकतामे कोनो विरोध नहि अछि।" जे वस्तु स्वभावतः सुन्दर हैत ओ प्रतिभाक स्पर्शसँ सेहो सुन्दर देखबामे अयबे करत; परन्तु 'काव्य क काल्पनिक सृष्टिमे स्वरूपतः भिन्न सामान्य वस्तु सेहो अपनासँ भिन्न अनुभव कयनिहार व्यक्ति द्वारा अभिनव स्वरूपमे प्रस्तुत कयल जयबाक कारणेँ सुन्दरे प्रतीत होमय लगैत अछि।' एक विशेष अनुभूति काव्यमे संक्रान्त भेला पर सर्जनक प्रक्रियामे कोन प्रकारेँ सौन्दर्यपूर्ण भ' जाइत अछि, इऐह बात कोल्हटकर उपरोक्त कथनमे कहलनि अछि।

अपन समीक्षात्मक लेख सभमे कोल्हटकर प्रतिभाक अपूर्व वस्तु-निर्माण क्षमता

पर विशेष वल देलनि अछि; अतः हुनक साहित्यक विविध प्रकारक परम्परागत रूढ़ि सभ तथा साहित्यिक सम्प्रदाय सभक तीव्र आलोचना करव स्वाभाविके छल। 'कल्पना पर रूढ़ि सभक आवरण आवि गेलाक कारणें ओ एकहि लीक पर चलय लागि जाइत अछि, जाहि सँ ओकर दृष्टि एवं गतिक दिशा एकहि वनल रहैत अछि।' एहन रूढ़िवादिताक कारणें साहित्यिक अभिव्यक्तिमे संकुचितता आवय लागि जाइत अछि तथा किछु समयक पश्चात् ओ निर्जीव भ' जाइत अछि, ई बात कोल्हटकर नीक जकाँ बुझैत छलाह। ओ स्वतन्त्र प्रतिभाक इऐह दुइ व्यवच्छेक लक्षण कहलनि अछि—1. रूढ़ि विषयक तीव्र अनास्था तथा 2. प्रवल आत्म विश्वास। सत्य प्रतिभाशाली व्यक्ति रूढ़ि सभक सीमाक अवहेलना क' कय मौलिक रचना करैत छथि तथा साहित्यक श्री वृद्धि करैत छथि। अन्य लेखकगण पुरान परम्परा सभहिक लीक पीटैत रहैत छथि। परपुष्टवाङ्मयक प्रति हुनका घोर अनास्था छलनि। ओ लिखैत छथि—"परतन्त्र राष्ट्रक सभानहि वाङ्मयक सेहो कोनो सम्मान नहि होइछ।" अंग्रेजीसँ अनूदित, रूपांतरित तथा अन्य ग्रन्थ सभक आधार पर रचित ग्रन्थ सभक जे आधिक्य दृष्टिमे अवैत अछि, ओकरा ध्यान मे राखिक' ओ लिखैत छथि—'हमर लेखकवृन्द तँ वड़ पैध परिमाण पर अन्य ग्रन्थकार लोकनिक प्रतिबिम्ब वर्द्धक 'शीशमहल' वनि वैसल छथि।" जाहि प्रकारें सामान्य लेखक एक निश्चित रूढ़िक अनुसरण करैत छथि, ओही प्रकारें समीक्षाकार सेहो परम्परागत मूल्य सभक कसौटीए पर नव साहित्यकें कसबाक प्रयास कयल करैत छथि। नवीनताक प्रति असहिष्णुताक कारणें तथा कोनो पूर्वाग्रह सभक कारणें साहित्यिक परिवर्त्तन मर्मकें सेहो ओ नहि बुझि पबैछ। 'स्वतन्त्र ग्रन्थ रचना पर मत देबामे कनेको पात्रता नहि रहितहुँ सेहो अपन मत देवाक धृष्टता कयनिहार' समीक्षक लोकनिक विषयमे लिखैत काल हुनक लेखनी अधिक तीक्ष्ण भ' उठैत छनि। ओ लिखैत छथि—'कल्पनाक जे नवीनता रसिक व्यक्ति सभक भ्रूभंगिमामे आश्चर्य आओर आनन्द भरि दैत अछि, जकरा देखिक' एहि बुद्धिहीन पुरुष सभक भ्रूकुटी तनि जाइत छनि। जमीन पर रेंगनिहार ई नीच कीड़ा गरुड़ पक्षीक ऊँच उड़ान कें की जानय? दुइ एक श्लोक रटि क' फुलि क' कुप्पा भेल एहि पिंजराक तोता कें की ज्ञान जे ओकरा अतिरिक्त अन्य कोनो विद्या एहि संसारमे थीक?" ओ स्वयं परम्परा विरोधी छलाह, एहि कारणें परम्परावादी समीक्षक लोकनिक विरोध हुनका सहय पड़लनि। अतः वस्तु स्थिति पर प्रकाश देबा काल हुनक लेख सभमे तीक्ष्णताकें आवि जायब स्वाभाविके छल।

चरित्र-लेखनक विषयमे ओ जे भूमिका अपनौलनि, तकरा देखलासँ स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे हुनकर वृति कतेक आधुनिक छलनि तथा हुनकर विचार कतेक प्रगतिशील छलनि। 'किर्लोस्कर यांचे' चरित्र नामक समीक्षात्मक लेख सभमे अण्णा साहेब किर्लोस्करक विषयी वृत्तिक निःसंकोच रूपसँ उल्लेख क' कय

चरित्र-लेखन सम्बन्धी सम्पूर्ण प्रथा सभकेँ ओ तोड़ि देलनि। परन्तु हुनकर एहि उल्लेखक उद्देश्य मात्र इऐह नहि छलनि जे चरित्र नायकक सम्पूर्ण सत्य बात सभक सोझाँ आबि जाय। हुनका लागलनि जे किर्लोस्करक एहि वृतिक प्रभाव हुनकर साहित्यिक रचना सभ पर सेहो पड़लनि अछि आओर मात्र एहि प्रभावक दिस लोकक ध्यान आकर्षण करवे हुनक एहि उल्लेखक मुख्य उद्देश्य छलनि। कोल्हटकर कहैत छथि—"उपरोक्त आख्यायिकाक महत्त्व एहि हेतु अछि जे ओहिसँ अण्णा साहेबकेँ विषय लम्पट स्वभाव क पता चलैत अछि। एही स्वभावक कारणेँ ओ सफलतापूर्वक श्रृंगाररसक दृश्य प्रस्तुत क' सकलाह। हुनकर 'रामराज्य वियोग' नामक नाटक 'सौभद्र' क तुलनामे अत्यन्त नीरस रहल। एकर कदाचित् इऐह कारण छल जे एहि नाटकक संविधानकमे हुनक प्रिय रसक हेतु कोनो गुंजाइशे ने रहल। ठोस सत्यकेँ प्रस्तुत करबाक मामलामे मराठी चरित्र-साहित्य एखनो यथेष्ट डेरबुक थीक। एहना स्थितिमे आइसँ 65 वर्ष पूर्व लेखकक वैयक्तिक जीवन तथा हुनक रचना सभक पारस्परिक सम्बन्ध सभक मनोवैज्ञानिक आधार पर कयल गेल सूक्ष्म विवेचन आश्चर्य जनक रीतिसँ क्रान्तिकारी प्रतीत होइत अछि। कोल्हटकरक कथन छलनि जे "प्रत्येक ओ व्यक्ति चरित्र नायक बनबाक हकदार छथि जे समाज पर स्पष्ट एवं स्थायी प्रभाव द' सकथि।" कोल्हटकर इऐह स्पष्ट करय चाहैत छलाह जे कोनो व्यक्तिक कार्य सभकेँ यथावत् बुझबाक हेतु ओकर व्यक्तिगत जीवनकेँ बुझब अत्यन्त आवश्यक अछि।

जाहि साहित्यिक विधाक समीक्षा करबाक होइत छल, पहिने ओकरा सम्बन्ध मे सैद्धान्तिक चर्चा करबामे ओ कोनो निश्चित नियम सभ पर पहुँचैत तथा ओहि नियम सभक आधार पर एक गणितज्ञ सदृश निष्पक्ष भावसँ ओहि कलाकृतिक मूल्यांकन कयल करैत छलाह। कोल्हटकरक लेख-संग्रहमे हुनकर जे समीक्षक रूप सोझाँ आबि जाइत अछि ओहि पर लिखैत बा. ल. कुलकर्णी कहैत छथि—"एहि लेख संग्रहकेँ पढ़लाक पश्चात् जे कोल्हटकर हमर आँखिक सोझाँ अबैत छथि ओ एहन छथि—ओ अत्यन्त अनुशासन प्रिय छथि। प्रत्येक कार्य ठीक ढंगसँ करय चाहैत छथि। कोल्हटकरक मन गणितज्ञ लोकनिक समान छलनि। प्रत्येक कार्य नापल-जोखल करैत छलाह। हुनकर लेखनमे एक अनुक्रम रहैत छनि। सूक्ष्मसँ सूक्ष्म विवरणक पूर्ण ध्यान राखैत छलाह तथा अनेक गुण-दोष सभकेँ लिखि लैत छथि। व्याख्या एवं वर्गीकरण द्वारा अधिकसँ अधिक निर्दोष वस्तुकेँ खोजि लेब हुनक स्वभाव छलनि।" 'कोल्हटकर लेख संग्रह' क प्रस्तावनामे न. चि. केलकर लिखैत छथि—"जखन कोल्हटकर पूर्ण विस्तारसँ दोष देखय लगैत छलाह तखन हुनकर दृष्टिसँ मात्रा तथा अनुस्वार धरि नहि बाँचि पबैत छलनि। व्याकरणक अशुद्धि सभक तँ कहवे की? अनुमान प्रक्रियाक असंगति सभक तथा कलाक अंग सभक अशुद्धिक सम्बन्धमे पूछू नहि। विस्तारसँ जयबाक निश्चय कयलाक पश्चात्

ओ ओहिमे एतेक नीचाँ धरि उतरि जाइत छलाह जे स्कूलक विद्यार्थी सभक अभ्यास-पुस्तिका सभक जाँच कयनिहार प्राध्यापक लोकनिकेँ सेहो मात द' दैत छलाह।" कलाक निर्दोषिता पर ओ अत्यधिक बल देल करैत छलाह। आओर एही कारणेँ ओ एतेक अधिक विस्तारमे जा क' समीक्षा कयल करैत छलाह।

कोल्हटकरक समीक्षामे जे विनोद थीक, ओ अधिकांशमे व्यंग्य एवं वक्रोक्ति सभक रूपमे प्रकट भेल अछि। त्रुटिपूर्ण सिद्धान्त, असंगत तर्क, भ्रमोत्पादक वक्तव्य आदिक विवेचनमे हुनकर लेखनी पर्याप्त तीक्ष्ण भ' जाइत छलनि। हुनकर समीक्षा पद्धतिक मार्मिक विवेचन न. चिं. केलकर 'कोल्हटकर लेख संग्रह' नामक पुस्तकक विस्तृत प्रस्तावनामे कयलनि अछि। ओहिमे ओ लिखैत छथि—'हुनक आलोचनात्मक लेख सभमे तीव्र वक्रोक्ति युक्त विनोद थीक, जकर उद्देश्य आलोच्य ग्रन्थकारकेँ पूर्ण रूपेण परास्त करब होइत छल। जखन ओ आलोचना प्रारम्भ करैत छथि तखन पाठककेँ कोनो शिकारी द्वारा कयल गेनिहार शिकारक सदृश भास होमय लगैत छलनि। खेलक भास नहि होइछ। हुनकर आलोचनाकेँ पढ़लासँ लगैत अछि जे ग्रन्थकारक अनुपस्थितिमे हुनक ग्रन्थरूपी शिकार कोल्हटकरक हाथेँ एकसरे आबि गेल अछि तथा ओ सब प्रकारक बौद्धिक घातक अस्त्र सभसँ ओहि पर टूटि पड़ल छथि। ओ एहि तर्कयुक्त युद्धमे मरब-मारबाक हेतु उतारू भ' जाइत छथि।" केलकरक ई मीमांसा मार्मिक होइतहुँ सर्वांशमे सेहो सत्य नहि थीक। कोल्हटकरक सम्पूर्ण समीक्षात्मक लेख सभकेँ आँखिक सोझाँ राखला पर पता चलैत अछि जे ओ ओही ग्रन्थकार समक कटु आलोचना करैत छथि जे अपन ग्रन्थ सममे सड़ल-गलल सामाजिक रूढ़ि सभक समर्थन करबाक यत्न करैत छथि। एहि आलोचनामे पुनः ओ औचित्यक सीमाकेँ पार क' जाइत छथि। एकर उदाहरण प्रस्तुत करैत काल केलकर लिखैत छथि—"पण लक्षांत कोण धेतो' पर ओ तेइस पृष्ठक समीक्षा लिख गेल छथि। ओहिमे वास्तविक पुस्तकक गुण-दोष सभक विवेचन डेढ़ पन्ना सेहो नहि अछि। शेष बाइस पन्नामे सामाजिक सुधार सभ पर कयल गेनिहार आक्षेप सभक खण्डन तथा केश-वपन सम्बन्धी प्रतिबन्धक मण्डन थीक। ई विवेचन युक्त-युक्त थीक, एहिमे सन्देह नहि, परन्तु जँ ओ एक स्वतन्त्र निबन्धक रूपमे रहैत तँ बेशी बढ़िया होइत।" 'सद्यः स्थिति प्रेरित दोन नवी नाटकेँ' नामक लेख उनतीस पन्नाक थीक। पहिल बीस पन्ना सभमे अनेक समाजशास्त्र, नीतिशास्त्र आदिक विवेचन थीक। 'संगीत प्रेमाभास' नामक नाटक ओ जे लम्बा-चौड़ा आलोचना लिखलनि अछि, ओकर आधासँ अधिक पन्नामे अनेक युक्ति सभक द्वारा निर्विवाद रूपमे रूढ़ि सभक व्यर्थता तथा समाज सुधारक सार्थकता सिद्ध कयल गेल अछि। ओ अपन उदारतावादी सामाजिक तत्त्वज्ञान एहि साहित्य समीक्षात्मक लेख सभमे विस्तार पूर्वक प्रतिपादन कयलनि अछि। एकर अनेक कारण थीक। ओ बुझैत छलाह जे ललित वाङ्-

मयक जनमत पर यथेष्ट प्रभाव पड़ैत अछि। 'संगीत प्रेमाभास' सदृश नाटक द्वारा समाज विधातक रूढ़ि सभक समर्थन कयल जा रहल छल। एहन स्थितिमे कोल्हटकर सदृश सामाजिक व्यक्ति चुप्प कोना बैसि सकैत छलाह ?

ग्रन्थ-परीक्षा करबा काल समीक्षकक हैसियतसँ कोल्हटकर समय-समय पर जे भिन्न तथा पूरक स्वरूपक काज कयलनि अछि, ओकर वैनोदिक तथा मार्मिक दर्शन न. चि. केलकर करौलनि अछि। ओ कहैत छथि जे ओ अपन लेख सभमे पुलिस, जज तथा कानून-निर्माता तीनूक काज कयलनि अछि। कोल्हटकर समीक्षकक हैसियत सँ पुलिसक ई काज कयलनि अछि जे साहित्यक राजमार्ग पर संचार कयनिहार व्यक्ति जखन स्वच्छन्द विचरण करय चाहैत छल तखन ओकरा दाहिना तथा वामा भाग चलबाक हेतु कहलनि···न्यायाधीशक काज निष्पक्ष भ' कय गुण-दोष सभक चयन आओर परीक्षण करब होइत अछि। ई काज ओ अत्यन्त लगनक संग कयलनि। कानून-निर्माताक रूपमे साहित्य तथा ललित कला सभक सम्बन्धमे ओ एक विस्तृत नियम संहिता तैयार कयलनि। ई तीनू काज वैह क' सकैत अछि जकरा साहित्यक नीक जानकारी हो तथा सामाजिक हितक प्रति गम्भीर अभिरूचि हो। दोष देखयबा काल हुनकर समीक्षामे व्यक्तिगत उपहास नहि अबैछ। हुनकर कटु आलोचना सभमे अनेक व्यक्ति सभक मन दुखौलक अछि एहिमे सन्देह नहि; तथापि हुनक आलोचनाक लक्ष्य व्यक्ति नहि भ' कय ओकर भ्रामक विचार-धारा रहल। हुनकर समीक्षा सदैव संयम एवं सदभिरूचिसँ पूर्ण रहल।

ग्रन्थ सभक समीक्षाक अतिरिक्त ओ मराठी साहित्यक विभिन्न शाखा सभक गतिविधि सभक ऐतिहासिक समालोचना कयलनि अछि तथा ओकर साहित्यक मूल्यांकन सेहो कयलनि अछि। एहि क्षेत्रमे कोल्हटकर अत्यन्त स्मरणीय काज कयलनि अछि। डॉ. अ. ना. देशपांडेक ई कथन सर्वथा सत्य अछि—मराठी वाङमय व स्वावलम्बन' नामक निबन्ध मराठी साहित्यक अध्ययनक दृष्टिसँ अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। मराठी साहित्यक गम्भीर अध्ययनक संगहि-संग ओ साहित्यक इतिहाससँ सम्बन्धित अनेक मौलिक सिद्धान्त सभक सेहो विवेचन कयलनि अछि। मराठी उपन्यासक प्रारम्भिक दिनमे अद्भुत रम्यताकेँ प्रमुखता देल जाइत छल। ओकर मार्मिक विवेचन करैत ओ 'मराठी कथा वाङमय' नामक निबन्धमे लिखलनि अछि—"मराठी उपन्यास साहित्यक प्रादुर्भाव काल वैह छल जखन अंग्रेज सरकार ईस्ट इण्डिया कम्पनीसँ शासन-सूत्र अपना हाथमे ल' लेलक। दैनिक जीवनमे एहन कोनो वस्तु नहि बँचि रहल छल जे अद्भुत प्रतीत हो। पराक्रमक बल पर प्यादा सभक फर्जी बनबाक समय बीत गेल छल। नीरस शान्तिक काल शुरू भ' गेल छल। महाराष्ट्रीय जनताक ओहि समयक जीवन सोझ-सरल हृदय एवं विलास पराङमुख छल। पतिक पत्नीकेँ 'प्रिये' कहि क' सम्बोधित करब

स्वप्नमे सेहो सम्भव नहि छल। जीवनमे अद्भुत रम्यताक अभावक कारणेँ प्रारम्भिक मौलिक उपन्यास सभमे कल्पनाक आधिपत्य रहल।" कोल्हटकर कहय ई चाहैत छथि जे जीवनक नीरसताकेँ दूर करबाक हेतु लोक सभ उपन्यास सभक अद्भुतरम्यताक आश्रय लेलक। एतय ओ समाज तथा साहित्यक आपसी सम्बन्ध सभ पर प्रकाश देलनि अछि। एही निबन्धमे पुस्तक सभक गुण समक परीक्षाक हेतु जे कसौटी बतौलनि अछि ओ थीक 1. पाठान्तर, 2. देशान्तर वा भाषान्तर तथा 3. कालान्तर। पाठान्तरक अभिप्राय थीक 'पुस्तक केँ एक बेर पढ़लाक पश्चात् दोबारा पढ़बाक इच्छा।' भाषान्तर वा देशान्तरक अभिप्राय थीक पुस्तकक अनुवाद हो तथा ओ अन्य देश सभमे सेहो लोकप्रिय भ' जाय। एकरे समीक्षक सभक भाषामे 'वाङ्मयक विश्वासत्मकता' कहल जाइत अछि। कालक कसौटी निश्चये सर्वश्रेष्ठ थीक। 'एहि काल रूपी सूत्रधारक शताब्दी रूपी अनेक पर्दा सभ पर खसला पर सेहो जनिक प्रतिभा ओहिमे सँ पूर्ववत उज्ज्वल देखबामे अबैछ, हुनकर लिखल ग्रन्थ विश्व वन्दनीय होइत अछि।' कोल्हटकरक ई कथन यथार्थे छनि। मराठी उपन्यास सभक लेखा-जोखा करबा काल, इऐह तीन कोटिक आधार बना क' कोल्हटकर 'पण लक्षांत कोण घेतो' नामक उपन्यासक समीक्षा कयलनि अछि। कोल्हटकर अपन लेख सभमे अनेक साहित्यकार लोकनिक ऐतिहासिक दृष्टिसँ लेखा-जोखा कयलनि अछि। ई हुनक अध्यवसायशीलता एवं मौलिक अध्ययन प्रतिभाक परिचायक थीक।

साहित्यक गतिविधि समक समालोचनाक समानहि ओ महाराष्ट्र क सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधि सभक सेहो समालोचना कयलनि अछि। 'विविध ज्ञान विस्तार' नामक मासिकक आनन्दोत्सव स्मारिकाक रूपमे प्रकाशित ग्रन्थमे 'पन्ना सवर्षापूर्वाचे व आताचे महाराष्ट्र' नामक शीर्षक सँ ओ गम्भीर अध्ययन-युक्त एक लेख लिखलनि अछि। ओहि लेखकेँ पढ़लासँ पता चलैत अछि जे महाराष्ट्रीय जनजीवन तथा ओकर विभिन्न अंग समक ओ कनेक सूक्ष्म एवं व्यापक अवलोकन कयने छलाह। एहि लेखमे ओ 'ई स्पष्ट करबाक चेष्टा कयलनि अछि जे महाराष्ट्रमे ललितकला सभक अभाव किऐक अछि? ओ कहैत छथि—"महाराष्ट्रक मन नकली क अपेक्षा असली दिस अधिक दौड़ैत अछि।' ललित कला सभक सम्बन्ध किऐक तँ नकल बेशी रहैत अछि, अतः महाराष्ट्र ओहिमे अधिक दिलचस्पी नहि देखौलक।" मराठी साहित्य पर अंग्रेजी साहित्यक विवेचन करैत कोल्हटकर लिखैत छथि—"आइ काल्हुक मौलिक पद्यात्मक काव्य सभक हेतु वायरन, शैली, कीट्स, वर्डसवर्थ इत्यादि अंग्रेज कवि लोकनिसँ, मौलिक उपन्यास सभक हेतु स्कॉट, ड्यूमा इत्यादि पाश्चात्य उपन्यासकार लोकनिक तथा मौलिक नाटक सभक हेतु शेक्सपियर, मौलियर, शेरीडीन इत्यादि पाश्चात्य नाटककार

लोकनिहिसँ अधिक प्रेरणा भेटल अछि।" कोल्हटकर ओहि कालक मराठी साहित्यक हेतु आदर्श एवं अनुकरणीय पाश्चात्य लेखक लोकनिक जे सूची देलनि अछि, ओहि सँ पता चलैत अछि जे ओहि समय मराठीमे अनुकरणात्मक साहित्यक गतिविधि सभ यथेष्ट वढ़ि गेल छल। मराठी साहित्यमे अंग्रेजी साहित्यक योगदान पर प्रकाश दैत कोल्हटकर कहैत छथि—"प्राचीन मराठी साहित्यसँ उदात्त प्रकृति सभक मनुष्य सभक तुष्टि पूर्ण रूपेण भ' जाइत छल। परन्तु निम्न कोटिक व्यक्ति सभक मनोरंजन आदिसँ सम्भव नहि छल, अतः हुनका अपन मनोरजक हेतु निम्न कोटिक तमाशा आदिक शरणमे जाय पड़ैत छलनि। परन्तु एहि दुनूक मध्य कोनो कोटि वर्तमान नहि छल। जखन रामजोशी आओर अनंतफंदीक मन एहि तमाशासँ ऊवि गेलनि तखन हुनका समकेँ वीभत्स रससँ उड़ान भरिक' एकदम उदात्त रस पर पहुँचय पड़लनि। एहि दुनू प्रदेशक बीचक दूरी अत्यधिक हैवाक कारणेँ बीचक रिक्ताक पूर्तिक हेतु अन्तमे अंग्रेजी साहित्यमे आवय पड़लनि।" कोल्हटकरक एहि विवेचनकेँ के कहत जे मार्मिक नहि अछि ?

अपन साहित्यिक विवेचनमे कोल्हटकर आधुनिक मराठी साहित्यक बढ़ि चढ़ि क' हिमायत कयलनि अछि। आजुक मराठी कवि प्राचीन कवि लोकनिक पासंगमे सेहो नहि वैसैछ।' एहि कथनक भ्रामकताकेँ दूर क' कय ओ बड़ वेशी आत्म-विश्वासक संग कयलनि जे गुण सभक दृष्टिसँ आजुक कवि मुक्तेश्वर, मोरोपन्त, वामन आदि कवि लोकनिसँ कोनहु दृष्टिमे कम नहि छथि। इऐह नहि ओ ई सेहो कहलनि जे "पहिने कोनो एक कविक रचनामे अर्थ सौन्दर्य, पदलालित्य तथा भाषा शुद्धि ई तीनू गुण एकत्र देखवामे अवैछ, एहन बड़ कम होइत छल; परन्तु आइ ई गुण प्रायः सभ कवि लोकनिक रचना सभमे अहाँकेँ एकत्र देखवामे आओत।" अपन प्रगतिशील समीक्षा द्वारा आधुनिक मराठी साहित्यक विकासकेँ प्रोत्साहन तथा प्रेरणा देवाक बड़ पैघ कार्य कोल्हटकर कयलनि अछि।

कोहल्हटकरक विविध समीक्षात्मक लेख, निबन्ध, भिन्न-भिन्न अवसर सभ पर देल गेल भाषण तथा पुस्तक सभक प्रस्तावना सभ 'कोल्हटकर लेख संग्रह' नामक पुस्तकमे संकलित अछि। लगभग आठ सय पृष्ठक एहि वृहदाकार ग्रन्थमे कोल्हटकरक अद्भुत बुद्धिमत्ता तथा सर्वत्र संचारिणी प्रतिभाक दर्शन क' कय तथा ओकर विविधताकेँ देखि क' मन चकित भ' उठैत अछि। बा. ल. कुलकर्णीक कथन छनि जे "कोल्हटकर क समग्र समीक्षात्मक लेख सभक सम्यक् अवगाहन अत्यन्त कठिन थीक। हुनकर बुद्धिक परिधि विस्तीर्ण छनि, हुनका द्वारा समीक्षित विषय सभक संख्या बड़ पैघ अछि, कदाचिते कोनो एहन क्षेत्र हैत जे हुनक अवगाहनक परिधिसँ वाहर रहि गेल हो। मराठी समीक्षाक अनुशासनवद्धता, वैज्ञानिकता, सुचारुता, दार्शनिक चिन्तन, साहित्य विषयक इतिहासक दृष्टि, जागरूकता तथा प्रतिष्ठा प्रदान करवाक कठिन कार्य कोल्हटकर कयलनि अछि।"

'मराठी साहित्य' नामक अपन अंग्रेजी प्रवन्धम कुसुमावती देश पांडे लिखैत छथि —"कोल्हटकरकेँ बड़ पैध परिमाणमे आधुनिक मराठी साहित्यक समीक्षाक जनक कहल जा सकैत छनि। ओ मराठी समीक्षाकेँ सर्व-सामान्य समाचार पत्रीय समीक्षासँ भिन्न स्थान प्रदान कयलनि तथा ओकर कोटिकेँ उन्नत कयलनि। एतवे नहि ओ अत्यन्त गहराईमे जा क' साहित्यक भिन्न-भिन्न विधा सभसँ सम्बन्धित सैद्धान्तिक समस्या सभपर ऊहापोह सेहो कयलनि।" कोल्हटकर मराठी केँ नवीन समीक्षा शास्त्र देलनि, नव साहित्यिक परिभाषा देलनि तथा ओकरे आधार पर समीक्षा करबाक दृष्टि सेहो देलनि। निःसन्देह कोल्हटकरक समीक्षा साहित्य हुनकर साहित्यिक जीवनक एक तेजोमय उपलब्धि मानल जायत।

5

बहुमुखी प्रतिभा

साहित्यक विनोद, नाट्य तथा समीक्षा एहि तीनू क्षेत्र सभमे श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकरक कार्य विशेष महत्त्वपूर्ण अछि तइयो ओ अतबे दूर धरि सीमित नहि छथि। हुनकर बहुमुखी प्रतिभा ललित वाङ्मयक कोनहुँ अंगकेँ अछूत नहि छोड़लक। ज्योतिर्गणित सदृश ठोस वैज्ञानिक विषयमे सेहो हुनक विलक्षण बुद्धिक तेज आँखि सभकेँ चोन्हिया दैत अछि। अपन कुशाग्र बुद्धिमत्ता तथा सर्वत्र संचारिणी प्रतिभाक पाँखि पसारिक' ओ ओहि दूरी धरि उड़लाह अछि जे ओ लगभग सम्पूर्णक सम्पूर्ण साहित्याकाश अपन गतिविधि सभक परिधि मे ल' लेलनि। हुनकर कला विषयक कृर्त्तत्वक अन्य अंग सभ पर विचार करबा काल हुनक काव्य लेखनकेँ स्वभावतः अग्रस्थान देबाक हैत। किऐक तेँ कोल्हटकरक साहित्यिक प्रतिभाक जे प्रथम साक्षात्कार भेल अछि, ओ कविताहिक रूपमे भेल अछि।

परन्तु कोल्हटकरक स्फुट कविता सभक संख्या अत्यल्प अछि। ओ मोशकिलसँ 16 कविता लिखलनि अछि। ओ सेहो मुख्यतया 1881 सँ ल' कर 1901 धरिक अवधिमे। कोल्हटकरक ई कविता सभ अधिकांशमे निवेदनात्मक स्वरूपक अछि, जकर विषय प्रायः पारिवारिक जीवन थीक। केशवसुतक समयसँ कविता आत्म-निष्ठ भ' चलल छल। पु. शि. रेगेक ई कथन सत्य थीक जे "कोल्हटकरमे इं दृष्टि उदित भ' चलल छलनि जे कविताक विषय मानव-जीवन हैबाक चाही तथा ओकरा मानवक दैनन्दिन जीवनसँ अधिकाधिक घनिष्ठता स्थापित करबाक चाही। हुनकर कवितामे जे पारिवारिक जीवनक उल्लेख भेल अछि ओ एही दृष्टिक फल थीक।" 'गीतोपायन' नामक हुनक छोटसन कविता संग्रह 1924 मे प्रकाशित भेल। कोल्हटकरक ई कविता सभ मराठी काव्य-जगतकेँ अपन प्रभाव-क्षेत्रमे लेलक वा नहि, ई एखनधरि विवाद ग्रस्त विषय थीक।

कोल्हटकरक कविता सभ किछु समीक्षक लोकनिकेँ एकदम उपेक्षणीय प्रतीत होइत छनि तँ किछुकेँ ओहिमे मराठी साहित्यमे आगाँ चलिक' उदित भेनिहार कोनो विशिष्ठ काव्य सम्प्रदाय सभक मध्य दृष्टिगत होइत छनि। एहि सन्दर्भमे पु. शि. रेगे हुनक कविता सभक जे मूल्यांकन कयलनि अछिओ उल्लेखनीय थीक। ओ लिखैत छथि—"आइ हुनक काव्यक मूल्यांकन करबाक हो तँ निश्चय-

पूर्वक कहल जा सकैत अछि जे मात्र सोलह कविता सभ लिखि क' ओ आगाँ जा क' उदयकेँ प्राप्त रवि किरण मण्डलक अरुणक काज कयलनि अछि। जँ 1920 सँ 1935 धरिक कालक रवि किरण मण्डलक काव्यक अवलोकन करी, अथवा ओहि कालक मायादेव-सदृश कविक काव्य पर ध्यान दी तँ हम निःसंकोच भावसँ कहि सकैत छी जे कोल्हटकर एहि नवीन कविता शैलीक जन्म देलनि अछि। 'छत्रीचे उपकार' नामक कविताक उनटा विनोद तथा क्लिष्ट संस्कृत प्रचुर रचनाकेँ छोड़ि दी तँ एहि चारि टप्पा सभक कवितामे हमरा सम्पूर्ण यशवंतक कविताक बीज भेटि जाइत अछि। 'खरी भाऊ बीज' तथा 'मुखकर जागृति' सदृश कविता सभमे हमरा डेग-डेग पर गिरीशक भेंट होइत अछि।" 'एका स्त्रीची पर्जन्य विषयक कल्पना' नामक कविता मे समग्र मायदेव उपस्थित छथि।" पु. शि. रेगेक एहि विश्लेषणकेँ ग्राह्य मानल जाय तँ मराठी काव्यमे सेहो नवीन प्रवाह आरम्भ करबाक श्रेय कोल्हटकरहि कें देमय पड़त।

कोल्हटकरक अन्य कविता सभक सरसता-नीरसताक विषयमे कतबो मतभेद किऐक ने हो, हुनक लिखल 'महाराष्ट्र गीत' क प्रेरणादायी ओजस्विताक विषयमे ककरो कोनो मतभेद नहि भ' सकैछ। कोल्हटकर अपन जीवनमे जँ इऐह एक कविता लिखने रहितथि तइयो ओ मराठी साहित्य जगत् मे अजरामर भ' गेल रहितथि। महाराष्ट्रक आत्म सम्मानक विलक्षण तेजस्वी एवं विमोहक चित्र ओ एहि कवितामे अंकित कयलनि अछि। महाराष्ट्रक पौरुष, वैभव, विरक्त भाव तथा शीलक वर्णन कयनिहार ई सुन्दर गीत महाराष्ट्रमे एखनो सभक जिह्वा पर नृत्य क' रहल अछि। 'गीत मराठ्याचे श्रवणी मुखी असो। स्फूर्ति दिप्ति धृतिहि देन अन्तरी ठसो' मे जे हुनक स्पृहा अछि ओकरा महाराष्ट्र पूर्ण क' देलक अछि।

श्रीपाद कृष्ण प्रयोगवादी स्वरूपक कहानी-लेखन सेहो कयलनि अछि। ओहि समय मराठी 'लघु कथा'क उदय कालहि छल। आधुनिक मराठी कहानीक प्रादुर्भावक श्रेय हरिनारायण आपटेकेँ छनि। ओ मराठी कहानीकेँ जन्म देलनि। 1889 मे हुनक 'करणमूलक' नामक पत्र शुरू भेल। ओहिमे हुनकर फुटकर कहानी सभ एक-एक क' कय प्रकाशित होमय लागल। इऐह फुटकर कहानी सभ मराठी कहानी सभक बीजारोपण कयलक। 1889 सँ 1915 धरिक काल मराठी कहानीक विकासक पहिल चरण थीक। मराठी कहानी एही दिनमे आवि क' किछु आकार धारण करब शुरू कयने छल। एहि नवीन साहित्यिक विधाक दिस कोल्हटकरक सेहो ध्यान आकृष्ट भेल प्रतीत होइत अछि। ओ कहानी साहित्यमे अंशदान कयलनि अछि, ओ भनहि उल्लेखनीय नहि हो तइयो ई निश्चित अछि जे ओ ओकर विकासमे सेहो अपन कान्ह लगौलनि अछि। ई देखबाक हेतु जे 'ओ कहानी लिख सकैत छथि वा नहि' कोल्हटकर 1910 मे 'गणारे यंत्र' नामक एक कहानी

लिखलनि। 1912 धरि ओ कुल चारि कहानी लिखलनि। ई सब मासिक पत्र 'मनोरंजन' मे प्रकाशित सेहो भेल। एहि चारि तथा न. चि. केलकरक तीन कहानी सभक एक संग्रह 'कथा सप्तक' क नामसँ 1926 मे प्रकाशित भेल। कोल्हटकरक ई चारि कहानी सभ साहित्यिक दृष्टिसँ सामान्य स्तरक छल; तथापि हुनक संग्रहसँ मराठी-कहानी-लेखक लोकनिकेँ कहानी-संग्रह प्रकाशित करबाक प्रेरणा भेटलनि। 'कथा-सप्तक' क प्रकाशनसँ एक बात ई भेल जे महाराष्ट्रक लघु-कथा लेखक लोकनिक मनमे आयल जे ओ अपन लघु कथा सभक संग्रह क' कय ओकरा पुस्तक रूपमे छपवा देथि तथा एहि प्रकारेँ अनेक सुप्रसिद्ध लेखक लोकनिक कथा-संग्रह सभक छपलासँ मराठीमे एहि नवीन शैलीक साहित्यक वृद्धि होमय लागल। ई बात 1931 मे प्रकाशित 'श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर यांच्या चार कथा' नामक पुस्तकमे लिखल अछि, जे ठीक सेहो अछि। एकरा देखैत कहय पड़त जे ई कहानी-संग्रह एक ऐतिहासिक महत्वक कार्य कयलक अछि। ओकर बाद वृद्धावस्थामे 1932 सँ 34 धरिक कालमे कोल्हटकर 'बवीची तयारी', 'मोत्याचा पापा' तथा 'अजोबाचे काम' नामक तीन सुन्दर बाल कहानी लिखलनि। एहि कहानी सभमे वात्सल्य एवं करुणाक मनोज्ञ संगम दृष्टिगोचर होइत अछि। एहिमे कोल्हटकर शिशु मनक विचक्षण, सुकुमार तथा स्नेह सिक्त चित्र अंकित कयलनि अछि। एहि कहानी सभक सम्बन्धमे लिखैत वा. ल. कुलकर्णी कहलनि अछि जे, "एहि तीनू कहानी सभकेँ देखिक' प्रतीत होइत अछि जे ओहि कालमे लिखल गेल मराठी शिशु कथा सभमे हिनका पर्याप्त ऊँच स्थान प्राप्त हैतनि।" एहि प्रकारक किछु आओर कहानी सभ कोल्हटकर लिखने रहितथि तँ हुनका साहित्यक एहि शाखामे सेहो महनीय कार्य करबाक श्रेय प्राप्त भेल होइतनि।

सन् 1912 मे कोल्हटकर अपन आत्मचरित्र लिखब शुरू कयलनि। हुनकर किछु कविता सभ महिला महाविद्यालयमे अध्ययनार्थ स्वीकृत 'अभिनव काव्य माला' नामक पुस्तकमे संग्रहीत भेल छल। 'कविताक मर्मक आकलन करबाक हेतु कविक जीवनीक ज्ञान आवश्यक अछि कहि क' प्राध्यापक मायदेव कोल्हट-करसँ अपन जीवनी लिखबाक अनुरोध कयलनि। ओकरा स्वीकारक कय कोल्हटकर अपन जीवनी लिखब प्रारम्भ कयलनि। अत्यधिक सोझ-स्वच्छ एवं अनलंकृत भाषामे लिखल गेल ई संक्षिप्त; किन्तु लोक विलक्षण जीवनी जतय हुनक भाव जगत्क वास्तविक दर्शन करबैत अछि, ओतय ओ मराठी नाट्यवाङ्-मयक एक वैभवशाली युग पर सेहो प्रकाश दैत अछि। डॉ. बालिवे एकरा 'नाटक-कारक पहली जीवनी'क नाम दैत कहलनि अछि जे "एक महान् नाटककार तथा महान् नाट्य समीक्षक व्यक्तित्वक हृदयंगम परिचय एहि जीवनीमे उपलब्ध होइत अछि तथा नाट्य क्षेत्रक अनेक संस्मरणीय गतिविधि सभ पर उत्कृष्ट प्रकाश पड़ैत अछि; अतः अनिवार्य थीक जे मराठी नाट्य समीक्षाक क्षेत्रमे एकरा अचल

पद प्राप्त हो।" आओर ई कथन सत्य सेहो थीक। कोल्हटकर अपन संघर्षरत जीवनक विविध घटना सभक वर्णन विलक्षण संयमसँ कयलनि अछि। परन्तु सत्यक प्रति अत्यधिक अनुरागक कारणेँ हुनक मृत्युक पश्चात् 1935 मे जखन ई जीवनी प्रकाशित भेल तखन एक बेर बवण्डर सदृश उठि क' ठाढ़ भेल।

कोल्हटकरक जीवनी एक प्रतिभावन्त व्यक्तिक मनोजीवनक विलक्षण एवं प्रांजल आलेख थीक। कविक रचना सभक मर्मकेँ बुझबाक हेतु ओकर जीवनीक जानकारी आवश्यक होइत अछि, एही भावना सँ ओ ई जीवनी लिखलनि अछि। सत्यक प्रति अव्यभिचारिणी निष्ठाक कारणेँ अपन जीवनी लिखबा काल ओ शिष्ट जन सम्मत संपूर्ण पाखंड पूर्ण परंपरा सभकेँ तोड़िक' अपन साहित्यिक प्रेरणा सभक सम्बन्धमे सब किछु साफ-साफ तथा निःसंकोच भ' कय लिखि देलनि अछि। हुनकर भावना ई छलनि जे विमल कीर्तिक आशंका प्रत्येक क्यो करैत अछि; परन्तु सत्यक अपलाप क' कय सत्कीर्ति प्राप्त करबाक अपेक्षा सत्य-कथन द्वारा दुष्कीर्ति प्राप्त करब कतहु अधिक श्रेयस्कर थीक। एही कारणेँ अपन साहित्य पर 'चिर-स्थायी प्रभाव' देनिहार हिराबाई पेडणेकर सदृश संगीत कला निपुण कलावतीक स्नेहक वृतान्त सेहो ओ बिनु कोनो संकोचक लिखि देलनि अछि। ओ लिखैत छथि—"जाधरि सोझाँमे सुन्दर नमूना नहि हो ताधरि चित्रकार सुन्दर चित्र निर्माण नहि क' सकैछ। एही प्रकारेँ सौन्दर्य एवं विभ्रमक उज्ज्वल कल्पना जाधरि सोझाँ नहि हो ताधरि ललित साहित्यक निर्मितिक हेतु आवश्यक प्रेरणा नहि प्राप्त होइछ।" एही कारणेँ ओ लिखैत छथि जे "हिराबाईसँ परिचय भेलाक बाद एक बुद्धिमान स्त्रीक सौन्दर्य एवं विभ्रमक पर्याप्त उत्कृष्ट आदर्श हमरा प्राप्त भ' गेल तथा ओहिसँ हमर सौन्दर्यभिरुचिक पोषण होमय लागल।" ओ अपन जीवनीमे लिखलनि अछि जे हुनक नाटक सभक चित्रण पर एकर नीक प्रभाव पड़ल। हिराबाईसँ परिचय भेलाक बाद 'कल्पनाक अनुभवक ठोस आधार' प्राप्त भेल जाहिसँ हुनक साहित्य गत नायिका लोकनि अधिक सरस एवं स्वाभाविक होमय लगलीह।

अपन प्रतिभा धर्मक विषयमे लिखैत छथि—"सुन्दर एवं भव्य वस्तुक ध्यान करबामे मनकेँ विशेष आनन्द अबैत अछि। हमरा सदृश सौन्दर्याभिरुचि बड़ कम लोकमे नजरि आओत।" कोल्हटकरक साहित्यमे सौन्दर्यसक्तिक जे मोहक प्रति-बिम्ब दृष्टिगोचर होइत अछि, ओकर मूल कारण हुनकर इऐह प्रतिभा धर्म थीक। मनक विलक्षण एकाग्रता हुनकर एक आओर विशेषता थीक। एक स्थान पर ओ लिखने छथि—"हमर इऐह एकाग्रता कखनो-कखनो दुइ-दुइ तीन-तीन मास धरि बनल रहैत अछि।" ज्योतिर्गणित सदृश नीरस विषयमे हुनका जे सफलता भेटलनि ओ एही एकाग्रता कारणेँ। कोल्हटकरक साहित्य, व्यक्तित्व तथा कलात्मक जीवनक रहस्य एहि जीवनीमे ग्रथित अछि। अपन निःसंकोची स्वभाव एवं निर्भय

निवेदनक कारणेँ हुनकर ई जीवनी मराठी साहित्यक सिरमौर वनि गेल अछि।

अपन वैभवशाली साहित्यिक जीवनमे कोल्हटकर समीक्षा, नाट्य, काव्य, आत्मकथा आदि जाहि विविध साहित्यिक विधा सभक आश्रय लेलनि, ओहिमे उपन्यासक क्रम सवसँ अन्तमे अबैत अछि। अपन जीवनीमे ओ एक स्थान पर लिखने छथि जे "महाराष्ट्रक अग्रगण्य समाज-सुधारक न्यायमूर्त्ति महादेव गोविन्द रानडेक सन्तुलित व्यक्तित्व मे 'राजनैतिक एवं सामाजिक सुधार सभक जे सामंजस्य' दृष्टिगत होइत अछि ओहि पर अपन पहिल तथा अन्तिम उपन्यास लिखि क' एहि साहित्यिक जीवन सँ संन्यास ल' लेमय चाहैत छी।" परन्तु 1925 मे 'दुटप्पी की दुहेरी' तथा 'श्यामसुन्दर' नामक कोल्हटकरक दुइ उपन्यास प्रकाशित भेल। ओहि मे पहिल उपन्यास ओ अपन जीवनीमे उल्लिखित संकल्पक अनुरूपहि लिखलनि अछि। सामाजिक सुधार सभक विरुद्ध महाराष्ट्रमे जे राजनैतिक सुधार सभक संघर्ष चलि रहल छल ओकर झलक एहि उपन्यासमे दृष्टिगोचर होइत अछि। कथा नायक हरिहर राव दोहरा व्यक्तित्वक आदमी छथि। ई दोहरापन दुइ पृथक्-पृथक् समाचार पत्र सभमे अभिव्यक्त भेल अछि। एकमे ओ अपन नामसँ लिखैत छथि तँ दोसरमे 'कौतय' उपनामसँ। हरिहर राव स्वदेश तथा विदेशक वर्त्तमान स्थितिक तुलना क'कय अपन दोष सभकेँ खोजिक' बहार करबाक तथा ओकरा दूर करबाक उपाय सोचैत छथि तथा जनतामे एकरा हेतु जागृति उत्पन्न करैत छथि। 'कौंतेय' अपन प्राचीन 'ऊर्जितावस्था' तथा आधुनिक 'महत्पदपात्रता'क वर्णन क' कय जनतामे महत्त्वाकांक्षाकेँ जागृत करैत छथि। हरिहर रावक लेख सभसँ पाठक लोकनिककेँ अपन हीन स्थितिक प्रति लज्जाक अनुभूति होइत छनि एवं तद् द्वारा उत्कर्षक आकांक्षा उत्पन्न होइत छनि। एहि प्रकारेँ कहल जा सकैत अछि जे 'ई लेख एक दोसराक पूरक छल। समाजकेँ एहि दुनूक समान रूपसँ आवश्यकता छलैक।' 19म तथा 20म शताब्दीक सन्धि वेलामे महाराष्ट्रमे आगरक पक्ष तथा राष्ट्रवादी तिलक पक्षक रूपमे विचारक लोकनिक जे विभाजन भ' गेल छलाह ओकरे वर्णन एकर कथा नायक लोकनिक रूपमे हमरा पढ़बाक हेतु भेटैत अछि।

कोल्हटकर एहि उपन्यासमे सुप्रसिद्ध उपन्यासकार वा. म. जोशीक दार्शनिक चर्चात्मक सम्वाद तंत्रक उपयोग कयलनि अछि। दार्शनिक उपन्यास सभक जनक वामन मल्लारक उपन्यास सभ तथा हुनक 'काव्यमय कोटि क्रम परिपूर्ण वाद-विवाद शैली'क प्रभाव कोल्हटकर पर पर्याप्त पड़ल प्रतीत होइत छनि। वामन मल्लारक उपन्यास सभ पर 1918 मे 'रागिणी आणितिजो भावंडे' नामक जे एक विस्तृत समीक्षात्मक लेख कोल्हटकर लिखने छलाह, ओहिमे ओ ई प्रतिपादित कयने छलाह जे दार्शनिक चर्चा उपन्यासक कलात्मकता तथा कथ्य दुनूक हेतु उपकारक सिद्ध होइत अछि। ओ लिखैत छथि—"सामान्य उपन्यासक सामग्रीमे

दार्शनिक चर्चाक योजनासँ ओकर चमत्कृति जनक भाषारूप कलेवरक अथवा मनोरंजनात्मक आत्माक हानि नहि भ' कय उनटे ओकर पुष्टिए प्राप्त होइत अछि। दार्शनिक उपन्यास सभमे सामान्य सिद्धान्त तथा व्यवहार दुनूक सुन्दर मेल देखबाक हेतु भेटैत अछि। उपन्यासक कथा नायक हरिहर राव तथा हुनकासँ लेखन-कलाक ज्ञान प्राप्त करबाक इच्छासँ हुनका लग आयल गेल हुनक बुद्धिमती एवं सुन्दर तरुण शिष्या चन्द्रिकाक बीच विभिन्न विषय सभकेँ ल'कय भेल रोचक चर्चा सभसँ ई उपन्यास सुसज्जित अछि। एहि उपन्यासक कथानक किछुओ नहि थीक। ओहिमे मात्र सामाजिक, राजनैतिक एवं साहित्यिक समस्या सभक जे विस्तृत चर्चा हरिहर राव तथा चन्द्रिकाक बीच भेल अछि वैह विलक्षण एवं रोचक थीक। दुनूक सम्वाद सभमे नर्म-प्रणयक घोल द' कय कोल्हटकर ओहिमे एक प्रकारक माधुर्य भरि देलनि अछि। मराठीमे संख्यामे अत्यल्प चर्चा प्रधान दार्शनिक उपन्यास सभक क्षेत्रमे एहि उपन्यासक रूपमे कोल्हटकर जे अंशदान कयलनि अछि ओ अत्यन्त मूल्यवान् थीक।

परन्तु कथानक, व्यक्ति चित्रण एवं उत्कृटताक दृष्टिसँ दलित समाजक समस्या पर आधारित हुनक 'श्यामसुन्दर' नामक दुःखान्त उपन्यास अधिक सरस बनि पड़ल अछि। एक व्यापक एवं ज्वलन्त सामाजिक समस्याकेँ ओ एहि उपन्यास मे मुखरित कयलनि अछि। कोल्हटकरक समकालीन महाराष्ट्रक अग्रगण्य सुधार वादी ललित लेखक लोकनिक सम्पूर्ण ध्यान स्त्रीदास्यविमोचन पर अधिक केन्द्रित प्रतीत होइत अछि। मराठी उपन्यास सभक जनक हरिभाऊ आपटेक उपन्यास-साहित्यक विषयमे 1912 मे कोल्हटकर 'मराठी कथात्मक वाङ्मय' नामक निबन्धमे लिखलनि अछि—"श्रीयुत आपटे स्त्रीगणक दुःख सभक जे कहानी लिखलनि अछि, ओहन जँ पिछड़ल वर्ग सभक दुःख सभकेँ सेहो लिखने रहितथि तँ ओ मिसेज स्टोक 'टाम काकाची कोठडी' नामक उपन्यास-जतबहि क्रांतिकारी सिद्ध होइत। परन्तु मराठी उपन्यास सभक कथानक उच्चवर्गीय मध्यवर्गक लोक धरि सीमित रहल। कोल्हटकरक सामाजिक प्रगतिशीलता हुनकर ललित साहित्य धरिए सीमित नहि रहल ; ओकर प्रतिबिम्ब हुनकर कृति सभमे सेहो दृष्टिगोचर भेल। हुनक सक्रिय सुधारवादक वर्णन गा. त्र्यं. माउखोलकर 'जाति धर्म! तीन गृहस्थाश्रम' शब्दसँ कयलनि अछि। ओ लिखैत छथि—"कोल्हटकरक समाज मन्थनक पाछाँ हुनकर प्रखर बुद्धिवाद, मानवताक तीव्र अनुभूति तथा नितान्त सहृदयता काज क' रहल अछि। लोकहितवादी तथा रानडेक समान ओ मात्र शाब्दिक सुधारक नहि छलाह ; प्रत्युत विष्णुबुवा ब्रह्मचारी आओर ज्योतिबा फुलेक समान सक्रिय अर्थात् आचारशील सुधारक छलाह। प्रौढ़ विवाह, प्रेम विवाह, विधवा विवाह, अन्तःशाखीय विवाह, अन्तर्जातीय विवाह आदि समग्र वैवाहिक सुधार सभ पर ओ अपन परिवारमे स्वयं आचरण तँ कयनहि छलाह, परन्तु सबसँ

पैध बात ओ ई कयने छलाह जे खामगाँव स्थित अपन घर ओ सब जाति आओर धर्मसभक लोकक हेतु खोलि देने छलाह।" हुनकर धारणा छलनि जे वर्णाश्रम एवं जाति भेद हिन्दू धर्मक प्रकृति नहि, विकृति थीक। हुनकर श्याम सुन्दर जाहि तत्परतासँ जाति भेदातीत समाजक निर्मितक हेतु प्रयत्नशील दृष्टिगोचर होइत छथि, वैह तत्परता हुनका अपन जीवनमे सेहो संक्रान्त भ' गेल छलनि। एहि उपन्यासमे निर्भय जीवन-दृष्टिक संगहि-संग हुनकर लेखन कुशलता सेहो प्रतिबिम्बत भेल अछि। श्याम तथा ओकर पुत्रवत्सला तथा दुःखी माता सुन्दरबाईक चित्र अत्यन्त मार्मिक बनि पड़ल अछि।" पढ़बा-लिखबामे मन नहि हैबाक कारणेँ पिताक क्रोध कयला पर घरसँ निकलि गेलाक बाद उदार हृदय श्याम अस्पृश्योद्धारक काज मे लागि जाइत छथि। हुनकर सहिष्णु एवं स्नेहशील जीवनक चित्र कोल्हटकर अत्यन्त मनोयोग पूर्वक आलेखित कयलनि अछि।" ई मत कुसुमावती देशपाँडे प्रकट कयलनि अछि। आगाँ जा क' ओ लिखैत छथि— "हुनकर श्यामसुन्दर मानवता एवं सहानुभूति आदि गुण सभक कारणेँ साने गुरुजीक शामक अग्रज प्रतीत होइत छथि।" निरन्तर एकहि विषयक चर्वित चर्वण कयनिहार मराठी उपन्यास सभकेँ कोल्हटकरक उपन्यास सभ नव विषय एवं क्षेत्र प्रदान कयलनि। मराठी उपन्यास-साहित्यक श्री वृद्धिमे हुनक ई महत्त्वपूर्ण योगदान थीक।

कोल्हटकरक वाङ्मयीन कर्त्तृत्वक एहि विविध तेजस्वी पक्षकेँ देखिक' हुनकर बहुमुखी प्रतिभाक सर्वस्पर्शित्वक कल्पना कयल जा सकैत अछि। समीक्षा, नाट्य, विनोद आदि क्षेत्र सभमे तँ ओ नवयुगक सूत्रधार छथिए, परन्तु कहानी, उपन्यास, कविता इत्यादि क्षेत्र सभमे सेहो हुनकर उल्लेखनीय योगदान थीक। कोल्हटकरक विनोदी साहित्य तँ विश्व-साहित्यक कोनहु लेखकक संग टक्कर ल' सकैत अछि। 'मूर्तिभंजन' तथा 'नव सर्जन' हुनक वाङ्मयीन कर्त्तृत्वक दुइ पक्ष थीक। प्राचीन परम्पराक विरूद्ध विद्रोह क' कय ओ अपन एक नवीन परम्पराक निर्माण कयलनि। मराठी साहित्यकार लोकनिक समग्र पीढ़ीकेँ ओ अपन प्रभावसँ प्रभावित कलयनि तथा अपन एक साहित्यिक युग स्थापित कयलनि। वि. स. खांडेकर एक स्थान पर लिखलनि अछि जे "कोल्हटकरक एक विनोदी लेखक अनुवाद पढ़िक' सुप्रसिद्ध आंग्ल उपन्यासकर इ. एम. फॉस्टर जे उत्स्फूर्त उद्गार व्यक्त कयलनि अछि, ओहिमे कोल्हटकरक साहित्यक विश्वासात्मकताक गौरव अनुस्यूत अछि।" कोल्हटकरक प्रतिभासँ अत्यधिक आह्लादि फॉस्टर कहने छलाह 'ही इज़ ए जीनियस···ही विलांग्स् टू दि वर्ल्ड।"

वाङ्मय-सूची तथा संदर्भ-लेख-सूची

संकलन : गं० दे० खानोलकर

वाङ्मय-सूची

उपन्यास

दुटप्पी की दुहेरी : प्रकाशक गोपाल गोविन्द अधिकारी, पुर्णे, मुद्रक हनुमान प्रेस, पुर्णे ; 1925, 2+129 ; रुपैया-1

दुटप्पी की दुहेरी : प्रकाशक ल. के. जोशी, पुर्णे, मुद्रक दातार प्रेस, संस्करण दोसर 1961 ; 2+148, रुपैया-1½

दुटप्पी की दुहेरी : प्रकाशक मार्डन बुक डिपो, पुर्णे, मुद्रक लोक संग्रह प्रेस, पुर्णे ; संस्करण तेसर, 1947 ; 2+160, रुपैया-2

दुटप्पी की दुहेरी : प्रकाशक मार्डन बुक डिपो, पुर्णे, मुद्रक मार्डन प्रिंटिंग प्रेस पुर्णे ; संस्करण चारिम, 1948 ; 2+160, रुपैया-2

श्याम सुन्दर : प्रकाशक नारायण हरि अराटे, कोरेगाँव, मुद्रक विजय प्रेस, पुर्णे ; 1925 ; 4+280 रुपैया-2

कथा

कथासप्तक : प्रकाशक शंकर वामन रानडे, सांगली, मुद्रक आर्यभूषण छापाखाना, पुर्णे, 1925 ; 8+160 रुपैया-1 (श्री न. चि. केलकरक तीन तथा अंतर्भूत ; संग्रा. शंकर वाभन रानडे ।

श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर यांच्चा चार लघु कथा : प्रकाशक शंकर वामन रानडे, माधव पुर-वड़गाँव ; मुद्रक आनन्द छापाखाना, पुर्णे, शाके 1853 ; 2+115 ; बारह आना

संग्राहक : शंकर वाभन रानड़े ; कथाक्रम (1) गाणारें यंत्र (2) पति हाच स्त्रीचा अलंकार (3) संपादिका (4) गरीव विचारे पाडस ।

काव्य

गीतोपायन : प्रकाशक शंकर शांताराम गुप्ते, मुंबई, मुद्रक तत्वविनेचक छापाखाना मँबई, राज्यारीहण शाके 249 ; 4 + 38 छओ आना।

नाटक

गुप्तमंजूष : प्रकाशक गजानन चिन्तामण देव, पुर्णे; मुद्रक जगद्धितेच्छु छापाखाना, पुर्णे, 1903 ; 6 + 162 रुपैया एक (संगीत)

जन्म रहस्य : प्रकाशक महादेव विष्णु आगाशे, पुर्णे ; मुद्रक जगद्धितेच्छु छापाखाना, पुर्णे, 1918 ; 2 + 116 ; रुपैया एक (संगीत ; वधू परीक्षा नाटकक अनुपूरिका)

परिवर्त्तन : प्रकाशक अनंत आत्माराम मोरमकर, मुंबई ; संस्करण दोसर 1923 ; 8 + 136 ; रुपैया एक (गद्य ; 1922 मे 'विविध ज्ञान विस्तार' मासिक मे क्रमशः प्रकाशित)

प्रेम शोधन : प्रकाशक श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर, मुंबई ; मुद्रक वैभव छापाखाना, 1911 ; 4 + 191 ; रुपैया एक (संगीत)

प्रेम शोधन : कृष्णा जी नारायण सापने, मुंबई ; मुद्रक कृष्णा जी नारायण सापले, मुंबई ; संस्करण दोसर, 1934 ; 2 + 6 + 106 ; रुपैया एक (संगीत)

मति विकार : प्रकाशक श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर, आमगाँव, मुद्रक श्री वेंकटेश्वर स्टीम छापाखाना, मुंबई ; 1907 ; 4 + 160 ; रुपैया एक (संगीत)

मायाविवाह : प्रकाशक विदर्भ साहित्य संघ, अमरावती ; 1946 ; 72 ; रुपैया $1\frac{1}{2}$ गद्य ; ('युगवाणी' वर्ष पहिल अंक 6-7-8 मे प्रकाशित)

मूकनायक : प्रकाशक केशव भिकाजी ढवले, मुंबई ; मुद्रक मनोरंजक छापाखाना, मुंबई ; संस्करण तेसर, 1922 ; 168 + 4 ; रुपैया 1 (संगीत)

मूकनायक : प्रकाशक व्हीनस प्रकाशन, पुर्णे ; मुद्रक जनवाणी प्रिंटिंग प्रैस, पुर्णे ; संस्करण चारिम ; 1964 ; 35 + 105 रुपैया 3.50 (संगीत)

वधूपरीक्षा : प्रकाशक श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर, खामगाँव; मुद्रक मनोरंजना छापाखाना, मुंबई ; 1914 ; 8 + 168 ; रुपैया एक (गद्य)

वधूपरीक्षा : प्रकाशक व्यंकटेश बलवंत पेंढ़ारकर, मुंबई ; मुद्रक लीलावती प्रिंटिंग प्रैस, मुंबई ; संस्करण दोसर, 1928 ; 4 + 128 ; रुपैया 1 (संगीत)

वधूपरीक्षा : प्रकाशक व्यंकटेश बरावंत पेंढारकर, मुंबई ; मुद्रक मराठा प्रिंटिंग प्रेस, मुंबई ; संस्कर तेसर ; 1931 ; 6 + 128 ; रुपैया 1 (संगीत)

वीरतनय : प्रकाशक श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर, खामगांव ; मुद्रक निर्णय-सागर छापाखाना, मुंबई ; 1896 ; 6+116 ; रुपैया एक (संगीत)

वीरतनय : प्रकाशक श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर, खामगाँव ; मुद्रक जगद्धितेच्छ छापाखाना पुर्णे, संस्करण दोसर, 1901 ; 2+140 ; रुपैया एक (संगीत)

वीरतनय : प्रकाशक हिन्द एजेंसी, मुंबई; वैभव प्रेस, मुंबई ; संस्करण तेसर 1916 ; 2+152 ; रुपैया एक (संगीत)

शिवपावित्र्य : प्रकाशक अनंत आत्माराम मोरकर मुंबई ; मुद्रक श्री लक्ष्मी नरायण छापाखाना, मुंबई ; 1924 ; 6+152 ; रुपैया एक (गद्य)

श्रम-साफल्य : प्रकाशक गणेश महादेव वोरकर, पुर्णे ; मुद्रक साहित्यसेवक छापाखाना, पुर्णे ; 1929 ; 103 (गद्य)

सहचारिणी : प्रकाशक महादेव विष्णु आगाशे, पुर्णे ; मुद्रक जगद्धितेच्छु छापाखाना, पुर्णे ; 1918 ; 4+137+1 ; रुपैया एक (संगीत)

विनोदी

सुहाम्याचे पोहे अर्थात् अठरा धान्यांचे कडबोले : प्रकाशक काशिनाथ रघुनाथ मित्र, मुंबई ; मुद्रक निर्णय सागर प्रेस तथा मुंबई वैभव प्रेस, मुंबई ; संस्करण दोसर 1910 ; 4+7+164 ; बारह आना ।

सुदाम्याचे पोहे अर्थात् साहित्य बत्तिशी : प्रकाशक कोल्हटकर अणि कम्पनी, मुंबई ; मुद्रक सी. आर. मून, मुंबई ; संस्करण तेसर 1923 ; 21+451

सुदाम्याचे पोहे अर्थात् साहित्य बत्तिशी : प्रकाशक राधाकृष्ण प्रकाशन मंडल मुंबई ; संस्करण पाचम 1946 ; 24+388 ; रुपैया पाँच

सुदाम्याछे पोहे अर्थात् साहित्य बत्तिशी : प्रकाशक मार्डन बुक डिपो, पुर्णे ; मुद्रक आयुर्विधा मुद्रणालय, पुर्णे, संस्करण छठम 1957 ; 24+390 ; रुपैया 6.00

सुदाम्याचे निवउलेले पोहे अर्थात् साहित्य बत्तिशीतील निवडक लेख : प्रकाशक मार्डन बुक डिपो; पुर्णे ; मुद्रक जनार्दन प्रेस, पुर्णे 2+6+181; रुपैया 3 (चुनल गेल लेख सभक पुस्तक)

सुदाम्याचे पोहे : भाग पहिल ; प्रकाशक कृष्णाजी नारायण सापले, मुंबई ; (1938) ; 4+156, रुपैया एक (कालेज संस्करण)

सुदाम्याचे पोहे : भाग दोसर, प्रकाशक कृष्णाजी नारायण सापले, मुंबई ; मुद्रक रामकृष्ण प्रेस, मुंबई; (1938); 4+223 रुपैया 1½ (कालेज संस्करण)

प्रकीर्ण निबन्ध

कोल्हटकरांचा लेख संग्रह : प्रकाशक गं. दे. खानोलकर, मुंबई; मुद्रक कर्नाटक छापाखाना, मुंबई ; 1932 ; 8 + 49 + 16 + 857 रुपैया 6 (संपादक वि. स. खांडेकर, ग. त्र्य. माउखोकलकर तथा गं. दे. खानोलकर)

ग्रहगणित

भारतीय ज्योतिर्गणित : प्रकाशक दामोदर सावलाराम अणि मंडली, मुंबई ; मुद्रक इन्दु प्रकाश छापाखाना, मुंबई ; 13 ; 2+7+4+34+235 ; रुपैया 2

आत्मकथा

श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर यांचे आत्मवृत्त : प्रकाशक हरि विष्णु मोटे, मुंबई ; मुद्रक कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, मुंबई, 1935 ; 6+146 ; रुपैया एक।

संदर्भ-लेख-सूची

नाटक

गोमकाले, द. रा.—नाटककार कोल्हटकर (नाटक सभक सविस्तार मूल्यांकन : वि. स. खांडेकरक चालीस पृष्ठक प्रस्तावना) 1950 मलकापूर।

पराडकर, ना. वा.—कोल्हटकरांची नाटकें (प्रस्तावना : ग. त्र्यं. माडखोलकर) 1957, पुर्णे।

कुलकर्णी, वा. ल.—नाटककार कोल्हटकर : कांहीं टिप्पणी (केसरी : दिवाली अंक 1957)

केलकर नी. म.—नाटककारांचे नाटककार (पुरुषार्थ : श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर, स्मरणांक ; जुलाई 1954)

कोल्हटकर, चिन्तामणराव—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (बहुरूपी 1957 पृष्ठ 122-133)

खांडेकर, वि. स.—कोल्हटकरांची नाटके (गोकर्णीचीं फुलें 1944 : मनोरंजन : जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्तूबर, दिसम्बर 1927)

खांडेकर, वि. स.—रंगभूमिचे तीन शिल्पकार (कोल्हटकर, खाडिलकर, गडकरी) रेषा आणि रंग (1961) ; पृष्ठ—188-197

खांडेकर, वि. स.—श्रीपाद कृष्ण आणि मराठी रंगभूमि (रेषा आणि रंग 1961 पृष्ठ 188-197)

खांडेकर, वि. स.—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (मराठीचा नाट्य संसार [1945] पृष्ठ—49-52)

खांडेकर, वि. स.—श्रीपाद कृष्णांनी मराठी रंगभूमिला कोणती नवी लेणी दिलीं ? (मनोहर [साहित्य-विहार] ; जुलाई 1959)

गोमकाले, द. रा.—कोल्हटकरांचे नाट्य लेखन (त्यांचा रम्य भाविकाल [1964] पृष्ठ—78-87)

जोशी, न. वि. तथा बाबूराम—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (नाट्य संगीताच्य दृष्टिने त्याजकडून धडलेत्या कार्मगरीचे विवेचन) (संगीताने गाजलेली रंगभूमि [1959] पृष्ठ—37-43)

टेंबे गोविन्द राव—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर ह्यांचे नाट्य संगीत (तरुण भारत, नागपुर, दिवाली अंक 1955, रंगाचार्य [1956] पृष्ठ 69-101)

टेंबे गोविन्दराव—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (जीवन व्यासंग [1948] पृष्ठ 109-111)

दांडेकर. वि. पां.—कोल्हटकरांची नाटके रोमांटिक की सामाजिक ? (जय-हिन्द : दिवाली अंक 1947)

दांडेकर. वि. पां.—समन्वयवादी युगांतील नाटकें (मराठी नाटकातील विनोद मराठी नाट्य सृष्टि, खण्ड दोसर, [1945] पृष्ठ 66-96)

दातार, बा. वा.—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर यांच्या नाटकांतील विनोद (महाराष्ट साहित्य पत्रिका : एप्रिल-मे-जून 1970)

दीक्षित, द. गो.—कोल्हटकरांची नाटकें (विविध ज्ञान विस्तार; फरवरी-मार्च 1932)

देशपांडे, अ. ना.—नाट्य सृष्टि व तिचे निर्माते (अर्वाचीन मराठी वाङ्-मयाचा इतिहास, भाग पहिल [1954] पृष्ठ 216-238)

'पुष्पधन्वा'—कोल्हटकरांची नाटकें [आधुनिक नाटक, नाटककार व नट] (डेक्कन कालेज क्वार्टर्ली : 1903)

बानहट्टी, श्री. ना.—कृतिमतेचे युग : कोल्हटकर (मराठी नाट्यकला आणि नाट्यवाङ्मय 1959 पृष्ठ 126-138)

भट, सुधा—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (युगनाँदी : जून 1969)

मां जरेकर, प्र. शा.—तीन नाटकें (श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर कृत 'प्रेमशोधन' 'जन्म रहस्य' व 'शिवपावित्र्य') (पुरुषार्थः कोल्हटकर स्मरणांक : जुलाई 1954)

माडखोलकर, ग. त्र्यं—कोल्हटकरांचे नाट्य संगीत (माझे लेखन गुरु 1965 पृष्ठ 24-35)

माडखोलकर, ग. त्र्यं.—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (माझे आवडने लेखक 1939 पृष्ठ 11-18)

मजुमदार, शं. बा.—रंगभूमिचे युगान्तर (संस्करण) (पारिजातम अगस्त 1934)

लेले, पु. रा.—श्रीपाद कृष्णांचा नाट्य प्रपंच (प्राविण्य : जुलाई 1934)

बरेरकर, भा. वि०—नाटककार कोल्हटकर (सुबोध, कोल्हटकर विशेषांक : 12 जून 1934)

बरेरकर, भा. वि.—मराठी नाटकाचे जनक (प्रतिभा : 31 मई तथा 14 जून 1935)

ब-हाडपांडे, म. ल.—कोल्हटकरांची नाट्य-समीक्षा (युगवाणी : जनवरी, अप्रैल 1971)

ब-हाडपांडे, म. ल.—संगीत नाटक व नाट्य संगीत (कोल्हटकरक सन्दर्भमे) युगवाणी : अक्तूबर 1970)

बलवईकर, पां. ना. तथा रा. मा. साखरे—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (कांहीं साहित्यिक व साहित्य-प्रकार, 1953 पृष्ठ 68-69)

भासडीकर, लता—शेक्सपीअर आणि कोल्हटकरांची नाटके (प्रतिष्ठान : जून 1970)

शिखरे, दा. न.—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (मराठीचा परिमल, खंड दोसर 1953 : पृष्ठ 50-76)

सरवटे, वि. सि.—कोल्हटरांची नाटके (मराठी साहित्य समालोचन 1818-1934, खंड 1 तथा 2 ; 1936 पृष्ठ 449-455)

गुप्त मंजूष

ठोसर, स. ना. तथा ग. स. मराठे—आश्विनी कुमार प्रणीत श्रीमद्-भरताचार्य प्रासादिक नाट्यकलारुक्कुठार उर्फ श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर के 'संगीत गुप्त मंजूष' विनोदी नाटक पर संभाषणात्मक विनोदी आलोचना (पुस्तिका) 1908

वैद्य, वा. दि.—गुप्त मंजूष [समीक्षा] केरल कोकिल [नवे] वर्ष 4)

'शशि शेखर'—गुप्त मंजूष [समीक्षा] (डेक्कन कालेज क्वार्टर्ली : अक्तूबर 1903)

जन्मरहस्य

कुलकर्णी, गणेश हरि—जन्मरहस्य (समीक्षा) उद्यान : दिसम्बर 1918)

वेहेरे, ना. के.—जन्मरहस्य (समीक्षा) (मासिक मनोरंजन : फरवरी 1920)

प्रेमशोधन

कुलकर्णी, वि. ह. प्रेमशोधन (समीक्षा) महाराष्ट्र शारदा : फरवरी 1935)

खाडिलकर, कृ. प्र. (1)—संगीत प्रेमशोधन नाटकांतील काहीं प्रसंगांची चित्रे (एहि लेखक नींचाँ लेखकक नाम नहि देल ; परन्तु खाडिलकरे लिखलनि एहन पु. रा. लेलेक कथन छनि); (चित्रमय जगत : जुलाई 1912)

'नाट्यहंस'—प्रेमशोधन (प्रयोग समीक्षा) (केसरी : 13 दिसम्बर 1910)

भट, गो. के.—प्रेमशोधन (मधुधारा [1953] ; पृष्ठ 60-76)

लेले,, पु. रा.—प्रेमशोधन नाटक (नवम्बर 1910 क ज्ञान प्रकाशमे राव साहेब कानिटकरक समीक्षाक उत्तर (रंगभूमि मासिकमे सात चुनल गेल पुस्तकक एक संग; रँगभूमि : वर्ष 4 अंक 1)

लेले पु. रा.—प्रेमशोधनाचे यशापयश (नाटक मंडलीच्या वि-हाडी [1946]; पृष्ठ 50-55)

मति विकार

मतिविकार (स्फुट विवेचन) (रंगभूमि : अगस्त 1907)

आगाशे, ग. कृ.—मतिविकार (समीक्षा) (रंगभूमि : सितम्बर [1908]

केलकर, न. चिं. मतिविकार (समीक्षा) (समग्र केलकर वाङ्मय खंड दसम [1938] पृष्ठ 910-951)

गोमकाल, द. रा.—मतिविकार (नाटककार कोल्हटकर [1950] पृष्ठ 100-125)

पराडकर, ना. बा.—मतिविकार (नाटककार कोल्हटकर [1957] पृष्ठ 28-37)

लेले, पु. रा.—इव्सेन पुणेरी कन्या (मतिविकार नाटकक नायिकाक विषय मे) (श्रीदीप लक्ष्मी : जुलाई 1958)

लेले पु. रा.—तात्यांची राजस नायिका (महाराष्ट्राचे दुसरे वेड [1965] पृष्ठ 93-102)

लेले, पु. रा.—निष्पाप व निर्व्याज व्यभिचार (समीक्षक : दिसम्बर 1954)

मूकनायक

कुलकर्णी, कृ. पां—श्रीपाद कृष्णांचे मूकनायक (सह्याद्रि : जून 1954)

टेबे, गो. स.—मूकनायक (समीक्षा) रंगाचार्य [1956] : पृष्ठ 102-104)

नांदेडकर, ए. रा.—अविमारक व मूकनायक (तुलनात्मक चर्चा) (विविध ज्ञान विस्तार, नवम्बर, 1927)

मुंडले, वा. दा.—मूकनायक (समीक्षा) (श्री सस्वती मंदिर : वर्ष 1 अंक 2 आश्विन, शाके 1823)

शेट्ये, आबा—उपेक्षित मूकनायक (बलवंत : दिवाली अंक 1954)

वधूपरीक्षा

वधूपरीक्षा (संमति) (रंगभूमि : वर्ष 6 : अंक 7)

फ़डके, र. कृ.—वधू परीक्षा (समीक्षा) नाट्यपरामर्ष [1947] पृष्ठ 77-96 ; रत्नाकर ; जनवरी 1928)

म्हसकर, सुशीला—वधुपरीक्षेतोल स्त्रिया (मासिक मनोरंजन, अगस्त 1929)

लेले, पु. रा.—वधुपरीक्षेचा पहिला प्रयोग (महाराष्ट्रोचे दुसरे वेड [1965] : पृष्ठ 79-92)

वाकसकर, वि. स. वधूपरीक्षा (समीक्षा) (विविध ज्ञान विस्तार : अगस्त 1916)

'विनित'—वधूपरीक्षा (समीक्षा) (नवा केरल कोकील : फ़रवरी 1915)

वीरतनय

कोल्हटकर, श्री कृष्णपाद—वीरतनयाची ढाल (श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकरांचा लेख संग्रह [1932[: पृष्ठ 79-195)

खरे, विनायकराव शिवराम—वीरतनय नाटकावरील टीका (विविध ज्ञान विस्तार : अगस्त, सितम्बर, अक्तूबर 1898)

सहचारिणी

फडके ना. सी.—सहचारिणी [समीक्षा] (प्रभात मासिक, मुंबई ; अगस्त 1918 ; टाकीचे धाव [1937] : पृष्ठ 152-166)

विनोद

'कुलूप' नामक लेख पर संपादकीय टिप्पणी (सरस्वती मंदिर : वर्ष 3 ; अंक 2, 3)

सुदामा व टीकाकार [चर्चा] (नेटिव ओपिनियन : 24 फरवरी 1904)

सुदाम्याचे पोहे व विविध ज्ञान विस्तारकार [पत्र व्यवहार] (नेटिव ओपिनियन : 31 मई 1904)

अत्रे, प्र. के.—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकरांचा विनोद (नव युग साप्ताहिक : 7 जून, 14 जून, 21 जून, 28 जून और 5 जुलाई 1959)

अलतेकर, मा. दा.—कोल्हटकरांचे विनोदी वाङ्मय (पाने आणि फ़ुले, भाग पहिल [1938] : पृष्ठ 82-93)

आंवेकर, वि. बा.—श्रीपाद कृष्णांची 'साहित्य बत्तिशी' [चर्चात्मक] सह्याद्रि : अक्तूबर 1938)

काली, रा. वि.—मराठीतील विनोदी वाङ्मय (विविध ज्ञान विस्तार : नवम्बर 1925)

कुलकर्णी, द. मि.—विनोदकार कोल्हटकर (छंद : मार्च-अप्रैल 1958)

कुलकर्णी, व. ल.—'सुदाम्याचे पोहे' (एक समीक्षा) (महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका अक्तूबर-दिसम्बर 1955)

कुलकर्णी, वा. ल.—'सुदाम्याचे पोहे' चो कुलकथा (वीणा : दिवाली अंक 1963)

केलकर, न. चि.— श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर [हुनक विनोदक स्वरूप : हुनक विनोदक नमूनाक संग देल गेल अछि] हास्य-विनोद मीमांसा [1937] आर समग्र केलकर वाङ्मय खंड बारहम [1938] पृष्ठ 116-129)

केलकर, न. चि.—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर : विनोद (हास्य-विनोद मीमांसा [1937] पृष्ठ 116-129)

कोल्हटकर, श्रीकृष्णपाद—माझे टीकाकार सुहास्याचे पोहे अथवा अठरा धान्याचे कडबोले [1910] पृष्ठ 104-118 : प्रथम प्रकाशन : विविध ज्ञान विस्तार मई 1905)

खांडेकर, वि. स.—कोल्हटकरांचा विनोद [लेखमाला] (रणगर्जना साप्ताहिक मुंबई ; 1926)

तेंदुलकर, विजय—मराठीतील पहिले विनोदी लेखन (पुरुषार्थ, श्री कोल्हटकर स्मरणांक : जुलाई 1954)

दातार, बा. वा.—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकरांच्या नाटकांतील विनोद (महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका : अप्रैल-जून 1970)

रेगे, शां. शं.—'पांडुतात्या आडि बंडूनाना' (नन्दा : मई 1963)

लिमये, गो. गं.—श्रीपाद कृष्णांचा विनोद (पुरुषार्थः कोल्हटकर स्मरणांक जुलाई 1954)

वाटवे, के. ना.—मराठी विनोद [चर्चात्मक] (सह्यादि : 1938)

शिखरे, दा. ना.—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (विनोदकार [1966] : पृष्ठ-7-36)

हर्षे, रा. ग.—कोल्हटकरांचे युग (विनोदी वाङमय) (अर्वाचीन मराठी साहित्य [1935] पृष्ठ 205-215)

आत्मकथा

आत्मवृत्ताचे प्रकाशन (श्रीपाद कृष्ण का हा. वि. मोर्टेको 17 जनवरी 1925 क पत्र) प्रतिभा : 31 मई 1935)

दोडके, गो. रा.—कोल्हटरांचे आत्मचरित्र [समीक्षा] (विश्ववाणी : अगस्त 1935)

वर्दे, श्री. म.—आत्म वृत्त [समीक्षा] (प्रतिभा : 26 जुलाई 1935)

वालिबे रा. शं.—नाटककाराचे पहिले आत्म चरित (मराठी नाट्य समीक्षा [1968] पृष्ठ 337-340)

कहानी-उपन्यास

कोल्हटकरांचे कादबंरी लेखन—[कोल्हटकरक पत्र सभसें उद्धरण] ज्योत्स्ना अक्तूबर 1936)

कोल्हटकरांच्या कादंब या—[कोल्हटकरक पत्र] (ज्योत्स्ना : मार्च 1937)

खांडेकर, वि. सः—दुटप्पी की दुहेरी [समीक्षा] (विविध वृत्त : 19, 26 अप्रैल 1935)

जोशी, वा. म.—श्यामसुन्दर [समीक्षा] (विविधज्ञानविस्तार : सितम्बर 1925)

कविता

खांडेकर, वि. स.—गीतोपायन [समीक्षा] (प्रमोद मासिक, मालवण : वर्ष 2 अंक 8, 9, 10, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष शके 1845)

ढवले, वा. रा.—महाराष्ट्रगीत (पारिजात : अगस्त 1934)

रेगे, पु. शि.—रविकिरण मंडलाचे अरुण : कोल्हटकर (पुरुषार्थ, श्री पाद कृष्ण कोल्हटकर स्मरणांक : जुलाई 1954)

ज्योतिष शास्त्र

गिजरे, वि. अं.—श्रीपाद कृष्ण आणि ज्योति-शास्त्र (विहंगम : अगस्त 1934)

पत्र

कै. गडकरी व कोल्हटकर [1 गडकरीक पत्र : 2 श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकरक पत्र] (अभिरुचि : नवम्बर-दिसम्बर 1947)

कोल्हटकर विषयक पत्रे (युगवाणी) : अगस्त 1970)

कोल्हटकरांचीं पांच पत्रें (युगवाणी : जून 1940)

श्रीपाद कृष्णांचे आत्मकथन [दुइ पत्र : रा. प्रा कानिटकरकें 23-10-1926 तथा 1-11-1926 कें लिखल गेल] (सुबोश 1934)

कुलकर्णी, गो. मं.—आधुनिक मराठी साहित्यांतील एक गुरु शिष्य सम्बन्ध [कोल्हटकर—गडकरी सम्बन्ध] : (खंडन मंडन [1968] पृष्ठ 161-171)

समीक्षक

कुलकर्णी, वा. ल.—गणिती मनाचे टीकाकार (पुरुषार्थ : श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर स्मरणांक : जुलाई 1954)

कुलकर्णी, वि. ह.—टीकाकार कोल्हटकर (पारिजात : अगस्त 1934)

दाँडेकर, वि. पा.—'तोतयाचे बंड' मे कोल्हटकर द्वारा प्रदर्शित दोष (केलकरक छ ओ नाटक [1932] पृष्ठ 63-68)

पंगू, द. सी.—रागिणी व तिच्यावरील रा. कोल्हटकर याँची टीका (विविध ज्ञान विस्तार : जनवरी 1929)

रानडे, ज. के.—टीकाकार कोल्हटकर (ज्योत्स्ना : दिसम्बर 1938)

वाराडपांडे म. ल.—कोल्हटकरांची नाट्य समीक्षा (युगवाणी : जनवरी 1971)

वालिवे, रा. शं.—कोल्हटकारी समीक्षेचे उत्तरकांड (मराठी नाट्यसमीक्षा [1968] पृष्ठ 282-307)

प्रकीर्ण

मराठी चे शेक्सपियर श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (व-हाडशाला पत्रक : मई-जून 1925)

आठवले, रा. म.—कोल्हटकरांचे नाटकशास्त्र (पारिजात : अगस्त 1934)

कारे, दा. अ.—कोल्हटकरांची मराठीला देणगो (सुबोध :, गोवा, जून 1934)

कोल्हटकर, श्रीपाद कृष्ण विष्णुशास्त्री चिपलणकर आणि माझे लेखन (प्रतिभा : 16 मार्च 1934)

खाँडेकर, वि. स.—कोल्हटकर, खाडिलकर व गडकरी (साहित्य द्वैमासिक : दिसम्बर 1948)

खाँडेकर, वि. स.—कोल्हटकरांची कल्पकता (सुबोध : जून 1934)

खाँडेकर, वि. स.—कोल्हटकरांचे विशेष (गोफ आणि गोफण [1946] पृष्ठ 25-38)

खाँडेकर, वि. स.—कोल्हटकरांचे विशेष (पारिजात : अगस्त 1934)

खाँडेकर, वि. स.—श्री पदांची कलावती वाणी (यशवंत : अगस्त 1929)

गडकरी, राम गणेश—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर यांच्या चार नाटकांतील अर्थ व टीके सहित सुन्दर उतारे, 1907 पुर्ने।

ग्रामोपाध्ये, गं. व.—साहित्याच्या प्रांतात नवनव्या प्रथा शुरू करणारा साहित्य सम्राट (गोमंतक : 31 जनवरी 1971)

घोडे, का. पु.—श्रीपादांच्या कलेचे कार्य (सुबोध : जून 1934)

जोशी, चिं. वि.—कलांवंत की गुरु (सुबोध : 1934)

देशपांडे, पु. य.—कोल्हटकर : प्रभावी साहित्यिक (महाराष्ट्र विस्तार : अक्तूबर 1959)

देशपांडे, बालशंकर—विनोदाचार्य श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (शब्दांचे शिल्पकार [1970] : पृष्ठ 53-59)

पराडकर, ना. वा.—विदर्भ वीणा-प्रस्तावना ['विदर्भ वीणा'-समीक्षाक भाग] (विविधज्ञानविस्तार : नवम्बर 1931)

वाले, वा. अ.—गडक याँचे गुरु (सुबोध : जून 1934)

भिडे, वा. अ.—काव्य विषयक विचार ('काव्यचर्चा') [1925]

पुस्तकक कोल्हटकरक कवि सम्मेलनक अध्यक्ष स्थानसँ देल गेल भाषणक काव्य विषयक विचारक समीक्षा) (रत्नाकर : दिसम्बर 1926)

मणेरीकर, व. व.—कोल्हटकराँची वाङमय तपस्या (सुबोध : जून 1934)

माडखोलकर, गं. त्र्यं—कोल्हटराँच्या काही साहित्य विषयक कल्पना (तरुण भारत, नागपुर : दिवाली अंक 1969)

माडखोलकर, गं. त्र्यं.—युग प्रवर्त्तक कोल्हटकर (पारिजात : अगस्त 1934)

मांडे, ना. त्र्यं.—तत्यासाहेवांच्या वाङमय सृष्टीतीलकाही ठलक विषयक (सुबोध, गोवा जून 1934)

मजुमदार, शं. वा.—रंगभूमीचे युगान्तर (पारिजात : अगस्त 1934)

मोहरीर, लता—शेक्सपियर आणि मराठी नाट्य विचार : श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (प्रतिष्ठान : मई 1971)

रानडे, ज. के.—साहित्याचे पहिले वाजीराव (ज्योत्स्ना : मार्च 1940)

लेले, पु. रा.—तलवार एक तमुची (महाराष्ट्रोचे दूसरे बेड [1965] : पृष्ठ 64-78)

व-हाडपांडे, म. ल.—कै. तात्यासाहेब कोल्हटकर व मासिक मनोरंजनाचे लेखक यांचे छात्राचित्र (युगवाणी, जून, जुलाई 1968)

व-हाडपांडे, म. ल.—कोल्हटकर, त्यांचे शिष्य आणि मित्र (युगवाणी : जून 1970)

व-हाडपांडे, म. ल.—(संक.)—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर : काहीं संस्मरणें (निवेदक : पु. य. देश पांडे तथा विमलाबाई देशपांडे) (युगवाणी : अगस्त 1970)

क्षीर सागर, पां. ग.—श्रीपाद कृष्णांचे प्रथम दर्शन (जे गडकरीकेँ भेल) (सह्याद्रि : फरवरी 1940)

व्यक्ति

खानोलकर, गं. दे.—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर : चरित्र व वाङमय परिचय : पूना 1929)

माडखोलकर, गं. ब्यं—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर : व्यक्ति : दर्शन, वम्बई 1970

व-हाडपांडे, म. ल.—कोल्हटकर आणि हिरावाई : मुंबई 1969

आधुनिक नाटकलेचे भरत मुनि दिवंगत झाले (केसरी जून 1969)

कोल्हटकराँच्या चरित्राची साधने (युगवाणी : जून 1970)

घरचे तात्या (द. के. केळकरजीक तात्या साहेब केळकरक संस्मरण-गत केळकर—कोल्हटकरक मित्रता सम्वन्धी संस्मरण) (विचारतरंग [1952] पृष्ठ 50-51)

आप्टे, ना. ह.—तात्याँच्या काही आठवणी (पारिजात : अगस्त 1934)

'एकचहाता'—श्रीपाद कृष्णाँच्या साहवासांत (युगवाणी : जनवरी 1947)

कंटक, सा. घ.—पहिल्या भेटरीच्या वेळी तात्यासाहेव मला कसे दिसले ? (सुबोध, गोवा : जून 1934)

कस्तुरे, वि. अं.—कै. श्रीपाद कृष्णाँच्या आणखी आठवणी (युगवाणी : अक्तूवर 1970)

'काव्यविहारी'—कै. श्रीपाद कृष्णाँच्या आणखी आठवणी (युगवाणी : अक्तूवर 1970)

'किरात'—कोल्हटकर व मी [संस्मरण] (सुबोध, गोवा : जून 1934)

केतकर, श्री. व्यं.—श्रीपाद कृष्ण [संस्मरण] (प्रतिभा : जून 1934)

केळकर, म. म.—तात्यांच्या काही अठवणी (पारिजात : अगस्त 1934)

कोतले, वि. भि.—कै. तात्यासाहेव कोल्हटकरांच्या अठवाणी (युगवाणी : जुलाई 1970)

कोल्हटकर, श्री. कृ.—"पुढील जन्मी मला कोण व्हावेसे वाटते" (अरुण मासिक : वम्वई, वर्ष-5 अंक-2-1929)

कोल्हटकर, श्री. कृ.—हम तथा हमर लेखन (मी अणि माझे लेखन संपादक मो. ग. रांगठोकर (1943) : पृष्ठ 7-10)

खानोलकर, गं. दे.—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (अल्पचरित्र) (पारिजात : अगस्त 1934)

खानोलकर, गं. दे.—साहित्याचार्य श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (प्रतिभा : जून 1934)

गिजरे, वि. अं.—आजचे तात्यासाहेव (विहंगम : जुलाई 1933)

गिजरे, वि. अं.—तात्यांचा काही आठवणी (पारिजात : अगस्त 1934)

गिजरे, वि. अं.—श्रीपाद कृष्णांचे अखेरचे दिवस (विहंगम : जुलाई 1934)

गिजरे, वि. अं.—श्रीपाद कृष्णांना पुष्पाजलि (विश्ववाणी : जून 1934)

जोशी, केशव काशिनाथ—कोल्हटकरांचे जळगांव-जामोद येथील वास्तव्य [संस्मरण] (युगवाणी : मई-जून 1869)

जोशी दि. वि. (संक.)—जामोद येथील एक तप (युगवाणी : जून 1970)

जोशी, दि. वी.—कै. श्रीपाद कृष्णांच्या आणखी आठवणी (युगवाणी : अक्तूबर 1970)

जोशी, वासुदेव विनायक—तात्यासाहेबांचा मोठेपणा (संस्मरण) (पारिजात : अगस्त 1924)

जोशी, वि. वा.—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (मनोहर: जून 1958)

टिकेकर, श्री. रा.—स्वभावातील गमत्ती (पुरुषार्थ : कोल्हटकर स्मरणांक : 1954)

टेंबे गोविन्द राव—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (सह्याद्रि : जून 1953)

शेलके, सुरेश—श्रीपाद कृष्णांचे जन्म स्थल (युगवाणी : जून 1970)

ताटके, अरविन्द—हसणारा सिंह (महाराष्ट्र टाईम्स : 2 जुलाई 1967)

देव, वा. चि.—तात्यांच्या काही आठवणी (पारिजात : अगस्त 1934)

देशपांडे. वा. ना.—कै. तात्यासाहेब कोल्हटकर [संस्मरण] (पारिजात : अगस्त 1934)

देशपांडे, वा. ना.—दोन आख्यायिक (पुरुषार्थ, कोल्हटकर स्मणांक : जुलाई 1954)

नियोगी, भगानीशंकर—कोल्हटकरांच्या काही आठवणी (युगवाणी : जून 1970)

पंडित भ. श्री.—श्रीपाद, कृष्णांची पुण्य स्मृति (युगवाणी : जून 1967)

पराडकर, ना. वा.—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (सह्याद्रि : फरवरी 1951)

भालेराव, अ. ना.—तात्यांच्या काही आठवणी (पारिजात : अगस्त 1934)

महाजन, द. वा.—कोल्हटकरांचे जळगांव येथील जीवन (युगवाणी : जुलाई 1969)

माडखोलकर, गं. त्र्यं.—कोल्हटकर आणि केळकर (पत्र) (माझे लेखन गुरु [1965] पृष्ठ 113-124)

माडखोलकर, गं. त्र्यं.—कोल्हटकरांच्या काही किरकोळ आठवणी (युगबाणी : सितम्बर 1969)

माडखोलकर, गं. त्र्यं.—कोल्हटकरांच्या राजशिष्या (गुगवाणी : नवम्बर 1969)

माडखोलकर, गं. त्र्यं.—दोन तात्या—तात्यासाहेब कोल्हटकर, तात्यासाहेब केळकर (माझे लेखन गुरु [1965] पृष्ठ 1-12)

माडखोकर, गं. त्र्यं.—माझे गुरु (माझे लेखन गुरु [1965] पृष्ठ 13-23)

माडखोलकर, गं. त्र्यं.—लेले आणि कोल्हटकर यांच्चा पत्रांची पार्श्वभूमी (युगवाणी : जून 1970)

माडखोलकर, गं. त्र्यं—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (माझे आवडते लेखक [1965] पृष्ठ 1-13)

माडखोलकर, गं. त्र्यं.—साहित्यांतील उपेक्षिता (व्यक्तिरेखा [1966] पृष्ठ 313-342)

मोटे, ह. वि.—श्रीपाद कृष्णांची एक मुलाखत (सत्यकथा : जनवरी 1967)

मोहगांवकर, वि. प्र.—श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर : व्यक्ति व वाङ्मय (युगवाणी : नवंबर-दिसंबर 1969)

लेले, पु. रा.—गुरु-शिष्य [कोल्हटकर व गडकरी] (संजय : फरवरी 1958)

व-हाडपांडे, म. ल.—हिराबाई पेडणेकरांच्यां चरित्राचा मागोवा [नेने माडखोलकर पत्र-व्यवहार] (आलोचना : फरवरी 1968)

वररेकर, भा. वि.—श्रीपाद कृष्णांच्या पहिल्या शिष्या (व्यक्तिरेखा [1966] परिशिष्ट पृष्ठ 9-20)

शास्त्री, य. बा.—पहिल्या भेटीच्चा वेली तात्यासाहेब मला कसे दिसले? (सुबोध : गोवा : जून 1934)

शिर्के, आनन्दीबाई—तात्यांच्या काही आठवणी (पारिजात : अगस्त 1934)

शेजवलकर, त्र्यं. शं.—श्रीपाद कृष्ण [संस्मरण] (प्रतिभा : जून 1934)

सरदेसाई, जयवंतराव—पहिल्या भेटीच्या बली तात्यासाहेब मला कसे दिसले? (सुबोध, गोवा : जून 1934)

साठे, पु. बा. तथा तारावाई साठे—आम्हाला कललेले तात्यासाहेब कोल्हटकर (युगवाणी : सितम्बर 1970)

स्वामी, शि. अ.—कै. श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (मनोहर : जून 1970)

क्षीरसागर, पां. गं.—श्रीपाद कृष्णांच्या दोन आठवणी (वाङ्मय शोभा : दिसम्बर 1939)

117152
10.12.04

मराठी सहित्यमे श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकरक स्थान अन्यतम छनि। हुनक रचना सभक मराठी जनजीवन पर एतेक व्यापक प्रभाव पड़ल अछि जे हुनक रचना-कालकेँ 'कोल्हटकर युगे' कहल जाइत अछि। एहि पुस्तकमे मनोहर लक्ष्मण वराडपांडे हुनक जीवन आओर कृतित्व पर प्रकाश देनिहार एतेक प्रचुर सामग्री कयलनि अछि जे हुनकर बहुमुखी प्रतिभाक सम्यक् परिचय पाठक सभकेँ भेरि सकैत छनि 1972 मे हुनक जन्म-शताब्दी महाराष्ट्रमे मनोओल गेल अछि। एही उपलक्ष्यमे ई पुस्तक विशेष रूपसँ मूलतः मराठीमे प्रकाशित कयल गेल छल।

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00
Library IIAS, Shimla
MT 891.460 92 K 832 S
00117152